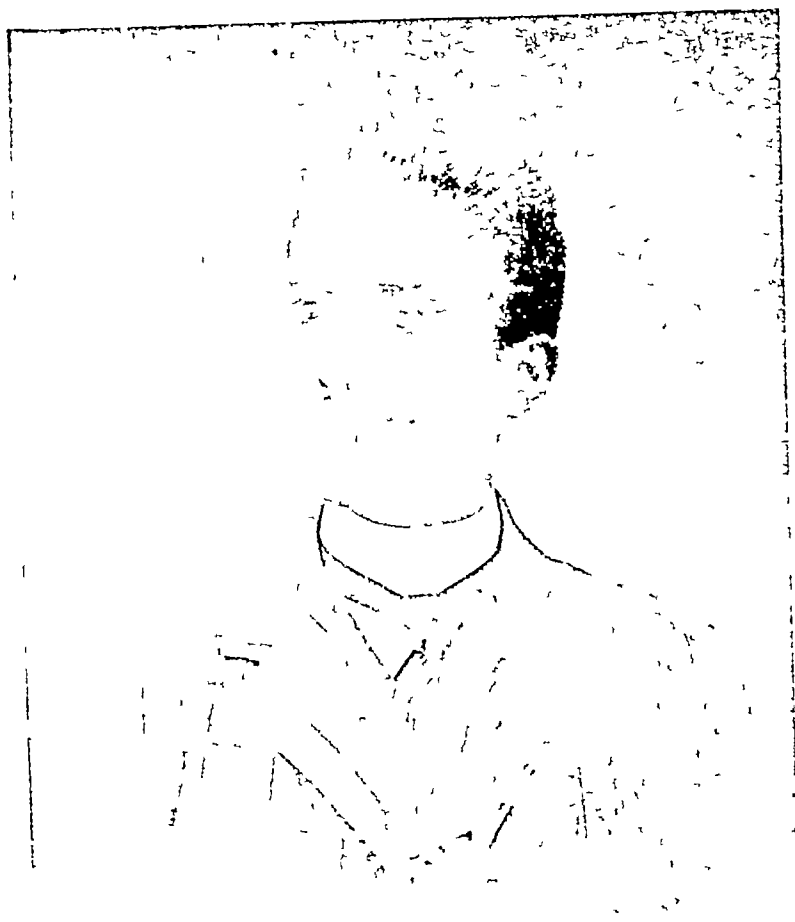
पैलो संस्करण
सन् १९६०

दाम ४)

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग प्रेस
जयपुर



डॉ. एल. पी. टैसीटोरी

समर्पण

राजस्थानी साहित्य अर भाषा

रा

प्रवीण पारखी

डॉ. एल. पी. टैसीटोरी

री

पावन यादगारी

ने

घणा मान सूं भेंट

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत

की ओजस्वी साहित्य साधना के लिये

महामान्य राष्ट्रपति

डा० राजेन्द्र प्रसाद

की

शुभ कामना



राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली,
३ मार्च, १९५८

मैंने रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत द्वारा रचित राजस्थानी साहित्य सम्बन्धी पुस्तकें देखीं और उनके अवलोकन से मुझे खुशी हुई। राजस्थान के वीरतापूर्ण इतिहास में किसी भी लेखक को अनुप्राणित करने की क्षमता है। रानी लक्ष्मी कुमारी वहीं के वातावरण में पली हैं और राजस्थान के आदर्शों तथा मर्यादा ने उनकी कल्पना और रचना शैली को प्रभावित किया है इसलिये उनकी गद्य तथा पद्य की रचनाओं में ओज है। मुझे आशा है कि ये पुस्तकें लोकप्रिय होंगी। लेखिका के प्रति मैं अपनी शुभ कामनायें प्रकट करता हूं।

भूमिका

हमारा प्राचीन साहित्य अपने पूर्वजो से प्राप्त परम्परागत महत्त्वपूर्ण सम्पदा है। इस सम्पत्ति का मालिक कोई-प्रान्त या राष्ट्र ही नही विश्व का प्रत्येक मानव इसका समान रूप से भागीदार है। विश्व भर में साहित्य दो प्रकार का मिलेगा। एक वह साहित्य जिसको विकसित मानव समाज ने जन्म दिया और दूसरा वह जिसकी सृष्टि लोक-जीवन से हुई।

वैदिक काल से लेकर आज तक मनुष्य ने विकसित साहित्य के सरक्षण और संवर्द्धन के लिए काफी प्रयत्न किये पर यह विकसित समाज लोक-जीवन के लोक साहित्य की क्षमता को सही रूप मे नही पहचान पाया। वास्तव में लोक-साहित्य ही सभी प्रकार के साहित्य और कला का आदि स्रोत है। जिस प्रकार हमारे हाव-भाव और सकेत मानव भाषाओं के आदि जनक हैं। आज का मानव तरह तरह के भौतिक पदार्थों का जिस प्रकार अनुसधान कर रहा है वैसे ही लोकगीत, गाथा, सगीत, कला, लोक जीवन के रीति-रिवाज तथा परम्पराओ के अन्वेषण और अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है। बहुत-से देशो ने इस क्षेत्र में प्रशसनीय प्रगति की है पर हमारे देश को इस दिशा में विशेषतया

प्रयत्नशील होना चाहिये। लोक साहित्य मानव जीवन का प्रतिबिम्ब है। इन गीतो, गाथाओ, लोकोक्तियों और मुहाविरो में सदियों पुरानी सस्कृति और इतिहास छिपा हुआ है।

महत्त्वपूर्ण खूबी लोक साहित्य में यह है कि मानव जीवन का वास्तविकतापूर्ण चित्र इसमे चित्रित मिलेगा। गुण, दुर्गुण, सद्भावनायें, असद्भावनायें, उत्थान एव पतन सभी कुछ नैसर्गिक रूप में मिलेगा। कही भी कृत्रिमता नही। लोकगीत और गाथायें उच्च से उच्च भाव की मिलेंगी और निम्न से निम्न भाव की। जिस प्रकार मानव ने पावूजी, सोरठ, ऊजली आदि गाथाओ को और कुरजा, मूमल और पणिहारी जैसे गीतो को जन्म दिया वैसे ही लाल केसिया जैसे गीतो और छिनाळ राड जैसी गाथाओ की भी सृष्टि की। इनमे से हमे ग्राह्य को ग्रहण करना है और अग्राह्य को छोडना है। जिस प्रकार प्रगतिशील मानव ने गाय, घोडा, हाथी, भैंस आदि जानवरो को अपनाकर अपने योग्य बनाया और मच्छर तथा खटमल को अग्राह्य समझ कर छोड ही नही दिया बल्कि नष्ट करने के लिये निरंतर प्रयत्नशील रहता है।

उच्चतम और निम्नतम लोक साहित्य की सृष्टि की आड में एक महान सत्य अन्तर्निहित है कि मानव ऊ चा उठना चाहे तो आकाश का कोई माप दण्ड नही और नीचे गिरना चाहे तो पाताल की कोई सीमा नहीं। आरम्भ काल से उच्च और निम्न सभी प्रकार के प्राणी इस ससार में उत्पन्न होते थे और होते हैं इसलिए उच्च और निम्न भावनाओ तथा साहित्य की सृष्टि स्वाभाविक है। मनुष्य ने आज तक श्रेष्ठ से श्रेष्ठ और भ्रष्ट से भ्रष्ट कार्य किये हैं। उन सभी क्रियाकलापो का हूबहू

चित्र लोक साहित्य में मिलेगा।

विश्व के प्रत्येक स्वर, व्यजन, ध्वनि और सकेत का अपना अपना इतिहास है। मत्स्यावतार युग का जलचर मानव, वृक्ष विहारी वानर से आज की मजिल तक पहुँचा है। युग युग से संघर्ष करते आये मानव ने आकाश, पाताल और धरातल, त्रिभुवन के स्थावर जगम सभी तत्त्वो को अपने कर्मठ प्रयत्नो से प्रभावित किया है। जहां तक इसकी कल्पना उडी वहां तक यह मानव पहुँचा है। पेड पौधे, पशु पक्षी, खेत खलिहान नदी निर्झर, सागर, मणि माणिक्य, वन उपवन, सूर्य चन्द्र और नक्षत्र सभी भौतिक और काल्पनिक तत्त्व मानव संस्कृति के अग और आधार हैं। मानव जीवन के विलुप्त रहस्यो को जानने के लिये प्रकृति के सभी चराचर पदार्थों से हमे निकट सम्पर्क स्थापित करने की आवश्यकता है। लोक जीवन के अर्थहीन कहे जाने वाले शब्दों और ध्वनियो के अर्थ समझने जरूरी हैं। इन अर्थहीन शब्द सकेतों के अर्थ हमारे शब्दकोपो में नही मिलेंगे। इन्हें समझने के लिये हमे लोकजीवन और लोक साहित्य को समझने की आवश्यकता है। तथाकथित अविकसित मानव ही युगो से आज तक इस ऐश्वर्य का शक्तिशाली संरक्षक बनकर खडा है। दादी नानी के गीत और गाथाओ के साथ हमारा बचपन पलने में झूलता है। इन्ही गीत और गाथाओ के साथ यौवन मे रंग आता है और इन्हीं को आधार बनाकर वृद्धावस्था के दिन बीत जाते हैं। शैशव, यौवन और बुढापे के परम्परागत साथी इन गीतो और गाथाओ की हम उपेक्षा कैसे कर सकते हैं। यदि हमारी दादिया एव नानिया ऐसे ही विकसित हो जातीं और शहरो मे रहने वाले मुट्ठी भर मनुष्यो

की तरह सारे मानव सुसस्कृत हो जाते तो मानव जाति की यह परम्परागत सम्पदा ही लुट जाती। लेकिन यह असम्भव है, सस्कृति और साहित्य को नष्ट करने वाली शक्ति न तो आज तक ससार में पैदा हुई है और न होगी ही। आर्यों और अनार्यों के सघर्ष से लेकर ग्रीक, शक, हूण, मुसलमान और फिरगियो तक कितने ही आक्रमण भारत पर हुये पर सदा सघर्ष ही नही किया जाता एक न एक दिन निर्णय का आता है। न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य के विग्रह में अन्तिम विजय सदा न्याय और सत्य की ही होती है। इस विजय की अन्तिम मजिल तक पहुँचने में देर भले हो हो पर अन्धेर नही। सभी आक्रामक जातिया हमें कुछ देकर गई और कुछ लेकर। इनमें से बहुत से लोग यहा बस गये। इनसे हमारे रक्त का आदान-प्रदान हुआ और सस्कृति, साहित्य, भाषा एव कला का भी। बहुत सी जातिया तो ऐसी मिल गई कि उनका अलग अस्तित्व ही नही रहा। मुसलमानों से सम्बन्धित सघर्ष और प्रेम का ओजस्वी स्वरूप हमारे साहित्य में मिलेगा। लोक जीवन और लोक साहित्य जितना भावनापूर्ण है उतना ही तथ्यपूर्ण है इसलिये हमारे सघर्ष और सम्पर्क का सही सही रूप इनमें मिलेगा।

हमारे लोकगीत और गाथायें दो प्रकार की मिलेंगी। एक तो वे गाथायें और गीत जो घर घर प्रचलित हैं और दूसरे प्रकार के वे जिन्हें पेशेवर लोग चारण, भाट, कवि, ढोली, ढाढी, बडवे और कलाकार आदि सुनाते हैं। युग युग से चले आये इन गीत और गाथाओं में युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन भी होता रहता है। इनका स्रष्टा कोई एक मानव नहीं

बल्कि लोक जीवन ही इनका स्रष्टा है। इन्हीं के सहारे युग युग से मानव चला आ रहा है। इन्ही से हमारी मान्यताओ का जन्म होता है। जिन्हें हम उत्कृष्ट काव्य, साहित्य, कला और सस्कृति कहते हैं वे सब इनके ही अंग प्रत्यग हैं। लोक जीवन और लोक साहित्य जैसी नैसर्गिकता मानव जीवन में कही नहीं मिलेगी। यहा मानव केवल मानव है। वर्ण व्यवस्था ने भिन्न भिन्न जातियो को हमारे देश में जन्म दिया और विभिन्न मान्यताओ ने भिन्न भिन्न धर्मों को जन्म दिया इसलिये हमारे गीत और गाथायें विभिन्न जातियो और धर्मों से सम्बन्धित मिलेंगी। स्वभाव, मान्यता और कर्तव्य के पीछे मानव के गुण दुर्गुण उत्पन्न होते हैं।

राजा, पडित, पुरोहित, साधु, बाबा, जोगी, जती, नवाब, बादशाह, मौलवी, जाट, कुम्हार, तेली और चमार आदि के साथ साथ पशु, पक्षी, दैत्य, राक्षस, भूत प्रेत, पूर्व जन्म, यह जन्म और भावी जन्म इस प्रकार लौकिक और काल्पनिक जो भी कुछ है वह गीत और गाथाओ का विषय है पर इनकी गति और निष्कर्ष को हम मानवता से ही ओतप्रोत पायेंगे। सुसस्कृत मानव ने जो कृत्रिम सीमायें बनाई वे लोक साहित्य मे टूटी हुई मिलेंगी। लोक साहित्य बधनमुक्त हैं। इस साहित्य के चराचर सभी मे मानवता प्रतिष्ठित मिलेगी। तोता मैना, शेर बघेरे, पर्वत, नदी निर्झर सब मानव की ही तरह बोलते हैं एव अनुभूति रखते हैं। सस्कृत साहित्य में भी इसी प्रकार चराचर के साथ मानव की आत्मीयता मिलेगी। क्रौंच पक्षी के कारूणिक विरह ने आदि काव्य और आदि कवि को जन्म दिया। वही क्रौंच पक्षी राजस्थानी गीतो और

गाथाओ का जीवन है। कालीदास के प्रसिद्ध नाटक अभिज्ञान शाकुन्तल के पात्र वन उपवन, वन ज्योत्सना, माधवी लता, भ्रमर, कोयल, चकवा, चकवी और आम्रमजरी नायक और नायिका, दुष्यन्त और शकुन्तला से कम महत्त्वपूर्ण नही है। दुष्यन्त की दुर्बलता को छिपाने के लिये विस्मृति की कल्पना कर उसे आदर्श चरित्र बना दिया गया है। उच्च सस्कृत साहित्य मे जीवन, लोक साहित्य की ही तरह श्री सम्पन्न मिलेगा इसी लिये वह युग युग से अजर अमर है। अनादिकाल से चला आया यह विश्व ब्रह्माण्ड, यह मानव अत्यन्त रहस्यपूर्ण है। लोक जीवन और लोक साहित्य मे इन सभी उलझे हुए रहस्यो का मनोरजक रहस्योद्घाटन दिखलाई देगा। पूर्व जन्म का सम्बन्ध आज के जीवन से और आज के जीवन का सम्बन्ध भावी जन्म से बडे चमत्कारपूर्ण ढग से जुडा हुआ मिलेगा। सुकृत्यो की प्रशस्ति के साथ कुकृत्यो के लिए गम्भीर रोष मिलेगा पर साथ ही पूर्व जन्मो के लेखे जोखे चुकाने को एक को सुकृत्य और एक को कुकृत्य करने पडते हैं। इस प्रकार की अनिवार्यता के कारण कुकर्मों के लिये मानव के हृदय मे क्षमा की भावना जागृत हो उठती है। अज्ञात काल से आज के युग तक और आज के मानव तक एक शृखला जुडी हुई मिलेगी। इस साहित्य में चराचर और मानव मे कोई भेदभाव नही। यहा ज्ञात एव अज्ञात पदार्थ और भाव सभी एक दूसरे के अ ग प्रत्यग हैं।

लोक साहित्य के पात्र लौकिक और अलौकिक सभी प्रकार के होते हैं। शिवजी ने पार्वती की अनुनय विनय पर अपने कमडलु से पानी छिडक कर मृत मानव को जीवित कर दिया, एक जादूगरनी ने अपने प्रेमी को

सदा अपने पास रखने के लिये मनुष्य से तोता बना लिया, एक भूत गगनचुम्बी महल उठा लाया और एक राजकुमार समुद्रो पार उडकर चला गया और वहां से धन वैभव के साथ साथ सुन्दरी राजकुमारी को ब्याह लाया आदि सभी अलौकिक और असाधारण घटनायें साहित्य मे सूर्योदय की तरह सत्य हैं। जिनको हम गप्प कहते हैं वे भी पूर्णतया सत्य हैं। इनके सत्य की कसौटी ही अलग है। इनके सत्य का ससार भिन्न है और मूल्याकन की विधि एव प्रणाली भी भिन्न है। मानव के भावना और कल्पना ससार मे इस प्रकार की सभी बातें शत-प्रतिशत सत्य हैं। ये अलौकिक और असम्भव तथ्य ही मानव जाति को असीम महत्वाकांक्षा की तरफ अग्रसर करते हैं। आज मानव चन्द्रमा आदि कुछ ग्रहो के रहस्य जानकर वहा आबाद होने की कल्पना कर रहा है, कल नियति के और नये नये रहस्यो को जानेगा। अपने शक्तिशाली पखो से उड कर आज का मानव आकाश के सभी रहस्यो का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है और पाताल मे धस कर सारे तत्त्व और तथ्य जानने को व्यग्र है। पीढ़ियो से अपने आपको और विश्व को जानने के लिये मानव निष्ठावान है। इन निष्ठाओ की जननी लौकिक और अलौकिक भावनायें और कल्पनायें ही हैं। इनकी प्रेरणायें ही मानव ससार की प्राणप्रद शक्ति है। कल तक जो बातें दादी नानी की कहानियो की कल्पना मात्र थी वे आज परम सत्य बन गई हैं। आज की कल्पनायें कल तक महान सत्य का रूप धारण करलें इसमें कोई विस्मय की बात नहीं। नियति की महत्ता और मानव की क्षमता की कोई कल्पना नही की जा सकती। जिस प्रकार सभी दिशाओ में मानव

आगे वढ़ रहा है उसी प्रकार कल्पना जगत में भी आगे वढ़ेगा। अलौकिक को मानव लौकिक वनाता जा रहा है वैसे ही अलौकिक कल्पनाओ को भी आगे वढना होगा। अजर और अमर वने रहने की कल्पना को मानव लौकिक सत्य प्रमाणित करने जा रहा है पर अजर अमर हो जाने पर और भी कल्पनायें करनी पडेंगी। विना कल्पना और भावना के मानव जाति जीवित नही रह सकती। सभी भावनायें और कल्पनायें सत्य ही नही है वल्कि मानव को और ससार को गतिशील रखती है। यह गति ही जीवन है।

राजस्थानी लोक गीतो की तरह लोक गाथा साहित्य भी अत्यन्त विशाल और समृद्ध है। राजस्थानी गाथायें दो प्रकार की हैं। एक प्राचीन साहित्यिक लिपिवद्ध कहानिया और दूसरी घर घर प्रचलित लोक गाथायें। दोनो ही प्रकार की कहानियाँ वोलकर सुनाई जाती हैं। लिखी हुई कहानियो को भी पढने मे वह आनन्द नही आता। लिपिवद्ध तो केवल इसलिए की जाती थी कि आवश्यकता पडने पर याद करली जायें। दोहे आदि भूलने पर इनसे मदद मिल जाती है। कहानिया सुनने के शौकीन लोग भी इन्हें लिखवा लेते थे। दोनो ही प्रकार की कहानियो में रस का परिपाक तभी होता है जव कह कर सुनाई जायें। लिपि वद्ध गाधायें भी हूवहू वैसी की वैसी नही सुनाई जाती उनमें भी काफी परिवर्तन, परिवर्द्धन कहने वाला करता रहता है। कहने वाला सभी पात्रो का एक प्रकार से अत्यन्त सफल अभिनय करता जाता है। एक ही आदमी वहादुर, कायर, प्रेमी, प्रेमिका तथा पशु पक्षी आदि सभी

का पार्ट इस खूबी से अदा करता है कि सारा वातावरण प्रभावित हो उठता है। ऐसा महसूस होता है कि जैसे सब घटनायें आखो के सामने से ही गुजर रही हैं। इस प्रकार इन कहानियो को गायन और नाटक का सम्मिश्रण समझना चाहिए। इनमे पात्र केवल दो ही होते हैं। एक कहानी कहने वाला और दूसरा हूकारा देने वाला। कहने वाला कहानी कहता रहता है और साथ साथ सभी पात्रो का अभिनय करता रहता है। हूंकारा देने वाला अपने प्रोत्साहन पूर्ण हूंकारों से कहानी को गति और उत्साह प्रदान करता है। तभी तो कहा गया है, "बात में हूंकारो फौज में नगारो।" बात कहने वाले का अपना व्यक्तित्व होता है, अपनी शैली होती है। बात कहते कहते बात ही बात में वह अपने अनुभव का पुट भी लगाता रहता है। सुनने वालो का व्यक्तित्व भी बात मे रस भरता है। हूकारा देने वाला भी बात में प्राण डालता है। बात के बीच बीच में बात कहने वाला और हूंकारा देने वाला, सुनने वालो का नाम लेकर उनके जीवन से सम्बन्धित खास घटनाओ की तरफ सकेत करते जाते है। इससे सुनने वालो को आप बीती घटनायें याद आने लगती हैं। मन में गुदगुदी पैदा हो जाती है। कभी मीठे व्यग की चुटकिया कहानी को सलोना बना देती है। इस तरह से बात कहने और सुनने मे कई व्यक्तियो का व्यक्तित्व सम्मिलित होकर बात को सजीव और सरस बना देता है। बात कहना एक कला है तो हूकारो देना भी एक कला है।

कहने वाला "वडदाव" देना प्रारम्भ करता है तो चारो ओर सन्नाटा छा जाता है।

वात भली दिन पाधरा, पिंडज पाका घोर
घर भीडल घोडा जणें, लाहू मारे चोर
वात कैता वार लागे, हूकारे वात मीठी लागे
वात में हुंकारो, फोज में नगारो
सार वाह, सार, पलमा नहीं लगाव
माता सा घोडा, पातळिया असवार
वातां हदा मामला, नदिया हदा फेर
वहता ज वहे उतावळा, घरमर घाले घेर
आधाक नर सोवे, आधाक नर जागे
जागता री पागडी, ढोल्या रे पागे
सूता री पागडी, उचक्का ले ले भागे
वात रा चालणा, सजोग रा पीवणा
जीवो वात रा केवणिया, जीवो हूंकारा रा देवणिया

कहानी कहने के इस आकर्षक नाटकीय प्रारम्भ से सभी श्रोता उसकी तरफ आकृष्ट हो जाते हैं और कहानी सुनने के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगते हैं। ऐसे ऐसे वडदाव सभी कहानियो से पहिले दिये जाते है। प्राचीन साहित्यिक कहानियो के कहने वाले कुछ कोटि के कलाकार नायिका की प्रशसा में प्रारभ में और समय समय पर वीच में उसकी गुण गरिमा की प्रशस्तियां कहते जाते हैं। जिससे नायिका का व्यक्तित्व आखो के सामने प्रत्यक्ष खडा हो जाता है।

हाम काम लोचनी
विखायत री भालो

सती रो नाळेर
कुळ गांव री होळी
जैपुर री दीवाळी
बूबना री वैन
जले री साळी
पटक्योडी नागण
उळझियोडो रेसम
थाको विलखो हस
गडां रो कुटियोडो काग
ठरड़े री मोडियाण
आकास रो परेवो
भाटियां रो जाखोडो
गुजराती आवे री लूम
उत्तर रो वायरो वाजे तो दिखण ने लुळ जावे
दिखण रो वायरो वाजे तो उत्तर ने लुळ जावे
चारू कूट रो वायरो वाजे तो टूक टूक व्हे जावे
चावळ रो चौथो हिस्सो खावे तो पेट दूख ने मर जावे
पाळा रा परतला में कोस पचास जावे
अमलदार रे धक्के पड़े तो मावा में ही गिट जावे

प्रेमी प्रेमिका को छोड़कर अपने काम पर जाता है तो प्रेमिका उसके विरह को सहन नही कर सकती, उसके बिना रह नहीं सकती। इस बात को कलाकारो ने बडा विनोदपूर्ण रूप दिया है। जाते हुए प्रियतम

से प्रेमिका कहती है

था ने घडी एक नी देखूं तो दूध में डूब ने मर जावू
लाडू पतासा खाय मर जावू के जाजम में गिडक ने मर जावू
पूणी की फासी खाय न मर जावू
था बिना घडी एक नीं आवड

कहानियो की तरह गप्पें भी सुनाई जाती है इन गप्पो में हास्य रस का पूर्ण परिपाक होता है। सुनने वाले हसते-हसते लोटपोट हो जाते हैं। गप्पें सुनाना प्रारभ करने से पहिले बडदाव भी इसी प्रकार गप्पपूर्ण दिया जाता है।

सार रा चणां मसरके फूटे
भैंसा री कमर मुक्की सू टूटे
भाखडी रा काटा ने साडी सोळा हाथ
कीडी रो धक्को ने माछर री लात
राम बचावे तो बचे नी बचे परभात

पुराने जमाने मे राजस्थान मे अफीम खाने का बहुत प्रचार था। यह परिपाटी सैकडो वर्षो से चली आ रही थी। राजा महाराजा अमीर उमरावो से लेकर साधारण जन ही क्या साधु फकीर भी अफीम खाते थे। शराब से ज्यादा प्रचलन अफीम का था। मेवाड में और हाडौती में बहुत अफीम पैदा होती थी। आज भी अफीम की उपज के लिए हाडौती बडा केन्द्र है। अफीम खाने का रिवाज इतना ज्यादा था कि आज के सौ डेढ़ सौ वर्ष पहिले मेवाड के शीशोदिया राजपूत शराब नही

पीते थे और अफीम ही खाते थे। कर्नल टॉड ने अमल में मस्त सरदारों की चर्चा की है। राजस्थानी पुरातन साहित्य अमल के रग-विरगो से परिपूर्ण है। सभी जातियो के लोग अफीम खाते थे। आज भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, जाट, गूजर, माली, चमार सभी मे विवाह, मृत्यु, वार त्यौहारो पर अफीम खाने की रस्म अदा की जाती है। जालोर, सिरोही, जैसलमेर, बाडमेर, बोराट आदि जगह विशेष अवसरो पर अफीम ज्यादा खाई जाती है। सौराष्ट्र में विशेष अवसरो के अलावा माननीय प्रिय मेहमान के आने पर कसू वा गलाया जाता है। अफीम खाना मागलिक समझा जाता था। शुभ अवसरो पर, युद्ध क्षेत्र में जाते समय इसका खूब प्रयोग होता था।

आफू वाटण जोग पथ, सूग हदा काम।
कायर खडग न वावसी, रक न देवे दान॥

अफीम खाने वालो की कहानी आरम्भ करने के पहिले वडदाव उसी ढग के दिये जाते हैं। कहानी के बीच-बीच मे भी अफीम खाने का जिक्र आने पर अफीम का रग दिया जाता है। 'वडदाव' देना और 'रग' देना दोनो को ही प्रशस्ति पाठ कहना चाहिए पर कहानी मे वडदाव प्रारम्भ मे दिया जाता है और रग बीच-बीच में अफीम खाने का जिक्र आने पर। अफीम खाते वक्त पूरे समय तरह-तरह से रग दिया जाता है। अफीम के राजस्थानी में कई नाम हैं, अफीम, अमल, आफू, कसू वो, तिजारो और गाळवा आदि। अमल को रग देने की प्रणाली बडी दिलचस्प है।

रग उदैपुर रा राणा ने
रग रूपनगर रा ढाणा ने
रग मडोवर री वाडी ने
रग कोटटा रा घोडा ने
रग नीमाज रा किवाडा ने
रग मेडता रा अमरावा ने
रग जसवत री राणी हाडी ने
रग रूपादे मल्लिनाथ री राणी ने
रग सीता रा सत ने
रग लछमण जती ने
रग सोनगरा री आन ने
रग सायजादी री जवान ने
रग कुमळसीग रा दुपट्टा ने
रग सेरसीग रा लपेटा ने
रग हमीर रा हठ ने
रग महाराजा रा इस्ट ने

शूरा और प्रमियो को याद करके रग दिया जाता है ।

रग मधुमालती नेह जिकण निभाया
रग वीरमदे रजपूत जिके विणियासी मन भाया
रग खीवा वाळा राव आभल घर वैठा आई
रग ढोला रजपूत पदमण सारू पाई
पदम पुत्री रग छे पन्ना लोचन वीरम मो भाविया

लाखां फोजा मोड ने आप घरा ले आविया

जै कोई दातारी करो तो, जगदेव कीधी ज्यू करजो
जै कोई घोडा दौडावो तो, वगडावत दौडाया ज्यू दौडाजो
जै कोई दारू पीवो तो, वाघे कोटडियो पीधो ज्यूं पीवजो
जै कोई लुगाई घर धणी सू रूसणो करै तो
ऊमादे भटियाणी कीधो ज्यूं करजो
जै कोई लुगाई आप परख वीद परणो तो,
पातसा री सायजादी परणी ज्यूं परणजो
जै कोई लुगाई परणिया सू मन फाडो तो
पद्मा वीरमदे ने कहियो ज्यूं कै दीजो

वीच-वीच में दोहे वोल-वोल कर रंग को और रगीन वना दिया जाता है

रग रामा रग लछमणा, रग दसरथ रा कवराह ।
लंका लूटी सोवनी, आलीजा भवराह ॥
गढ ढाहण गोळा गळण, हाथिया दैण हमल्ल
मतवाळी घण माणता, आजो सैण अमल्ल ॥
परभाते पोता फिरे, भूरा डळा अमल्ल ।
भड दोनू भेळा हुआ, आसो ने रिडमल्ल ॥
अमल थू उणमादियो, सैणा हूदो मैण ।
तो विन घडियन आवडै, फीका लागै नैण ॥

आखिर अफीम कोई अच्छी चीज तो है नहीं । नशीले सभी पदार्थ शारीरिक और मानसिक शक्तियो का ह्रास करते हैं । इसलिए इसके

विपक्ष की दलीलें भी दी जाती हैं।

तीस बरस कुस्ती करी, पड गुड उथल्ल पुथल्ल।
थे दीधो गोडा तळे, अई हो मीत अमल्ल॥
गैले बहता गुड पडिया, अेलो अमली आप
ले ले करता लागियो, पैले भव रो पाप

सिरोही के किसी राजा ने अपनी रानी से अपने पार्वतीय प्रदेश आबू की प्रशंसा मे कहा

टूके टूके केतकी, झरणे झरणे जाय
आवू री छव देखता, अवर न आवे दाय।

उसकी रानी ने प्रत्युत्तर दिया कि जिस प्रदेश मे जौ जैसा अन्न और अफीम जैसा जहर खाने को मिलता है, जहा के दुर्गम पहाडो में पैदल चलना पडता है, ऐसे आबू पर्वत की हे प्रियतम, आपने अच्छी प्रशसा की,

जौ खाणा भखणो जहर, पाळो ज चलणो पथ
आवू ऊपर वैसणो, भलो सरायो कथ

अफीमचियो की दुर्दशा की कहानिया कहते समय कलाकार 'बडदाव' भी बडा व्यगपूर्ण देते हैं।

हाळ पुराणी हळ नवा, वैल ज माता मट्ट
कर रे पाडया चूरमो, जद माचे गहगट्ट

अफीमची मुर्दे की सी आवाज मे बोलता है,

ना राज ना राज
भैंसडलियां भवराळिया। सीगज अ वळा वट्ट
सावण आवे रिडकंती, जद माचै गहगट्ट
ना राज ना राज
घी गावो गुळ माळवी, गेंहू ज राता चट्ट
मसळ ने मैंदो करां, जद माचै गहगट्ट
ना राज ना राज
ऊंची मेडी सज रही, दिवलो घणो सुघट्ट
ढोला मारूणी पौढिया, जद माचै गहगट्ट
ना राज ना राज
तीखो पान तिजारियो, डोडी घणी सुघट्ट
घाल कटोरे दरमळा, जद माचे गहगट्ट

तिजारे का नाम सुनते ही आंख और नाक से पानी झरता अफीमची खुशी से चिल्ला उठता है

हवें राज हवें राज

लोक साहित्य में मानव जीवन के उच्च गुण और दुर्गुण सभी से सबधित कहानिया मिलेंगी। सभी प्रकार के मनुष्यो का चरित्र भी सुस्पष्ट मिलेगा। इन गीतो और गाथाओ मे जहा अफीम और शराव की प्रशस्तियां मिलेंगी वहा इनको सेवन करने वालो पर कटाक्ष और फब्तियां भी मिलेंगी और इनका जोरदार विरोध होगा। लोक गीतो और गाथाओ का मानव वडा खरा और साफ है। आदर्शवाद का

आडम्बर इस विशुद्ध मानव के पास टिक नहीं पाता। यह तो केवल मात्र मानव है। यहा जीवन का आधार मानवता है, अपने सु और कु को साथ लिये हुए। निर्णय इस मानव ने समाज पर और आने वाली पीढी पर छोड दिया है। इन गीतो और गाथाओ में मानव का यही उद्घोष मिलेगा कि मेरा स्वरूप यह है, इसमे से ग्राह्य को ग्रहण करो और अग्राह्य का त्याग करो। उस मानव का सारा सचित ज्ञान कोष इस साहित्य के रूप में हमारे सामने जागृत और जीवित है उस पुरातन मानव का लोक साहित्य धरा से अम्बर तक गूंजता रहा है और नैसर्गिक जीवन बिताने वाले निसर्ग के अङ्क तथाकथित अविकसित मानव के हृदय पटल पर पीढियों से लिखा चला आ रहा है। उस अविकसित मानव को विकास युग मे लाते समय हमें चाहिए कि नव सस्कृति में उसे रगते समय उस पुरातन मानव की पुरातन सस्कृति की धरोहर उससे छीन न लें। जिसे हम आदि मानव कहते है वह मानव आज की सस्कृति से दूर वनो में वन्य चराचरो और जड जीवो के साथ आत्मीयता की अनुभूति लिए रहता है। आज का नागरिक शेर की दहाड सुनकर अपने हथियार सम्भालता है या जान बचाकर भाग छूटता है। वहा इन वनवासी मानवो के बच्चे निर्भय हो विचरते हैं। हिंसक जानवरों को भी जो पारिवारिक जन बनाकर रहते है, वृक्षो और लताओ की गोदी मे जो पर्णकुटी बनाकर रहते है, जिनके अपने नाच रग हैं, अपने ही गीत एवं गाथायें हैं और अपनी ही नैसर्गिक परम्परायें हैं। उस बहादुर और अबोध मानव को अपने राग रग में रगते समय हमे ध्यान देना चाहिए कि हम उसकी सनातन निधि को उससे लूट कर न लें, नष्ट न कर दें।

अपने राजस्थान में ही लो, गाव के किसान का पाच छ वर्ष का बच्चा ऊट की नगी पीठ पर सवार हो, कोसो सरपट दौडाता चला जायेगा। उसको साइकिल पकडाते समय उसका ऊट हमे उससे छीन नही लेना चाहिए। उसको रामायण की कथा सुनाते समय उसके आदर्श रगीले वीर पाबूजी के आख्यान के ज्वलन्त चित्र उसके हृदय मे धो नहीं डालने हैं। इनकी अपनी मान्यतायें, परम्परायें और आदर्श को जीवित रख कर हमे इनको आधुनिक युग का बोध कराना चाहिए। इनकी अपनी एक सस्कृति है जो मानवता के ज्यादा नजदीक है। इनकी अकृत्रिमता हमें छोडनी नही चाहिए। इनकी स्वाभाविकता और सादगी कितनी क्षमताशील है। आज भी उच्चकोटि के कलाकार इस नगे मानव को ही अपनी तूलिका का साधन बनाकर चित्रो द्वारा सच्चे मानव की और मानता की अभिव्यक्ति करते हैं। इन वनवासियो को और ग्रामवासियो को हमने फ्रॉक और पेन्ट पहिना दिए तो कलाकारो के तो मॉडल ही नष्ट हो जायेंगे।

लोक गाथायें, विभिन्न युगो की समाज व्यवस्था पर बडा अच्छा प्रकाश डालती है। समाज मे जो कुछ भी बुरी भली मान्यतायें और परम्परायें रही उनको ज्यो का त्यो लोक गाथाएं बताती रहती हैं। न वे उन पर आदर्शों का मुलम्मा चढाती है और न सिद्धान्तो का आवरण ही डालती है। लोक गाथायें तो स्वच्छ दर्पण है जिसमे समाज का प्रतिबिंब जैसा भी है साफ स्पष्ट दिखाई देता है।

इस पुस्तक की पहिली कहानी है, लाखो पूलाणी। यह कहानी मध्य युग के राजपूत काल की एक सच्ची तस्वीर है। उस युग में बाप को

मारने वाले से प्रतिशोध लेना बेटे का परम पुनीत कर्तव्य था। यह प्रतिशोध लिए बिना उसे न इस लोक मे स्थान था और न उस लोक मे। लाखा, अपने बहनोई को मारकर उसका पाणीपन्था तेज चलने वाला घोडा हथिया लेता है। उसी बहनोई के पुत्र और अपने भानजे राखायच को लाखा अपने पास रखता है। पुत्र से भी बढकर वह राखायच को प्यार करता है। बडा होने पर राखायच, लाखा से अपने बाप का प्रतिशोध लेने को उद्यत हो जाता है। लाखा स्वय भानजे के इस उत्साह की प्रशसा करता है। लाखा कहता है "भानजे,तुम सपूत हो जो मुझे मार कर बाप का प्रतिशोध लेने को कटिबद्ध हो गए हो। आओ, मैदाने जग मे हमारी तलवारो को अपना जौहर दिखलाने दो।"

इस झगडे का कारण होता है, एक घोडा। घोडे को लेकर राजस्थान में बडे बडे काड होते रहे हैं। उस काल में राजस्थानी वीर की प्रिय-तम वस्तु और सम्पदा होती थी उसका घोडा। परिजनो से भी ज्यादा प्यार वे अपने घोडे को करते थे। अच्छे घोडे को पाने के लिए अपने सिर की बाजी लगा देना उस समय साधारण सी बात थी। विवाह मडप में पावूजी ने तीन ही भावरें ली थीं कि केसर घोडी के लिए गठजोडे का बन्धन खोल, रणक्षेत्र में जूझ मरे।

"दरियाई घोडा सू उपनियो नौलखा या पाणी पन्था" घोडो की चर्चा प्राय राजस्थानी लोक गाथाओ मे मिलती है। अच्छे, मजबूत घोडे की पैदाइश के बारे मे लोक वार्ताओ मे इस प्रकार का जिक्र आता है। किसी सरदार की घोडी समुद्र या सिंघ समुद्र की तरफ गई, रात को समुद्र से दरियाई घोडा निकला और उसके सयोग से घोडी

के नौलखा बछेरा पैदा हुआ जो पाणी पन्था था। पृथ्वी पर तेज चलने वाला यह घोडा पानी में भी उतनी ही तेजी से तैर कर मार्ग तय कर लेता था। ऐसा घोडा मिलना दुर्लभ होता था। उसे प्राप्त करने के लिए लोग कट मरते थे। एक ऐसे ही घोडे को लेने के लिए लाखा ने अपने बहनोई को धोखे से मार डाला था।

"चातर नार" मे ठगो का जिक्र आता है। गाव ही पूरा ठगो का है। आने जाने वाले सम्पन्न यात्रियो को ठगना ही जिनका पेशा है। लोक साहित्य समाज का दर्पण होता है। इसके अनुसार यह कहानी भी किसी समय देश में फैली हुई और बढी हुई ठगी की ओर सकेत करती है। एक समय था जब देश में ठगी पूरे जोरो पर थी। गाव के गाव ठगों के थे। उनका पेशा ही ठगी करना था। यात्रियो के सामने ठगो से अपनी और अपनी सम्पत्ति की रक्षा करना एक बडी समस्या थी। ये ठग यात्रियों को अपने घरो मे ठहरा कर माल लेकर निकाल देते थे, खून कर देते थे। विभिन्न प्रकार के इल्जाम लगाकर उनको दोषी प्रमाणित कर देते थे। ठगो के कारण यात्रा आपदाओ से भरी हुई होती थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में तो ठगी बहुत ज्यादा बढ़ गई थी। यहा तक कि ठगो की सेना तक बन गई थी। गवर्नर जनरल विलियम बैन्टिक ने ठगी समाप्त करने के लिए बडा परिश्रम किया। राजस्थान मे भी ठगी और ठगो का कुछ समय जोर रहा। यहा तक कि शादी ब्याह मे ठग ठेका लेने लग गये कि इतनी रकम हमें देने पर कोई नुकसान नही होगा। फिर नुकसान के जिम्मेदार वे होते।

एक ऐसी ही ठगी का किस्सा मैंने अपने एक बूढे सरदार के मुह से

सुना। उनके पिता, मेरे दादा रावत किशनसिंहजी देवगढ के साथ झालावाड की शादी मे सम्मिलित थे। वारात अलवर महाराजा साहिब की आई थी। रास्ते में दो सफेदपोश आदमी, वारात के मुन्तजिम से मिलने आये और वारात की कीमती चीजो की खैरियत के लिए दस हजार रुपए मागे। वारात के मुन्तजिम ने रुपए देने से इन्कार कर दिया तो जाते वक्त वे सफेदपोश चेतावनी देते गए कि अब आपकी आप जानें। अपना माल सम्भाल कर रखें।

झालावाड शहर के बीच में जिस समय हाथी पर चढकर अलवर दरवार दूल्हा वन, ब्याह के लिए जा रहे थे उस समय हाथी के पेट के नीचे घुसकर, हाथी को पहिनाये हुए मोतियो के जेवर की डोरिया काट कर सफाई के साथ लेकर वे चलते वने। दूसरे दिन मुन्तजिम को कागज मिला, "हमारा मुजरा अर्ज हो।"

राजस्थान मे भी कई गाव हैं जिनमे ठग वसते हैं। ठगो की एक जाति है जिसे 'वेद' कहते हैं। इनका पैतृक पेशा ही ठगी करना है। पीढ़ियो से ये ठगी करते आये हैं। अपने वाप दादो की ठगी के चमत्कारो का गौरव से वर्णन करते है। दूर दूर ये ठगी के लिए जाते हैं। देवी के वडे भक्त होते हैं। शकुनो मे इनका अटूट विश्वास है। शकुन शास्त्र के अलावा इनके अपने खास शकुन होते है। इनकी अपनी सांकेतिक भाषा है। जिन गावो मे ये रहते थे, उन गाव के स्वामियो का इन्हे सरक्षण प्राप्त था। ठगी मे लाये हुए सोने आदि पर ये ठिकाने कर वसूल करते थे। मेवाड मे देवगट के और मारवाड मे सिरियारी और गुढा के ठग मशहूर थे। हमारे अपने गाव मे ठगो के चालीस घर हैं। जिनका पैतृक

पेशा ही ठगी करना था। इन ठगो की और इनकी ठगी की कहानिया कही जाती हैं। मेरे बचपन तक इनसे लाए हुए सोने पर हम कर लेते थे। तोले के साथ एक या आधी रत्ती कोतवाल और प्रधान का कर वसूल किया जाता था। पहिले ये मेहनत करके कमा कर खाना अपने सम्मान के खिलाफ समझते थे। ये ठग चोरी करना भयकर पाप समझते थे और ठगी करना परम पुनीत पैतृक कर्त्तव्य। अब इन्होने अपने खेत आदि खरीद लिए हैं। खेती आदि का धन्धा करने लग गए हैं।

खापरिया चोर की अनेक बातें कही जाती हैं। खापरिया चोर इतना प्रसिद्ध हुआ है कि नामी होशियार चोर का विशेषण ही खापरिया बन गया। पहाडो की कई गुफायें अथवा छिपने योग्य सुन्दर गुप्त स्थानो के बारे में वहा के स्थानीय लोगो में यह विश्वास चला आता है कि यह खापरिया चोर की गुफा है। राजस्थान मे कई ऐसे स्थान हैं जो खापरिया चोर के नाम से सम्बन्धित है। चोरी भी एक कला मानी गई है। इस कला का खापरिया उस्ताद था।

खापरिया पक्का चोर है जुवारी भी है पर साथ ही उसके चरित्र मे कुछ विशेषतायें भी हैं। वह एक हवेली में चोरी करने घुसता है। कटी हुई ककडी के टुकडो के साथ मिला हुआ नमक भूल में खा लेता है। उसी समय चोरे हुये जेवरो की पोटली को वहीं छोड बाहर निकल जाता है। जिसका नमक खा लिया, उसके चोरी नही की जाती। खापरिया जुआ खेलता है, बाजी पर राजा सिद्धराज का करोडीधज घोडा रखता है। बाजी हार जाने पर वह करोडीधज घोडा चुराकर देने को जाता है। रास्ते मे पृथ्वी को फाडकर एक अद्भुत मदिर को

निकलते हुये देखता है। उस अनुपम कलाकृति को देखकर खापरिया मुग्ध हो जाता है। सोचता है, सिद्धराज भी अनुपम मदिर बनाने की उत्कट इच्छा रखता है। उसकी इच्छानुसार अभी तक कोई नक्शा नही बना सका। यदि वह इस अनुपम कलापूर्ण मन्दिर को देखले तो उसके जीवन की साध पूरी हो जाये। खापरिया राजा के प्रिय घोड को चुराकर आया है, पकडे जाने पर उसे प्राण दण्ड दिया जा सकता है। लेकिन खापरिया चोर का अपना एक व्यक्तित्व और ऊचे दर्जे का चरित्र भी है। वह चुराये हुये उसी घोडे पर सवार हो राजा के पास जाकर उस अद्भुत मन्दिर की बात कहता है और राजा को साथ लाकर दिखलाता है। राजा के पूछने पर जुवे मे करोडीधज को बाजी पर लगाने का और चुराने का हाल साफ साफ कह सुनाता है। उसके इस चरित्र पर राजा भी प्रसन्न हो अपना प्यारा घोडा खापरिया को दे देता है।

पद्मसिहजी की बात मे एक जती के वशीकरण सुरमा बनाने का वर्णन है। इसी भाति अनोखा कवरजी मे एक जोगी का जिक्र आता है। उसके अपना डडा फटकारते ही दो गुलाम भूत आ हाजिर होते और उनसे वह मनमानी, बुरी भली चाकरी लेता, वे गुलाम भूत दु खी हुय उसके बुरे भले हुक्म की तामील करते। सदियो तक हमारे समाज में इस प्रकार के अन्धविश्वास प्रचलित थे।

एक समय था जब जोगी जतियो के इस प्रकार के छल छद्मो से जनता डरती थी। उनके धर्माचरण के पीछे अनेक प्रकार के पाखण्ड और ढोग चलते थे। लोक साहित्य इन जतियो तथा धर्म गुरुओ के अन्याय

और अत्याचार की गाथाओं से भरा पडा है। स्त्रियो के साथ अत्याचार के किस्से ढोगी साधुओ के साथ जुडे हुये हैं। कई साधुओ की अलौकिक शक्ति और उनके अत्याचार की धाक ऐसी जमी हुई थी कि उनके नाम से स्त्रियां कापती थी। लोक साहित्य जन जन की जिव्हा है। वह विना लाग लगाव के स्पष्ट वात कहता है। उसने इन अत्याचारो के खिलाफ आवाज उठाई ऐसे लोगो को मारने मे भी पाप नही।

"छाछर, मांछर, जूं, जती, या ने मारियां को पाप नथी।"

कवि करणीदानजी ने भी इन जतियो के ढोग और अत्याचार देखकर 'जतीरासा' नामक एक ग्रन्थ रचा था। वाद मे एक सदाचारी जती के कहने पर अपने हाथ से ही उस ग्रन्थ को जला डाला था।

जतियो की मन्त्र तन्त्र की शक्तियो के वारे में वहुत कुछ कहा जाता है। कई मन्दिर, चट्टानो पर या दुर्गम स्थलो पर अवस्थित हैं। इन मन्दिरो के लिये यही कहा जाता है कि ये अमुक अमुक समय में किसी जती के उडा कर लाये हुये हैं। कोई जती मन्दिर उडा कर लेजा रहा था कि रास्ते में ही सवेरा हो गया और मुर्गा वोल गया इसलिये इसको यहीं रख देना पडा। मन्त्र वल से आकाश से तारे उतारने की वातें भी वहुत कही जाती हैं। वडे विस्मय की वात है कि आज के विकास युग में भी हमारे देश में ऐसे ऐसे अन्धविश्वास प्रचलित हैं।

दो साल पहले मेरा एक राजस्थानी गाथा सग्रह "मांझल रात' नाम से निकला था। इसे विद्वानो एव साधारण जन समाज ने वडा पसन्द किया। विद्वानों और साधारण पढे लिखो ने ही नही बल्कि दूसरो से

पढवाकर सुनने वाले अनपढ़ लोगो तक ने मुझे आग्रह किया कि मैं अपनी राजस्थानी कहानिया और प्रकाशित करवाऊ । इस राजस्थानी प्रेम से मैं वहुत ज्यादा प्रभावित हुई। लोगो में अपनी मातृभाषा राजस्थानी के लिये प्रेम जागृत हो रहा है। वास्तव में इन कहानियो मे जो ओज और माधुर्य है वह तो राजस्थानी जीवन एव भाषा की अपनी ही मौलिक देन है। मैं तो केवल निमित्त मात्र हू।

राजस्थान के लोक जीवन में प्रचलित लोक गाथाओ के आधार पर मैंने वहुत सी कहानिया लिखी हैं उनमें मे सोलह कहानिया इस प्रकाशन में प्रकाशित की जा रही हैं।

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

डॉ० टैसीटोरी रो परिचै

इण पोथी ने मैं डॉ. एन पी टैसीटोरी ने भेंट कीधी इणं सारू टैसीटोरीजी रो थोडोक परिचै दे देणो भी जरूरी समझूं।

टैसीटोरीजी रो जनम इटली रा उदीने नाम रा गाव में व्हीयो। वालपणा सू ही उणा ने हिन्दुस्तान सू घणो प्रेम हो। वा इटली में ही भारतीय भासावा पढ़णो सरू कर दीवो। ,सस्कृत, अपभ्रम, प्राकृत, हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी भासावा वा पढी। राजस्थानी भासा पढता ही वा ने राजस्थान ही राजस्थान दीखवा लागियो। वे सपना ही राजस्थान रा देखण लागिया।

भगवान जाणे आगला भव रा वे राजस्थानी हा के काई। टैसीटोरीजी इटली सूं जहाज मे चढ ववई उतर राजस्थान में आया, राजस्थान में पग दियो न तो वे सदा सारू राजस्थान रा ही वण गिया। वा रा रूम रूम मे राजस्थान रो रग रम गियो। राजस्थान री रज रज में टैसीटोरीजी ने राजस्थान रा सूरमा री सासा री सुगध आवती। वैवता वायरा रा सणणाटा मे उणा ने घोडा रा हणणाटा अर तरवारां रा झणणाटा री जूनी वातां सुणीजती। टीवा रे माथे ऊगता चांद मे,

आथीजती कीरतिया रा भूमका मे टैसीटोरीजी ने भूमल रा, सोरठ रा पळका पडता दीखता। आजस सू माथो ऊचो करियोडा चित्तौड अर रणथभोर रा किला ने देखता देखता टैसीटोरीजी जागता थका ही सपना में गम जाता।

राजस्थान में आवता ही वा आपणे व्हाला विषय, राजस्थानी साहित्य पै काम करणो सरू कीधो। रात दिन सरदी गरमी री परवाह कीधा बिना वे साहित्य री साधना मे लाग गिया। राजस्थानी साहित्य में उणा ने आपरा इस्ट रा दरसण व्हेता। रात दिन डिंगळ साहित्य री खोज रा काम में लागिया रैवता। चौईस घडी वा रो काम हो ग्रन्थां ने भेळा करणा, उणो री विवेचणा करणी, अनुवाद करणो अर छपावणो। वा राजस्थानी भासा रो खूब अध्ययन कीधो। गामा रा आदमिया साथे वे घडाकावद राजस्थानी वोलता। कोरा वोलता ही नी राजस्थानी भासा रा अस्या विदवान हा के गुजराती अर राजस्थानी भाषा री व्याकरण वणाई। उणा री वणायोडी व्याकरण आपरा ढग री, वैज्ञानिक ढग सू वणायोडी, पेल परथम व्याकरण ही। इण व्याकरण सारू भासा सास्तर रा महापिंडत डॉ० सुनीतिकुमार चटर्जी आप री एक किताव में लिखियो के "डॉ० टैसीटोरी री व्याकरण ने राजस्थानी अर गुजराती भासा तत्व री नीव कैवणी चावै।"

"खडिया जगा री वचनिका" नाम री डिंगळ मे लिखियोडी नामी पोथी ने टैसीटोरीजी हाथ री लिखियोडी वारह प्रतिया री जांच कर, आलोचना अर ससोधन सूधी, वगाल री एसियाटिक सोसायटी सू छपाई।

राठौड प्रिथीराजजी री क्रिस्न रुकमणी री वेली रो जो पाचवो वेद ने

उगणीसवीं पुराण मानी गी है; संपादन कीधो। "छद राव जैतसी रउ" रो ही सपादन कीधो। इण तरै सू घणी घणी पोथिया रो संपादन, खोज, विवेचना, संसोधनात्मक आलोचना कीधी। बीकानेर रा जूना पोथीखाना री जूनी पोथिया रो पहलडो कैटलॉग ही टैसीटोरीजी री मेहनत रो फळ है'। टैसीटोरीजी री घणी सारी पोथिया अर लेख इटली लंदन अर कलकत्ता सूं छपिया है।

टैसीटोरीजी ऊट पै चढ, टीबा पै डेरा ताणता, जोधपुर, बीकानेर राज रा गांमा गांमा में खोज करता फिरिया। बीकानेर राज रा अजबघर में टैसीटोरीजी री खोज री सामग्री, सिक्का, मूरतियां, भाडा रा टुकडा, टेराकोटाज पडिया है। तपती लूवा में वा टीबडां में जाय जूनी देवळियां रा, छतरिया रा, मिंदरा रा सिलालेख पढिया, वा री छापा लाया, राजस्थान भारती रो भडार भरियो। साहित्य री सोध रो काम जो टैसीटोरीजी करियो उण रो तो आप रो मोल अमोल है।

राजस्थानी भावना अर राजस्थानी साहित्य रो ओ अमर प्रेमी राजस्थान रा गीत गावतो गावतो राजस्थान री माटी में मिल गियो। सन् १९१९ में बीकानेर में टैसीटोरीजी आप री अमर ख्याति छोड देवलोक व्हे गिया। जो परम्परा आंपणा राज मे वा राखी, जो गैलो अर दिसा आपां ने बताई उण सारू आखो राजस्थान वा रो अहसानवद है।

साची वात तो या है के आंपणा राजस्थान राज री मातृभासा अर साहित्य ने संसार रे मू डागे लावा रो, बिखरियोडा सूत्रा ने एक वध मे बांधवा रो, राजस्थान रा साहित्यिक जग रो आरभ करवा रो श्रेय डॉ० टैसीटोरीजी ने है।

सीटोरीजी सूं प्रेरणा पाय राजस्थान रा विदवानां, घर हीज छिपियोडा अर गुमियोडा डिंगळ साहित्य री कानी ध्यान दीधो । राजस्थान रा, राजनीतिग्यां रो, विदवानां रो, साहित्यकारां रो, साहित्यिक संस्था रो अर लेखकां रो ओ धरम है के वे आप आप री सरधा सारू आप रे राज रा जूना, मानैता, साहित्यकारां ने मान दे, इज्जत दे । उणा रा स्मारक बणावे, समर्पण करै, श्रद्धांजळिया चढ़ावे, वरसिया मनावे । उणा ने मान देवा मे आपणे प्रात री, प्रातवासिया री अर देस री इज्जत है । जो जात, समाज, देस आपरा साहित्य री अर साहित्यकारां री कीमत नी समझे वे माथो ही ऊचो नी कर सके ।

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

फेरिस्त

क्रमांक	वातां रा नाम	पाना
१	लाखो फूलाणी .. .	१
२	हरामखोर री मूंडकी	६
३	अकल री पोसाक	२५
४.	पलक दरियाव . .	३१
५	खापरियो चोर	५४
६	अनोखा कवरजी	६२
७.	रूद्रमाळो मिंदर . .	७६
८	चातर नार	८५
९.	खोटा रो फळ खोटो . ..	९१
१०	अकल बादर	९८
११	मृत्युफळ के अमरतफळ	१०४
१२	जग कैंता जगमाल	१०९
१३	पदमसिंघजी री वात	१२२
१४.	सोवते असर	१३१
१५	अकलवद सेठाणी	१३९
१६	खुदाय बावळी	१४६

कैरे चकवा वात

बीजजी बोलिया, "पाटण रो रैवासी, हसजी रो बेटो हूँ।"

नाम सुण खवास उठ मुजरो कीधो। दौड़ियो दौड़ियो जाय लाखो फूलांणी ने कहियो, "आप बाईसा रा नाळेर पाटण रा बीजजी रे भेजवा री सोच रिया हो, बीजजी तो अठै पधारियोडा है।"

लाखो फूलाणी झट बीजजी कनै गिया। घणी खातर कीधी। आपरी बेन पेमकवर रा नाळेर भेलाया। आछो मोरत कढ़ाय परणवा ने आवा रो हूँकारो भर बीजजी पाटण आया। सावा माथै जान चढ़ाय मूळराजजी, बीजजी नै बीद बणाय आया। लाखो फूलाणी जान ने दरियाव पै जहाजां री सैल करावा ने लेगिया। जहाज में बैठ, लाखो फूलाणी आपरा चरवादार ने कहियो—

"म्हारी घोडी ने, म्हां नी आवां जठा पैलां मीठो पाणी पाय ले आव।"

चरवादार तो घोडी पै चढतो ही चाबको वाह्यो। चाबका रो सडाको जहाज में बैठियोडा सारा सिरदारां सुणियो।

मूळराज सडाको सुणतां ही माथो धूणियो, "अरे नालायक, गजब कीधो।"

लाखोजी पूछियो, "काई व्हीयो।"

मूळराज बोलिया, "चरवादार ने माफ करो तो कैवू।"

"माफ कीधो, फरमावो।"

"लाखोजी म्हूं आंख रो तो आंधो हूँ, पण हियारो सूझतो हूँ। आपरी घोडी सूवर है। ईं रा पेट में बछेरो है नवलखो, नामी बछेरो व्हेला।

दरियाई घोडा रा पेट सूं उपनियो पाणीपन्थो वछेरो इण रे जनमेला। पण ईं चरवादार चावको अस्यो अवको मारियो के पेट मांयला वछेरा री डावी आख फूटगी।"

मूळराज री वात सुण सगळा ने अचभो व्हीयो।

लाखो फूलांणी वोलियो, "वो वछेरो डायचा में आपरे ही नजर करालां।"

घोडी पूरा दिना सूवर ही। थोडाक दिना में ही वछेरो जनमियो। साचैं ही आख सू काणो। वीजजी वछेरो माग आप रे पाटण ले आया। वछेरा ने वागडोर मे ले फेरवा लागिया। घोडो चालतो अस्यो जाणे पाणी रो रेलो चालियो। पेमकंवर आप रे पीहर हा। वीजजी ने ओळूं आई। सांझ रा नवलखा काणा घोडा ने खोल सासरे सिंध चालिया। पाटण सूं १०५ कोस दूरी। रातूं रात सासरे जाय दिनं ऊगा पाछा पाटण आय वळिया। अवै वीजजी रोज रात ने सासरे जावे। घडी दो घडी रमखेळ पोह फाटता रा पाटण आय पूगै।

लाखे फूलांणी ने खवर पडी, वीजजी रोज रात ने १०५ कोस चाल ने आवे पाछा एक सौ पाच कौस काट ने घोडो दिन ऊगां पैला पाटण पूगाय दे। अस्यो घोडो अर वी री या चाल देख लाखो फूलाणी रे मन में पाप आयो। ईं घोडा ने आपां राख लां। राखै कींकर! वीजजी ने मारियां विना घोडो कवजा में आवे नी। लाखो फूलांणी विचार कीधो "वाई रे एक वेटो व्हे जावे, वीं रे विसास व्हे जावे तो वीजजी ने मारला।"

जळवा पूजी, वीजजी ने बुलाया। वीजजी घणा हरख कोड सूं आया। रात ने सूता लगा वीजजी ने लाखो फूलाणी मराय दीधा। घोडो आपरे राख लीधो। वीजजी रे मरवा री खबर सुण पाटण सूं मूळराजजी वगैरा साखला घणा ही चढ़ न आया। पण लाखो फूलाणी आगे कोई जोर चालियो नी। साखला वैर लेवाने हाथा रे बटका भरे पण लाखो फूलाणी रो जबरो राज कोई जोर चाले नीं।

भाणेज राखायच ने लाखो फूलाणी आपरे कनै राखै, घणां लाड राखै, ससतर विद्या सिखावै।

लाखो फूलाणी री आदत ही के रात ने रोजीना सूवे जद जोर सूं वाग मारै पछै झट सोय जावै। सगळा जणा लाखा जी री ई आदत पे अचभो तो करे मण पूछवा री हीमत कणी में ही नी।

मिनखा एक दिन राखायच ने सिखायो, "मामाजी थारा घणा लाड राखै, थारो कहियोडो टालै नीं। था पूछो के सूवती वेळा वे वाग क्यूं पाडै।"

एक दिन आछो मौको देख राखायच पूछियो, "मामाजी आप रात ने रोजीना सूवती वखत वाग क्यूं पाडो। म्हनें भेद बतावो।"

लाखोजी मन में जाणियो, जरूर ई ने कोई सीखायो है।

बोलिया, "भाणेज, थनै कालै बतावू ला।"

दूजै दिन मामा, भाणेज ने ले दरियाव में जहाज में बैठ न गिया। आगै एक भाखर आयो, लाखोजी भाखर रा एक रूख रे तीर री मार बोलिया, "भाणेज वो तीर जाय न ले आवो।"

राखायच ज्यू ही जहाज सूं हेटो उतरियो, लाखोजी जहाज चलाय वहीर व्हेगिया।

राखायच कहियो, "मामाजी, आछो धोखो दीधो।"

अबै करै तो काई ?

भाखर में विसराम री जगा जोवण लागियो। एक गुफा दीखी, मायने वळियो। आगै देखे तो ढोलिया पै एक मृतक सूतो। ढोलिया रे चारूं पागै चार अपछरा वैठी चवर कर री।

राखायच ने देखता ही अपछंरा वोली, "भाणेज आया, राखायच भाणेज भला पधारिया, आओ वैठो।"

'मामीजी' कैय, राखायच वासूं मुजरो कर नीचो वैठियो। ढोलिया पै पडिया मृतक रो उणियारो लाखाजी सू मिलै।

राखायच ने विचार में पडियो देख अपछरा वोली, "आ लाखोजी री दूजी देह है। रात नै वाग मार लाखोजी सूवे जद वांरो जीव ई देह में आय जावे। वे जीवता व्हेय अठे रात ने म्हारे नारै रैवे। वाग नीं मारे जतरे या देह मृतक पडी रैवे।"

राखायच पूछियो, "मामाजी अमर है काई।"

अपछरा वोली, "वे सीहा राठौड रा हाथ सू मरेला, नीं तो वे अमर है।"

राखायच पूछियो, "था रो वर लाखेजी रे मर्‌या पछै कूण व्हेला।"

अपछरा बोली, "जो आपरा बाप रो वैर लेवतो मरेला वी ने ही म्हां वरांला।"

राखायच बोलियो, "मामाजी सूं म्हाने म्हारा बाप रो वैर लेवणो है। म्हूँ वैर ले तो मरू तो ?"

अपछरा कहियो, "तो म्हां थांने वराला।"

राखायच वठे सोयगियो। सूत्योडा ने अपछरां जाय लाखेजी रा मेहलां में छोड आई। दिन उगा मामाजी सू मुजरो करवा गियो।

मामाजी पूछियो, "भाणेज, अबै जाणियो, म्हूँ रात ने वाग क्यू मारू ?"

"हा मामाजी, जाण गियो।"

अबै राखायच वैर लेवा री सोचे। पाटण गियां विना काम नी चाले। वी सोची जे नोलखो घोडो हाथ लागै तो कुटुम्ब रा लोगां सू मिल वर लेणे रो परवन्ध करू।

लाखोजी नवलखा घोडा नै सात परकोटा में वाघ ताळो जड कूची आपरा धनै राखै। घोडो हाथ आवे नी। एक दिन लाखोजी अमला में चाक व्हेयरिया। कूची आप रा भरोसा रा खवास ने देय सोय गिया। अबै राखायच पेट दुखायो, हाका करै, गुळोटा खावै।

खवास पूछियो, "दवा दारू करा, वैद वुलावा।"

राखायच कह्यो, "नी म्हारे तो ई कूची रा पेट पै डाम दो तो पेट दुखतो रैवे।"

खवास कहियो, "भली वात, झगझगती वासदी में कूची ने तपाय लाल बूद कर राखायच रा पेट पै छैंट दीधी। राखायच रो पेट दूखतो रैंगियो। वळ वळती कूची रा गुल दीधा, जो पाकिया, थोडा दिनां में ठीक व्हेगिया। अवै कूची रो निसाण यूं रो यू राखायच रा पेट पै मंड गियो। राखायच एक हुसियार लुहार ने कहियो, "या निसाणा ने देख असी री असी कूची घड दे।" लुहार कूची घड दीधी। रात ने ताळो खोल राखायच नवलखा घोडा पै जीण कस पाटण पूगियो।

मूळराज सू जुहार कीधो, "म्हारा वाप रो वैर लेवा सिंध आग्रो। लाखेजी री मौत सीहा राठौड रा हाथ सू लिखी है जो वीने लै न या आवजो।"

वैर लेवा री मिसलत कर राखायच दो घडी रात रेतां पाछो परो गियो। घोडा ने ठिकाणे वाध सोय गियो।

परभाते लाखाजी घोडा ने सभाळवा जावे। रूमाल सूं घोडा ने पूछ न झाटके तो रूमाल धूळा सू भरयो।

लाखोजी कहियो, "या रज तो पाटण री, जरूर भाणेज परवार सू सल्ला करण ने गियो।

लाखोजी दरवार मांड न वैठिया। राखायच आय न मुजरो कीधो।

लाखाजी पूछियो, क्यू भाणेज ? सांच वोलजो, पाटण गया के ? कचीला सू मिल आया ?"

राखायच साच वोलियो, "हा मामाजी पाटण गियो मूलराज स

मिलियो, वाप रा वैर लेवा री तैयारी कर रियो हूँ।"

लाखाजी वोलिया, "घणी आछी वात है वैर लेवो जो चोखो पण मूळराजजी ने पूछियो के नी वैर लेवा ने सिंध पै चढ न आया जद पाछा गाडरा ज्यू भागता गिया।"

राखायच वोलियो, "लडवा वाळा जीते ही है मोको आया भागै ही है, या तो कोई मेहणा री वात नी। हार जीत तो व्हेती ही आई।

घणा मेहा मदर चुवै, भूपति ही भाजत।
वेदा ही री राड हुवै तैरू डूब मरत॥

लाखोजी कहियो, "था सपूत हो जो वाप रो वैर लेवोला। म्हाने तो खुसी है के था अस्या जोगा निकळिया।

आ केय लाखोजी छाना रेगिया। महिना दो महिना वीतिया। मूळराजजी सीहा-ी ने लेय चढ आया। जोर रो जुद्ध व्हियो। सीहाजी रा हाथ सू लाखोजी मारिया गिया। वाप रो वैर लेवता राखायच ही मारियो गियो। अपछरा वेमाण में वैठाय राखायच ने लेयगी।

हराम खोर री मूंडको

एक गांव में एक पटेल। दानो, स्याणो आदमी। पटेलण ही समझणी लुगाई। एक दिन रोटिया पल्लती पल्लती पटेलण बोली,

"थांरा हाथा सूं घणा ही चोखा चोखा काम व्हीया है, काज करियावर, ब्याव सादी, नाणां नुकता। पण एक गगोज री मन में रैय री है। जो था तीरथ कर आवो तो गगाजळ वापर, आ ही मन री काढ लां।"

पटेल बोलियो, "पटेलण वात तो साची की। म्हारा मन में ही तीरथ करवा री है। आज थें भलो विचार कीधो।"

पटेल सोचवा लागियो, "लारे किण ने ले जावूं ?"

पटेलण बोली, "आंपणां नाई ने।"

पटेल नाई ने पूछियो, "तीरथां जाय रियो हूं। साथे चाल।"

नाई बोलियो, "पटेला, घरे काम है। ब्याव सावा आय रिया है।"

पटेलण कहियो, "खवासजी, ब्याव सावा आय रिया है तो काईं ? थारै घरे तो मनख है काम करणिया।"

"घरै नायण ने पूछ, थांने जवाव दूला।"

"ठीक।"

नाई घरे जाय नायण ने कहियो, "पटेल तो तीरथ जाणे रो मतो कीधो है। म्हेन लारे चालवाने कँ रिया है।"

नायण बोली, "भली बात। थांई जाय आवो।"

"हूँ, व्याव सावा मड रिया है। पँदा रा दिन है, कठे जावू।"

नायण कहियो, "व्याव सावा रो कांई सोच करो, घणो ही काम निवेड़ाला, था जावो। हाडकिया खोळ आवो। घडी घडी रा अस्या मौका थोडा ही आवे।"

नाई रो मन तो नी पण नायण जोर दीधो। नाई आय ने पटेल ने कहियो, "पटेला, लारे तो आय जावू ला, पण म्हारी एक सरत है।"

"बता, कांई सरत है?"

"सा, सरत आ है के आपां देस विदेस, घणी घणी चीजां देखांला, वठे जे कोई नवी बात देखण में आई तो म्हूँ थांने वीं रो अरथ पूछू ला। थां अरथ बताय दीधो तो ठीक, जे नीं बताणी आयो तो म्हूँ वठा सू ही ज पाछो फिर जावू ला। आगे पांवडो एक दू नीं।"

पटेल बोलियो, "ठीक, मानी थारी बात। चाल तो सरी।"

पटेल घोडी पँ बैठ गियो, लारे लारे नाई व्हेगियो। दस बीस कोस चालिया न एक सहर आयो। जाय धरमसाळा में उतरिया। घोडी ने बाधी। पटेल आटी मे सू रिपिया काढ नाई रे हाथ मे दीधा,

"घोडी रे दाणो, घास ला। आपां रे सारू ही आटो सामान ला।"

नाई सामान लेवा ने सहर में गियो। सहर मे फिरियो। कठै ही कोई नवी वात देखूं तो जाय पटेल ने पूछू। वां सू नी बतावणी आवे तो वाछो घर रो गैलो पकडू। नाई फिरतो फिरतो कोटवाळी चूतरा कने निकळियो। उणने नवो आदमी देखतां ही कोटवाळी रे सिपाही रोकियो।

रोक ने कहियो, "यो जूतो पडियो, ई वकरा री मूडी पै मार दो जूता री।"

नाई देखे तो सवा हाथ लांवो तो जरवो लटक रियो। चुतरा पै वकरा री मूंडकी पडी।

नाई पूछियो, "क्यूं जूता री दिरवावो सा इण रे?"

सिपाही वोलियो, "क्यू भसवाड करे। मार थारा वाप रे दो जरवा री नीं तो थारा माथा परै ही ज इण जरवा री पडेला।"

"आ लो सा, दो नीं अर चार जरवा लो। म्हारो कांई विगडै। आ कैय नाई तो ले जूतो फडाफड वकरा री मूडकी पै मारी।"

सिपाही कहियो, "वस जा अवै।"

नाई मन में घणो राजी व्हीयो। आ नवी वात देखी है। पटेल ने ई रो अरथ पूछ वां ने मियानो देणी आवेला नीं अर म्हारो लारो छूट जाही।

घोडी ने चारो ही नीं न्हाखियो, झट पटेल ने कहियो, "पटेलजी म्हें तो आज एक नवी वात देखी जीरो अरथ वताओ ।"

वकरा रा माथा पै जूता देवा री सारी वात सुणाई ।

पटेल वोलियो, पैला घोडी ने चारो न्हाख, दाणो दे पछे वतावू ।"

दाणो चारो दे नाई आयो, "पटेलां, अरथ वताओ. नीं तो जावू ।"

"रोटी तो पोव, पछे अरथ ही वतावू ।"

रोटी जीम चू ट नाई आय ऊभो रियो, "पटेलां, वकरा रा माथा वाळो मियानो दो ।

पटेल वोलियो, "हुक्को भर ला । म्हूं कैवू थू सुण ।"

पटेल हुक्को ले माचा पै वैठ गियो । नाई नीचे वैठ गियो । अवे पटेल नाई ने कैवण लागियो ।

सुण, वात आ यू है कै इण नगरी में एक राजा राज करतो जिण रे नाच गाणा, खेल तमासा देखवा रो सौक घणो । राजा हुकम देय राखियो के जो कोई खेल तमासो करणियो नगरी मे आवे तो पैला रावळे आवे । एक दिन एक नट अर नटणी पाडा पै आपरो सामान लादियां अठे आया ।

दरवाजा मे वळता ई सिपाही कहियो, "पैला रावळे जाय खेल वता ।"

नट कहियो, "आ तो म्हें चावा ही हा । म्हाने हाजिर करो राजा आगे ।"

नट हाजिर व्हियो। राजा वीं ने खेल करण सारू कहियो। नट खेल कीधा, एक सू एक आला। राजा घणा राजी व्हीया। इनाम देण लागिया।

नट अरज कीधी, "म्हारो एक खेल और मुलाहिजे व्हे जावे, पछे मरजी व्हे जो वख्से।"

अवे नट गळा में ढोलकी घाल लीधी, खेल बतावा लागियो, "देवता अर दानवा रे ऊपरे आकास में झगडो व्हेय रियो है जो म्हूं ही उण जुद्ध मे जावूं।"

आ कैय ने एक हाथ मे सूत री कूकडी ही जिण ने ऊपरे फेंकी। उण रा तार तार पैं नट ऊपरे चढे। ढोलकी वजातो जाय रहियो, कूकडी रा तार पैं ऊपर चढ़तो जाय रहियो।

देखवा वाळा 'कमाल कमाल' कर रिया। नट तो अतरो ऊंचो चढ गियो के दीखणो ही वन्द व्हेगियो। धीरी धीरी ढोलक री आवाज आवे, बस। नटणी पाडो लीधा आखिया फाडिया आकास साम्ही झाक री। भगवान सू आपरा मोटियार री खैर मनाय री। राजा अर देखवा वाळा ही चकत व्हीया ऊभा। नट ही नी दीखे अर ढोलक री आवाज आणी ही वद व्हेगी।

अध घडीक व्ही न ऊपर सूं एक हाथ कट न नीचे पडियो। नटणी वरळाई, "म्हारा खावन्द रो हाथ जुद्ध मे कट गियो।"

अतराक में एक टांग कट ने पडी। दूजो हाथ कट ने पडियो। सरीर

रा टुकडा टुकडा व्हेन नीचे पडवा लागिया । नटणी वां टुकडा ने भेळा करती जावे, विलाप करती जावे । नट रो एक एक अंग कट ने नीचे आय पडियो ।

नटणी विलाप करती राजा ने अरज कीधी, "देवासुर सग्राम मे म्हारो खावन्द मारियो गियो । म्हू जीवती रैंय न कांई करू । सती व्हूंला ।"

राजा ने ही बडो अफसोस व्हियो कस्यो कारीगर नट हो मरगियो । वी ने सती व्हेती ने बरजी, गैरा इनाम इकरार रो हुकम सुणायो । ता उमर पेट्यो देवा रो भरोसो दीधो । जागीर रो हुकम दीधो । पण नटणी मानी नी ।

"म्हूँ तो होवूंला सती ।"

नी मानी तो हैरान व्हे राजा कहियो, "व्हे वा दो इण ने सती । ठावा सरदार, कामदार जाय, इज्जत रे साथी सती कराय दो ।"

चिता चुणाय, नटणी तो आपरा पाडा रे लारे वासदी मे वैठगी।

वासदी में वैठती वगत बोली, "म्हूँ सती व्हेती एक वात कैवू जो मान जो । सवा तीन पोहर पाछे म्हारो तीसरो कराय दीजो । खेल देखियो उण चौक में तीसरो करावजो । जो जो आदमी खेल देख रिया हा वे वीं तीसरा मे आवे । जो थां अतरो नी करियो तो म्हारो सराप लागेला ।"

कामदारा, सरदारां वीं ने वचन दीधो । सिनान कर तीसरो करवा ने चौक में वैठिया । वाजां परूसी, एक कवो लीधो न तो ऊपर सू ढम

ढम ढोलकी बाजी, नट सूत रा तार पर सू उतरतो दीखियो। कवा हाथ में रँगिया, नजर आकास साम्ही लाग गी। गळा मे तो ढोलकी वधी लगी, एक हाथ मे तरवार, नट नीचे उतर मुजरो कीधो।

"खम्मा, हजुर रा परताप सू राक्षसा ने मार। देवता री जीत कर हाजर व्हे गियो हूँ।"

मनखां रा मू डा उतर गिया, "ई री लुगाई तो वळगी।"

राजा पूछियो, "अरे थारो अंग अंग तो कटनै नीचे पड गियो, थू जीवतो किण तरै आयो ?"

अन्दाता, "अ ग अंग तो दुसमणां रा काट ने तावेदार मुलाहिजा वास्ते नीचे फैंकिया हा।"

थू कैंय न नट तो चारी आडी ने नजर दौडाई।

'म्हारी लुगाई कठै र पाडो कठै ?"

"भाई, वा तो सती व्हेगी।"

'हैं ? म्हारी लुगाई ने वाळ दीधी ?"

केसां ने खैंच खैंच रोवा लागियो। राजा ने अरज कीधी, "म्हारी लुगाई म्हने मिलणी चाहिजे। म्हूँ तो रावळे भरोसे छोड ने गियो। म्हारी लुगाई ने कठै छिपाई ?

नट नैं घणो समझायो, "थारी लुगाई मानी कोनीं। म्हां तो घणी ही बरजी। बळी लगी तो अवै पाछी सरजीवत व्हेवा ने कोयनीं। थनै

जागीर दे देवाला, थारो दूजो व्याव एक नी दो कराय देवांला ।"

नट तो मानियो नी, "व्याव काई करावो, पदमणी दे देवो तो ही म्हारे किण काम री । म्हारे तो म्हारी चीबडी ही वा ही चाहिजे । सू पो म्हारी लुगाई ने ?"

लुगाई ने सू पे कठा सू । राजा ही चिन्ता में पड गिया ।

नट वोलियो, "म्हारी लुगाई वळी नी, छिपाय राखी है ।"

"छिपाय राखी व्हे तो देखले । व्हे जठा सूं काढ ले ।"

"उण ओवरा रो ताळो खोलो । म्हारी लुगाई ने उण मे छिपाय राखी है ।"

राजा वोलियो, "भली वात, ताळो खोल इण री दिल जमी करायदो ।"

ताळो खोलियो तो आगे नटणी अर वी रो पाडो वैठा । नट राजा कनै नटणी ने लेजाय मुजरो कीधो,

"अन्दाता, मालका री खावन्दी सू तावेदार री लुगाई लाधगी है ।"

राजा अर सव देखवा वाळा अचरज मे पड गिया ।

नट वोलियो, "नी तो म्हूँ मरियो, नी लुगाई वळी, नीं कोई पाडो वळियो । ओ तो खेल हो जो हजुर रे निजर गुजरायो ।"

राजा घणा राजी व्हीया । इनाम इकरार दीधो । नट ने वुलायन पूछियो, 'वता, आ करामात काई है ?"

"करामात काई नी, दूसरा री खोळी में परवेस करवा री विद्या म्हने आवे।"

"वा म्हने सीखा।"

"अे चीजा राजावा रे सीखवा री नीं है। अे तो म्हारे पेट भराई करवा ने है।"

राजा मानिया कोनी। घणी जिद् कीधी। तो नट अरज कीधी,

"जगळ मे एक झूंपडी वणाय दीधी जावे। वठे और कोई नी आय सके, आप पधारो एकात मे आपने वठे या विद्या सिखाय दूला।"

जंगळ में झूपडी वणगी। राजा घोडे सवार व्हे वठे गिया। लोरे घोडो पकडवाने एक नाई ने लारे लेय लीधो।

झूंपडी में उतर नाई ने कहियो, "थू घोडो ले उण रूख नीचे ऊभो रे जा। म्हूं हेलो पाडू जदी आवजे।"

राजा तो झूंपडी मे जाय, आडो अटकाय दीधो। नाई री जात ही चोधी। घोडा ने रूख रे बांध झूंपडी रे पिछोकडे कान लगाय ने सुणवा लागियो। मांयने नट राजा ने मन्तर सिखायो, वारे ऊभै ऊभै नाई सीख लीधो।

राजा घोडे चढ पाछा आया। गैला मे एक सूवो मरियोडो पडियो। राजा विचारी, "देखा, मन्तर सिद्ध व्हीयो के नी, सूवा रा खोळ मे परवेस कर ने देखूं।"

नाई ने कहियो, "जीण नीचे बिछाय दे। थोडी देर सोवूंला।"

जीण पर राजा सोय ने मन्तर साध सूवा रा खोळ में परवेस कीधो, मरियोडो सूवो तो पांखडा फडफडाय उड गियो।

नाई देख रियो। वो ही झट मन्तर साध राजा री खोळ में परवेस कर गियो। नाई तो राजा वण गियो। राजा सूवो वण गियो। नाई राजा तो झट उठ ने नाई रो खोळो पडियो उण ने तो काट कूट न फैंक दीधो। आप राजा वण घोडे सवार व्हे म्हेला दाखल व्हेगियो। किण ने ही वैम ही काई अर क्यू पडवा लागियो। बारणे तो वो सब ने ओळखतो, जाणतो, राजा कठै बैठे कांई करे ज्यू वी कीधो। रात पडी ने रावळा मे गियो। रावळा मे वो किण ने ही ओळखे नी, आ जाणे नी राजा राणी ने काई कैंय र बतळावतो, कठे बैठतो, काई करतो। राणी सू जाय बात करवा लागियो तो वीं री आख ही राणी आगे ऊची नीं उठे। हरेक बात में फरक। राणी ने वैम व्हेगियो। राणी आपरी घर विध री वाता करण लागी वो जाणतो व्हे तो करे? राणी ने भरोसो व्हेगियो। काई न कांई दगो। ओ म्हारो राजा नीं।

राणी कहियो, "आप बारे पधारो। म्हारे कहियां विना रावळा में आया तो ठीक नीं।"

नाई राजा सोची, "आगतो व्हेणो ठीक नी। आज नी तो काले राजी होवेला ही ज। जावेला कठै।"

वीं तो बारे जाय हुकम निकाळियो के जो जीवतो सूवो पकड लावे उण

ने दस रिपिया, मरियोडो सूवो लावे उण ने पांच रिपिया इनाम।

लोगा रे तो धधो खुल गियो। सोरी कमाई। सूवा जीवता मरियोडा पकड लावे र निजर करे।

चौक में तेल रो कडाव उकळतो रैवे। इनाम देय वां सूवां ने तेल रा कडाव मे न्हाख दे। हजारा सूवा ने होम दीधा।

नगरी रा मिनख ही कैवे, "राजा रे व्हे कांई गियो है ? पैलां तो अस्यो धरमातमा हो, आ असी मत क्यूं व्हेगी जो पाप री पोट बांध रियो है।"

गांव रा मिनख कूकावे पण वारी सुणै नीं।

वठी ने सूवो राजा जीव वचावतो फिरतो फिरै। वो जाणे ओ हत्याकाड म्हारे पू छडै व्हेयरियो है।

एक मोटो रूखडो जिण माथै घणां ही सूवा बैठिया। सूवो राजा ही जाय उण पै बैठ गियो। नवा सूवा ने देख दूजा सूवा लड़वा लागिया।

सूवो राजा वोलियो, "आज री रात रातवासो म्हेन ही लेवा दो। परभाते म्हूं म्हारे गैले लागूंला।"

एक दानो सूवो वोलियो, "रैवण दो रे, आपां रो काई लैवे। आपा परै तो आगे हो वीजळो पड रियो है, तेल रा कडाव मे भून रिया है। फेर था क्यूं आपस मे लड लड ने मरो।"

सूवो राजा एक डाळा पै बैठ गियो।

इनाम रे लोभ में सूवा पकडणिया तो फिर ही रिया हा। सुवा रो झूड एक वागरिये देखियो तो घणो राजी व्हीयो, आं ने पकडलूं तो घणी कमाई व्हे जावे। वीं वागरिये रात ने आय रूख पै जाळ लगाय दीधो। सगळा सूवा जाळ में फस गिया। अवै सूवा घवराया। रात ने नीद किण ने आवे। मौत मू डागे ऊभी।

सूवो राजा बोलियो, "फस तो आपा गिया। एक उपाय म्हूं बतावूं, म्हारे कहणे चालो तो आपा बच जावा।

दूजा बोलिया, "थां कैवो जो ही करांला।"

सूवे राजा गिणिया, "आपा पूरा सौ सूवा हा।"

वागरियो परभाते आवेला, उण वेळा सगळा जणा मर गिया व्हे उण तरै व्हे जाजो। वो जाणेला के अै तो मर गिया, जाळ मे सूं काढ काढ ने नीचे फैकेला। जी सूवा ने सव सू पैला नीचे फैंके वो दडीका गिणतो रैवजो। ज्यूं ही सौ दडीका पूरा व्हे एकदम सगळा उड जाजो।

आ सल्ला सगळा जणा रे दाय आयगी।

दिन उग्गा वागरियो आयो। सूवा तो गावड ढळकाय दीधी। मरिया व्हे ज्यू पडिया। वागरिये देखियो अै तो डर रे मारिया ही मर गिया। इनाम तो आधो रैय गियो पण चोखो जो हाथे लागे जो ही। ऊपरे चढ ने एक एक सूवा ने काढ न नीचे फैंकवा लागियो। पैल परथम सूवो नीचे पडियो वो दडीका गिण रियो। निन्याणुं सूवा ने तो नीचे फैंकिया र वागरिया री कमर सू छूरी नीचे पडी वी रो दडीको वाजियो। सौ

दडीका पूरा व्हेता ही फररर करता सूवा उड गिया। सूवो राजा वागरिया रा हाथ मे रैं गियो। वागरिये वा सूवा नैं उडता देखिया तो रीस आई, "आछी आ सूवा म्हारे लारे चोट उतारी। खैर भाग मे लिखियो व्हे जो मिले। ईं सूवा ने ले जाय दस रिपिया तो लावू।"

सूवा राजा री आखिया सू आसू री धारा वैवण लागी। अवखी वेळा मे ही ज अकल री परीक्षा व्हे। आ सोच सूवे वागरिया ने कहियो,

"भाई, थू म्हने राजा कनैं ले जावेला तो थारे दस रिपिया हाथ आवेला। वोल म्हूं थनैं हजार रिपिया दिराय दूं तो ?"

"हजार देवाय दे तो चाहिजे ही काई ?" पण पडिया कठे है हजार थारे देवा ने।"

सूवो वोलियो, "थू म्हने छिपाय ले। पणघट पैं राणीजी री डावडी झमकू आवे जी ने म्हने देय दे, म्हूं थनैं हजार रिपया देवाय दू ला।"

वागरिये सोची, "भाग पे भरोसो राखा। कैं तो हजार आय जाय कैं हाथ रा ही दस परा जाय। पण ओ मिनख री वोली वोल रियो है अतरी वात कर रियो है तो भरोसो तो करा।"

रूमाल में छिपाय सूवा ने पणघट पैं ले गियो।

झमकू पाणी भरवा ने आई। झमकू ने एकात मे ले जाय रूमाल मेलायो, "आ चीज राणीसा रे निजर कर दीजो।"

सूवो माय ने सू बोलियो, "झमकू, म्हनें चतराई सू ले चाल।" वागरिया ने कहियो, "थू अठे ही वाट नाळजे। थारा रिपिया आवे।"

झमकू तो ले जाय सूवा ने राणी रे हाथ में दीधो। राणी ने देखता ही सूवा रे आखिया सूं चौसरा छूटिया।

"राणी, म्हने ओळखियो ?"

सूवो राणी साम्हो गुळक गुळक झाके। राणी री आखिया सूं ही चोधारा छूटगी।

राणी सूवा ने लँय छाती में छिपाय लीधो।

सूवो बोलियो, "पैला झमकू रे साथे हजार रिपिया भेजो।"

घडा में रिपिया घाल झमकू पणघट पं आई। आगे लुगाया पाणी भर री। वा तो अठी ने वटी ने फिरती वागरिया रे कनें जाती पल्लो अडाय दीधो।

गाळिया देवा लागी, "खोजगियो, म्हारे मेळें व्हेगियो। आखिया फूटगी थारी ? म्हारो तो वंवड्यो ही उतर गियो। थारो भीटियोटो घडो म्हारे परीडे कीकर मैलूं। ले ओ घडो थू ही राख वाळ। कुम्हार रे जाय दूजो घडो लावू।

मू वाळू झाळू करती रिपिया रो भरियोडो घडो वागरिया ने मेलाय वा कुम्हार रे घरे दूजो घडो लेवा ने गी।"

राणी पींजरो वणाय सूवा ने वैठायो, दाख, पिस्ता, मेवो चुगावे। दोई

जणां वैठिया वात करे। अवै पाछो राजा रा खोळ में किण तरै परवेस करे जीं री तरकीवा सोचे।

एक दिन राणी नाई राजा ने कैवायो, "म्हारो जीव नीं लागे, म्हारो मन लागे जस्यो उपाय करो।"

नाई राजा राजी व्हीयो, "अवै राणी आई गैले। मन लगावा री वातां कैवावा लागी है।"

पाछो कैवायो, "जो आप कैवो वीं रो ही इन्तजाम करूं।"

"वकरी रो एक वच्चो पाळलू तो म्हारो मन लाग जावे। छांट ने रूपाळो वच्चो मगाय दो।"

उण ही ज वगत एक आछो सो वच्चो राणी कनै भेज दीधो। वीं वच्चा ने राणी यू राखे जाणें वेटो व्हे। सोना रूपा री नेवरिया पैराय दीधी। म्हेला मे सव जगा फिरतो फिरै। घणा लाड वतावे।

एक दिन नाई राजा ने माय ने आवण री अरज कराई। नाई राजा ईण दिन ने तो उडीक रियो हो। माय ने आयो, जीमण ने वैठियो। राणी तो वकरी रा वच्चा ने खेलाय री, रमाय री, दाणो चुगाय री। अठी ने वठी ने नाई राजा री आख टोळाय वकरी रा वच्चा री घेंटी मरोड दीधी। वच्चो तो मर गियो। राणी तो रोवा लागगी। नाई राजा ही जाणियो ओ आछो विघन पडियो। नीठ नीठ तो राणी आज आपां ने वुलाया।

नाई राजा वोलियो, "क्यू अतरो रुदन कर रिया हो। एक नीं दस अस्या वकरा मगाय दू। आओ, वैठो राजी खुसी री वातां करा।"

राणी कहियो, "और कोई वात नीं। जिनावर है मर गियो पण म्हारा जीव मे एक ही अफसोस रै गियो। म्हूँ खुवाय री वो दाणो म्हारा हाथ में रै गियो। एक दाण जीवतो व्हेय ओ दाणो चुग ले। पछे मर जावे तो कोई वात नी।"

नाई राजा सोचियो, ई ने दो मिनट सारूं जीवाय दूं तो राणी पर म्हारो रोव जम जावेला।"

"राणी ईं ने जीवतो करण दाणो खुवाय दू तो था म्हारा केहणा में चालोला ?"

"एक दाण ई ने दाणो खुवाय दो तो आप कैवो जो करवाने राजी।"

नाई राजा तो झट मन्तर साध न आप रो जीव वकरा रा वच्चा में परवेस करवायो।

सूवा रा खोळ में राजा ही मन्तर साध न आप रा असली खोळा में परवेस कर गियो। नाई तो वकरो वण गियो। राजा पाछो राजा व्हेगियो। राजा उणी ज वगत वकरा रो मायो काट न अठे कोटवाळी चूतरा पे मेल दीयो।

"हुकम दीयो जो अ वे वो इण रा माथा पै दो जरवा री मारे।"

आ वात सुणाय पटेल वोलियो, "सुण रे नापटा, इण वास्ते थारा वाप रे अठे जरवा पड़े। वोल म्हारे लारे आगे चालै के पाछो फिरै।"

नाई वोलियो, "नी, वापजी, थारे लारे चाल रियो हूँ।"

अकल री पोसाक

एक राजा रे एक परधान हो वो घणो हुसियार। राज रा काम काज में परवीण। राजा परजा सगळा ही वीं सू राजी। ईसवर री इच्छा, थोडा दिन मांदा साजा व्हेय वे परधानजी मर गिया। सगळा ने घणो सोच व्हीयो पण नै जोरी वात। काई व्है। राजा देखियो, वांरो वेटो तो छोटो, दीवाणजी रा परवार मे एक भाई उण ने परधानगी देय दीधी।

अवै वो दीवांण व्हीयो। दीवांण व्हेतां ही वीरो माथो सूज गियो। अवै वो रोज कचेडी जावे जीरै पैला, पैला वाळा दीवांणजी री वहू रा घर रे आगे ऊभो व्हे, खँखारा कर, मू छ पै हाथ दे, कचेडी जावे। रोज बतावणो के थारी दीवाणगी म्हारे आयगी।

डोकरी रोज दीवांणजी ने यू करता देखे नै दुखी व्हे। रोटी पूरी खावे नीं। गळी गळी जावे। दो चार वरस व्हीया। डोकरी रो वेटो मोटो व्हीयो। वेटे देखियो, मां दूवळी व्हीयां जाय री है। हमेसा दुखी रे।

मां ने पूछियो, "मां, थारे वीमारी कांई है? गळी गळी क्यू जावे? रोग कांई दीखे नीं। चाल थनै वैदजी ने वताऊ।"

मां बोली, "बेटा म्हारी मादगी री दवा वेद कनै कोयनी। म्हारे रोग ही कांई ओर है।

बेटे घणो पूछियो जद मां कहियो, "काले सुवै देखजे। थनै म्हारो रोग बतावू ला।"

दीवाणजी तो रोज री नाई कचेडी जावा लागिया ने डोकरी रा घर रे आगै ऊभा व्हे ने खंखारो कर ने मू छ पै हाथ मेलियो।

मां बतायो, "बेटा, म्हारो रोग ओ है। थारा घर री परधानगी पाछी थारा कनै आवै जदी म्हारो रोग कटै।"

बेटो बाप री नाई चतर हो सब समझ गियो। वो ही दूजे दिन राजा रा दरीखाना में गियो। वठै कामदार, फोजदार, विद्वान, कवि, कळाकार आछा आछा समझणा मिनख बैठिया। ग्यान री, कविता री, साहित्त री, बातां व्हेय री, राजनीति री चर्चा चाल री। मौको देख ने बेटे हाथ जोड पूछियो,

"आप नामी नामी विद्वान सिरदार विराजिया हो। म्हने एक सका है, एक बात पूछणी चाहू। दुनिया रा मोटा मोटा काम मिनखरी अकल सू व्है, पारू कानी अकल अकल री चरचा सुणां हां पण आ अकल रैवे कठै?"

सारो दरीखानो चुप व्हे गियो। बिलकुल नवो सवाल हो। सोचण लागिया।

एक जणो बोलियो, "दीवांण साहब ई सवाल रो जुवाब दो।"

राजा ही झट बोलियो, "इण रो जुवाव दीवाणजी देवेला।"

दीवाणजी रा होस गुम व्हे गिया।

अरज कीधी, "काले सुवह जुवाव नजर करू ला।"

परधानजी घरै पधारिया। नाराज व्हेता थका डोकरी रे घरै गिया। जाय ने लागिया धाकलवा उण रा बेटा ने।

'थनै जरूरत काई हीं वठै जावा री? गियो तो अै सवाल क्यू पूछिया? म्हारा जीव ने तो दुख व्हेगियो।"

डोकरी रो बेटो बोलियो, "काकाजी इण में है काई, मामूली सी वात मामूली सो जुवाव।"

जुवाव कांई है बता?

'काकोजी अकल होठ पै रैवे। मिनख वात कीधी नीं के वीं री वात सूं पतो चाल जावै के ई में कतरीक अकल है।"

दूजे दिन दरीखाना मे जाय दीवाणजी घणी समझदारी जतावता बोलिया "अकल होठां पै रैवे।"

सारा ही विद्वाना दीवाणजी री तारीफ कीधी। अतराक में तो डोकरी रो बेटो ऊभो व्हेय ने पूछियो,

"म्हारी सका नीवारण व्ही। अबै अरज आ है के अकल रैवे तो होठा माथै है पण खावै काई है?"

सगळां री नजर परधानजी साम्ही फिरी।

परधानजी दूजै दिन सुवे इण रो जुवाब देवा री केय ने घरे गिया। जाय भतीजा ने धाकलवा लागिया,

"थू म्हारे पाछे क्यू पडियो है। आ परधानगी रैवा देवेला के नीं। जुवाब ठीक नी रीयो तो म्हारी कांई इज्जत रैवेला। राजा रो भरोसो काई ? कोई आछा जुवाब देवणिया ने परधानगी देय बैठे। खोडीला, थनै आ सूझी काई है।"

डोकरी रो बेटो बोलियो, "काकाजी नाराज क्यू व्हे रिया हो ? बात र वात रो नाम। अकल गम खावे।"

दीवाणजी राजी व्हे गियो। साची बात है। अकलवद ने घणी गम खावणी पडै।

दूजो दिन व्हीयो, दीवाणजी दरीखाना में जाय मुजरो काधो। बैठतां ही विद्वाना पूछियो,

"काल रा सवाल रो जुवाब ?"

दीवाणजी खागी पागडी ने और ही मरोडता बोलिया "बिलकुल मामूली वात। अकल तो गम खावे।

"वाह वाह !"

सारी सभा तारीफ करण लागी।

राजा राजी व्हे सिरोपाव बगसियो।

डोकरी रो बेटो झट उठ ने बोलियो, "ठीक है अकल होठ माथै रैवे, गम खावै, पर अकल पैरे कांई है ? उण री पोसाक काई है ?

सारी सभा में सरणाटो छाय गियो।

एक जणो बोलियो, "सवाल है तो कुजरवो पण दीवाणजी ईं रो ही जुवाब वस्यो ही माकूल देवेला।"

नीचो माथो घाल दीवाणजी कालै जुवाब देबारी कैय घरे जाय भतीजा ने केवा लागिया,

"बता भाई ई रो ही जुवाब बता। हाथां कीधा कामड़ा कीनै दीजै दोस।"

डोकरी रो बेटो बोलियो, "काकाजी चिंता मत करो। इण रो जुवाब म्हूं आपै ही देदूंला। था तो राजा रो बगसियोडो सिरोपाव म्हनै दे दो।"

काकाजी देवे नीं तो कांई करै ? सिरोपाव दे घरे गिया। दूजै दिन दरीखानो व्हीयो, दीवाणजी दरीखाना मे जाय बैठिया।

अतराक में तो डोकरी रो बेटो वोहीज राजा रो बगसियोडो सिरोपाव पैर न दरीखाना में आय ऊभो रियो।

दीवाणजी ने लोगां पूछियो, "हां वो काल रो जुवाब ? अकल पैरे कांई है।"

दीवाणजी उठीने बठीने झाके जतराक में तो डोकरी रो बेटो झट ऊभो

व्है न अरज कीधी ।

"राजा रा वगसियोडो सिरोपाव अकल पैरे । जद म्हूं ओ सिरोपाव पैरियो राज दरवार में ऊभो हूं ।"

राजा पूछियो, "वात कांई है ?"

डोकरी रे वेटो अरज कीधी, "वात जो है परधान जी ने पूछावै ।"

परधानजी धरती कुचरवा लाग गिया । डोकरी रे बेटे सारी हकीकत मांड ने अरज कीधी । राजा ही लड़का री अकल पै घणां राजी व्हीया के वाप लायक ही बेटो है । वीं ज वगत दीवाणजी सू परधानगी खोस डोकरी रा वेटा ने देय दीधी ।

डोकरी रो सारो रोग एक दिन में कट गियो ।

पलक दरियाव

पाटण सहर में अजैपाल नाम रो वैपारी रे। बड़ो धनेस्वरी। उण रे बेटो देवदास घणो सपूत, अकलवद। दुकान रो काम काज, नामो लेखो देवदास ही ज करे। उण रे लखमीनाथजी रो पूरो इस्ट। रोज दरसण कर पईसो चढ़ाय पछे भोजन करे। एक दिन दूकान पे जहाजां रो माल आयो। काम घणो जो दरसण करवा सारू जाय सकियो नीं। भूल गियो। घर सू जीमण रो बुलावो आयो। बाप बेटा गुमास्ता ने काम सूंप जीमण ने थाळी पे बैठिया।

देवदास ने याद आयो के आज तो दरसण करवा गियो नी। झट हाथ खैंच लीधो। थाळी छोड दरसण करवा ने उठियो।

बाप घणो ही कहियो, "काले एक पइसा री जगां दो पइसा चढ़ाय न दरसण कर लीजे।"

पण मानियो नीं।

सेठ बोलियो, "जा झट दरसण कर पाछो आय जा। आज आपां रे दूकान पे काम घणो है।"

"ओ अबारू आयो" कैय देवदास मिंदर गियो।

पहर दो दिन चढ़ गियो जो ठाकुरजी रे भोग री आरती कर कपाट जुड पुजारी घरे परो गियो ।

मन्दिर रा कपाट वन्द जो दरसण व्हीया नी, किंवाड री सळ में सू पईसो चढ़ाय देवदास तो रूदन करवा लागियो । "म्हारी गलती व्ही, मोडो आयो ।" विनती करे रूदन करे । अतरो घवरायो के पिराण घूटवा लागिया ।

लिछमीजी अरज कीधी, "भगवान, आप रो ओ भगत है । दरसण नीं व्हीया जो ओ घवराय रियो है । इण रा पिराण छूट जावेला । आप दरसण दो ।"

भगवान राजी व्हेय वोलिया, "देवदास, मांग म्हूँ थारी भगती पे राजी हूँ ।"

देवदास अरज कीधी, "भगवान जे आप राजी हो तो म्हने पलक दरियाव रो तमासो देखावो ।"

भगवान कहियो, "ई रो काई देखेला । कांई और मांग ।"

देवदास दण्डोत कर अरज कीधी, "भगवान म्हने तो पलक दरियाव रो ही ज तमासो दिखावो ।"

"तो देख ।"

देवदास रो तो वठै ही ज जीव निकळ गियो । उण रो जीव राजा कनकरय री मटराणी रा गरभ में पडियो । कवर जनमियो । नीठा नीठ

वेटो व्हीयो। हरख, उच्छव व्हीया। वधाया वटी, गुळ नाळेर वटिया। नाम विचित्र राखियो। कुवर मोटो व्हीयो। वीरभद्र राजा री वेटी इन्द्रकुवर रो नाळेर आयो। हरख कोड कर व्याव कीवो। वडी रगरळी व्ही। कवरजी ने सासरा में कई दिन राखिया। वठे गोखडा नीचे वैठा ढोली गाणो गाय रिया। कवरजी रे वारो गाणो घणो पसन्द आयो।

उणा ने वुलाय ने कहियो, "था म्हारे सायै चालो।"

ढोलिया अरज कीधी, "म्हा तो हाजर हा। पण राजा रा हुकम रे आधीन हा। उणा रो हुकम व्हे तो हाजर व्हे जावा।"

कुवर कहियो, "आछी वात। आज री गोठ मे था आछा गावजो। म्हूँ था ने राजा सूं माग लू ला।"

पाछलो पोहर व्हीयो। मजलस व्ही। अमल पाणी री मनवारा व्ही। कंवरजी री निजर वा ढोलिया माथे। ढोली जम ने गाय रिया। रवाव, सारंगी वजाय रिया। अस्यो ही वा रो कठ हो। अस्यो ही इलम हो। जीमवा रा पातिया पडिया।

कंवरजी कहियो, "आ गावा वाळा ने ऊपरे वुलावो।"

राजा छडीदार ने हुकम दीधो। वा ऊपर आय मुजरो कीधो। उणां रा गाणा री घणी तारीफ कीधी। डेरे जाती वगत कवरजी, राजाजी ने अरज कीधी।

"आ गावा वाळा ने म्हने वगसो।"

जवाई ने काई नटियो जावे ? वा ने कवरजी रे साथे रवाना कर दीधा। कवरजी वा रो रोज गाणो सुणे। हरदान, गोगदान जाजम रे छेड़े बैठिया कमायचो बजावो करे। कवरजी घणी मेरवानी राखे, घणी रीझ मौज देता रै। यू करता बरस चार बीतिया। कवरजी रे बेटो व्हीयो। घणी खुसी व्ही। कवरजी राजी व्हे हरदान गोगदान ने घणी रीझ कीधी। जिणमें एक मोतिया री कठी घणी कीमती।

हरदान बोलियो, "भाई गोगदान, दूजी वसता तो भावे ज्यू आपा घर मे राखला, पण आ कठी आपा सूं नी राखी जावे। कवरजी रे कोठार में रखवाय दां तो ठावी रेवे।"

ओ मतो कर वा कवरजी रे कठी नजर करी, "आपरे कोठार में इण ने रखायदो।"

"कवरजी कहियो, 'म्हू देवाळ हू लेवाळ नी। थारी कठी म्हू क्यू राखूं ?"

हरदान अरज कीधी, "म्हा कठै ई भाग पी पड रैवाला। कंठी गमाय देवाला। आप रा कोठार मे रखाय दिरावो तो जावता सू पडी रेवेला।"

कवरजी कठी लेय लीधी। आपरा ढोलिया रे पगातिये आळो हो जिण रे माय ने गुपत खड हो उण में कठी मेल दीधी। कवरजी सिवाय और कोई जाणे नी।

एकर सवालखी विणजारो वठे आयो। लारे तरह तरह रो सामान,

अनोखी वसता। वणजारे डेरो दीधो। दूजे दिन पालकी में वैठ राजाजी रे मुजरे आयो। नवी नवी अनोखी चीजा नजर कीधी, वावन-चन्दण रो झाड, मुंगिया रो झाड, हरड एक सवा सेर री, समरणी एकमुखी रुद्राछ री।

असी चीजा देख राजाजी, कंवरजी घणा राजी व्हीया। कवरजी रे अर वणजारा रा वेटा सुजाण रे घणो हेत वंध गियो। रोज साथे वैठे, चोपड पासा खेले। महिना चार वठे रैंय वणजारो जावा लागियो। सुजाण कवरजी ने एक कलगी हेमाऊ जिनावर रा पाखा री नजर कीधी। सख जीमणी भुजा रो नजर कीधो। कवरजी या दोई अमोलक वसतां ने लेय ढोलिया रा आळा रा गुपत स्थान में राख दीधी। वे ही ज जाणे के ये चीजां कठै पडी है और कोई दूजो जाणे नी।

जाती वेळा सुजाण ने घणे मान पाछा फिरता लगा वठे आवा ने कहियो।

सुजाण आप रा पोठिया लदाय चालियो।

अठे कवरजी राज रो सारो काम काज देखे। राजा कनकरथ तो गोखां वैठा जोखां करे। पोता ने खेलावे राजा राज प्रजा चैन। कवरजी सूं सब राजी। एक दिन कंवरजी तळाव पधारिया, गोठ कराई। सारो साथ लारै। मिठाई वट री, अमल पाणी व्हेयरिया। कंवरजी साथिया रे साथे तळाव में सिनान करण ने उतरिया। सिनान करता चुमकी मारी जो पाछा निकळिया नीं। घणी देर व्ही। सगळा ने सोच व्हीयो। तैरू पाणी मे उतरिया। घणा हेरिया लाधा नी। कंवरजी री अत

देही ऊपरे तिर न आई। सब जणा देखण लागा। देखे तो देही निरजीव।

सारा जणा रोवण कूकण लागा। राजा खबर सुणी तो मुरछागत व्हे गियो। सरीर पसीनो पसीनो व्हे गियो। पोता ने उठाय लोगा राजाजी री छाती रे लगायो। नाक भींच सावचेत कीधा। राणी, कवराणी अन्न पाणी छोड दीधो। सरीर री बुरी हालत व्हेगी।

वा ने ही मिनखा समझाया, "राजा विरध है, कवरजी री या गत व्ही। इण बाळक रो कुण धणी ? राज बाळक रे पगा हेठे राखणो है तो आपने विराजणो है। धरम पुन्न करो। बाळक ने मोटो करो।"

समझाय बुझाय राणी कवराणी रो हठ छुडायो। हरदास गोगदास बारा दिन तो मसाणा मे गावता रिया। तेरवें दिन वा तो माथा मे राख घाल लीधी। साधु व्हे गिया।

अठी ने तो कंवरजी रो जीव निकळियो। वठी ने लखमीनाथजी रा मिंदर में देवदास री खोळ पडी जी में जाय पाछो जीव पडियो। देवदास तो उठ बैठो व्हीयो। मिंदर मे सूं आवाज आई—

"पलक दरियाव रो तमासो देखियो ?"

"देखियो महाराज।"

"आ वात किण ने ही केवजे मत, कहता ई थारी देह छूट जावेला।"

देवदास प्रणाम कर घरे आयो। आगे मां जीमण लिया बैठी ही।

सेठ वोलियो, "सावास वेटा, भलो वेगो आयो। घडी दो लगाय दीधी। आज हाट पे काम है, थू मोडो कर रियो है।"

"ताळ तो काई लगाई नी। आवण जावण ही ज कीधो।"

जीम चूंट, वाप वेटा दुकान पै गिया। नामो ठामो कीधो। वाजार रो लेखो जोखो, लेणो देणो सगळो काम देवदास ही करे।

हरदान गोगदान साधु व्हेगिया जो तीरथा निकळिया।

केदारनाथ, वदरीनाथ, अजोध्या, कासी दरसण कीधा। मकर रो सिनान कर, द्वारका दरसण करवा चालिया। गेला मे पाटण सहर पडियो। परभाते भीख मागवा ने वजार मे आया। फिरता फिरता देवदास री हाट पै आया। वठे देवीदास वैठो काम कर रियो हो। हरदान री नजर पडी।

हरदान वोलियो, "गोगदान, देख तो सरी, सागे कवरजी व्हे जस्यो ओ आदमी हाट पै वैठियो जो है।"

गोगदान आख गडाय ने वोलियो, "हा, अे तो सागी कवरजी है। वारो सरीर तो आपा आपणा हाथा सू फूकियो। पण उणियारो तो सागे साग कंवरजी रो। काई ज फरक नी।"

आखियां फाड फाड दोई जणा देखवा लागिया। आधा पाछा व्हीया। वोलवा री मसा करे।

अतराक मे तो देवदास वोलियो, "ऊभा क्यू हो? जावो, आगे जावो, मागो।"

बोली सुणता ही हरदान कहियो, "आ तो कवरजी री सागे बोली है।"

कनें खसक नजदीक आया। देवदास फेर बोलियो,

"काई देखो हो ? चावे जो लो।'

हरदान कहियो, "भाई, अे तो कवरजी, जींमें हार न फेर। मुजरो करा। म्हूं तो बतळाया बिना रैवू नी।"

हरदान तो भडे जाय दूवो बोलियो,

विचित्र कवर बखाणजे, चार वरण दिस चार।
सूरज दूजो कनक सुत, दीपे जग दातार॥

देवदास ही दूवो सुण सैंधी बोली सुण चमकियो।

पूछियो, "अतीता, ओ दूवो किण रो बणायोडो है।"

"म्हारो पिरथीनाथ, म्हाने ओळखिया के नीं। हरदान गोगदान।"

आ सुणता ही देवदास उणा ने ध्यान सू देखिया। सकल तो विगड री पण नाक री टीसी सू ओळखिया। ओळखतां ही मूडा सू निकळगी, "आ काई सकल व्हेगी था री ?"

हरदान, गोगदान तो पगा ने काठा पकड लीधा। रोवा लाग गिया।

"महाराजकवार, जारा घणी छोट जावे वा रो ओ ही ज हवाल व्हे।'

देवदास रिपियो एक वा रा हाथ पैं मेलियो, "जावो जीम ने पाछा आवजो वाता करांला। छाना रैवजो। सुभराज दीजो मत। राम राम करजो।

कोई ओळखे नीं ज्यू ।"

उणां ने सीख दीधी । आप हाट रो काम करण लागियो । साझ पडी, बहीडा सभाळिया । कोथळो गुमास्ता रे हाथ दीधो । हाट रे ताळो लगाय, घरे चालियो । हरदान आय जै श्री राम कहियो । आप राम राम कैय वा ने साथै लीधा । वा ने तो घर रे वारणे वैठाया । आप माय ने जाय जीमियो । सेठ ने कहियो,

"आज म्हारे डील में आळस है जो नोहरे जाय तेल मसळावू ।"

आ कैय नोहरे आयो । गाय भैंस वहल्या रो चारो वाटो देख, चाकरां ने कहियो, "माचो ऊपर ढाळो ।"

माचा पै आप वैठ गियो । हरदान गोगदान नीचे वैठ गिया । उणां ने सारी वाता पूछी । वा सारी हकीगत कही ।

देवदास राजी व्हेय पूछियो, 'म्हारा विना सगळा ही वठे अतरा दुखी व्हेयरिया है ? थारी कठी म्हारे कने पडी है जो परी लीजो । ढोलिया रे पगातिया आळो है जिण मे एक गुपत स्थान है । उण मे कंठी पडी है जो था री था लीजो । सवा सेर री हरड पडी है जी ने कारखाना में मेलजो । रूद्राक्ष री माळा है जो म्हारे वेटा ने दीजो । पण म्हारो नाम लीजो मत ।"

"आप रो नाम लीधां विना म्हा मागा किण तरै ?"

"थां केय दीजो तीरथा मे म्हाने साधु मता कहियो के फलाणी जगा हेरो तो थांने थे वसता लाधेला ।"

हरदान गोगदान वोलिया, "असी वात तो म्हा कैवा नी। म्हा तो परयख आप रा दरसण दीधा है जो जाय सारी सारी साची साची वाता अरज कराला। आप ही पधारो वठे। आप विना सारो राज दुखी है। अठे वाणिया रे घरे क्यू रेवो ? अठे एक घर में उजाळो है, वठे पधारिया सारा मुलक में उजाळो व्हे। सारो लोक आपने विसूर रियो है। वठे तो आपरो ही ज आधार है। आप पधारो तो वठे सूरज उगे।"

गोगदान हरदान असी घणी वाता केय देवदास ने परचायो पण देवदास आ ही ज कही, "था जाय म्हारो नाम लीजो मत। आ यू ही ज व्हेवणी ही जो व्ही।"

वे दोई जणा वोलिया, "म्हा तो जो वात देखी, वा कैवाला।"

वे मुजरो कर देस चालिया। देवदास खरचा रा रिपिया दीधा।

हरदान गोगदान तो भागिया जावे जाणे वा रे पाखंडा आय गिया व्हे। परभात रो पोहर। राजा कनकरथ दरीखाने वैटिया। पोतो गोद में खेल रियो।

वणजारो सुजाण ही घिरतो वठे आयो। कवर रा अस्या समाचार सुण घणो दुखी व्हीयो। राजा रे दरीखाने जाय, अफसोस जाहिर कर रियो हो। अतराक मे तो गोगदान हरदान आय मुजरो कीधो।

"परथीनाथ, वधाई वगसो। कवर सा लाघ गिया। वा रा दरसण कर न आया हा।"

राजा गळगळा व्हेय वोलिया, "अं वापडा कवरजी री याद कर कर गैला

व्हेगिया है। वा रा मेरवानी रा खास चाकर हा। इणां ने पेटिया दिरावो। दिलासा करावो।"

गोगदान हरदान वोलिया, "महाराज म्हा गैला कोयनी। साची देखी जो अरज कर रिया हां। कवरजी रा समाचार अर सहनाण लाया हा।"

परधान अरज कीधी, "अे वोले तो सावचेत है। देखा ऊचा वुलाय ने पूछा तो सरी।"

ऊचा वुलाय ने पूछियो।

वे केवण लागिया पाटण सहर मे अजैपाल सेठ रे घरे कवरजी है। हाटा में वैठा नामो कर रिया हा। म्हा जाय उणा ने वतळाया। पछे वा ही म्हाने वतळाया। नोहरा मे ले जाय एकात मे म्हा सू अठा रा सारा वरतात पूछिया। फरमाई, ढोलिया रा आळा रा गुपत स्थान मे था री कठी, सवा सेर री हरड, एकमुखी रूद्राक्ष री माळा पडी है। आळा री कूचिया मोवन सेजवरदार कने है।

मोवन ऊभो हो। उण कहियो, "कूचिया तो म्हारे कनें है। वो म्हेल तो जी दिन जडियो जठा पछे खोलियो ही नी। ताळो खोल देखा।"

ताळो खोलियो। सारी वसता वताई जठे लाधी। राजा घणा राजी व्हीया। उणा री कठी उणा ने दीधी।

राणी अरज कीधी, गुळ वटावो। नोवतखानो सरू करावे।

परधान हाथ जोड अरज कीधी, "यू हाको करिया ठीक नी। आपा

आपा रा हाथा सू सब कारज कीधा है। आं री वात एकदम मानणी में नी आवे। सहनाण सब सांचा निकळिया पण पैला आछी तरै चौकस कर लेणी चावे। चार ठावा मिनखा ने भेज पक्की ठा करायलां।"

सुजाण वणजारे कहियो, "सेठ ने आदमी आयां री खबर पड जावेला तो कवरजी ने परदेस भेज देवेला। पछे काई वटेला नीं। अ तो असी वातां है के आपने ही ज पधारणो चावे।"

राजा सुजाण ने साथै लेय पाटण जावा री त्यारी कीधी।

राणी कहियो, "म्हने ही साथे ले चालो।"

कवराणी कहियो, "म्हूं ही चालू।"

सगळा खटाळा ने लेय द्वारकानाथ रा दरसणां रो नाम लैय राजा पाटण चालिया। पाटण सहर रे बारे एक मोटो बाग। वठे आय डेरा दीधा। हरदान गोगदान ने भेजिया खबर लावा ने।

हरदान कहियो, "हाजिर, म्हा तो जावा। पण म्हा के साथै दोय मातवर आदमी भेजावो जो वे उणा री आखिया सू देखी वात आय ने अरज करे।"

कामदार वेणीदास अर चन्दण चोपदार ने फरमायो, "कमरां खोल लारे जावो।"

हाट रे वारणे आय अे ऊभा रिया। देवदास ने देखता पाण चन्दण चोपदार वोलियो, "अे ती सागे है।"

हाट रे कनै जाय ऊभा रिया। देवदास साम्हो झाकियो। आं मुजरो कीधो।

सेठ पूछियो, "था कुण हो ?"

देवदास झट पूछियो, "काई लेस्यो ?"

"दात, कपडो लेवणो है सेठ पूछियो ?"

वां हूँकारो भरियो।

सेठ देवदास ने कहियो, "जावो, पेली हाट ले जाय सामान बतावो। हुडी रा रिपिया पण लेता आवजो।"

देवदास दूसरी हाट मे आयो। साथे ही अे चारू जणा ही आया। हाट मे जाय देवदास मुळकियो,

"वेणीदास ने साथे क्यू लाया ?"

आं जमी रे हाथ लगाय, मुजरो कर पगां में माथो दीधो। देवदास उठाय छाती रे लगाया।

"हरदान, थनै अतरो वरजियो पण मानियो नी।"

"असी खुसी री वात सुणिया पछे आया विना रैवणी थोडो ही आवे। म्हा काई आवा। राजा, राणी कवरराणी सगळा आया है ?"

'हूं ? कठे ?"

'बाग में। आप सू मिलण ने आगता व्हेय रिया है।"

'आछी नीं कीधी। वे विचार री वात कर गिया।"

"आप पधारो। विना पाणी री माछली ज्यू वे तलफ रिया है।"

"अवार था जावो। म्हारो मुजरो अरज करजो। घडी दो रात गया म्हूँ हाजर होवू ला। था छाना माना रीजो कठै ही चरचा मत करजो।"

उणा ने सीख दे देवीदास हाट पे जाय बैठियो। अवे चिंता करे, लखमीनाथजी ने सुमरे। अबे काई व्हेला। साझ पडी घरे जाय वहू सू कहियो,

"हाट रो काम आखो दिन कीधो। पण लेखो घणो वाकी रै गियो। आज काल वेळा नी। काम घणो चढ गियो। पाच सात दिन रात ने बैठ ने लेखो पूरो करू ला। ऊपरला आळा मे लाल गत्ता री वही पडी जो उतार दो। दूकान पै बैठ काम करू ला।"

वहू वही उतार दीधी।

"जावतो राखजो" आ कैय खिडकी रे गैले व्हेय वाग रो मारग पकडियो।

आगे वाट देख ही रिया हा। दूरा सू नजर पडी। चन्दण चोवदार दौड न वधाई दीधी, "पधार रिया है।"

सारो साथ दरवाजा पै आय ऊभो रियो।

खमां खमा व्हैवा लागी। सुजाण सू वाथ घाल मिलियो। राजा साम्हो आयो। वाप रा पगा मे माथो दीधो। राजा उठाय छाती रे

लगायो। दोई गदगद कठ व्हेय रिया। वोलणी नी आवे। छाती भरगी। राजा रूमाल सू आखिया पूछी। राजा मोहरा मगाय रूमाल में वाध निछरावळ कीधी। सुजाण सरपेच वाधियो। सगळं साथ निछरावळ कीधी।

देवदास कहियो, "अं निछरावळा हरदान ने दिरावो।"

जनाना में मा सू मिलण ने गिया। मा वेटा ने छाती सू लगायो। मू डा पे हाथ फेरियो। मा वेटा रा सरीर हरख री वरखा सू भीज गिया। जीमाया चू टाया। वातचीत वतळावण कीधी। कवराणी सू मिलिया। राग रंग व्हीया, हंसिया, खेलिया, पोढ़िया। झाझरके वेगा ऊठ आपरे घरे आय गियो।

दूजे दिन देवदास सांझ पडवा देय, वहू सू वही माग टळकियो। यू करता पांच सात दिन व्हेगिया। वहू ने वैम पडियो। वीं डावडी हरमाळा ने कहियो.

"आज थू छाने लारे जाय देखजे कंवरजी कठे जावे। हरमाळा लारं लारं गी। कंवरजी ने वाग मे जाता देख वा वडळा माथे चढगी। सारा रग देखिया। दिन ऊगा आंय हरमाळा सारी हकीगत सुणाई।

वहू कहियो, "मानूं नी। सुगाई तो दूजी व्हे सके पण मा वाप ही कठं ही दूजा व्हे।"

हरमाळा ने खरायन पूछियो।

हरमाळा वोली, "नी मानो तो था आप जाय देखलो। उत्तरादे पासे

एक मोटो वडळो है वीं रो एक डाळो वाग कानी झुकियोडो है। वी पे चढ देखजो सव कुछ दीख जावेला।"

"अवार थू जाय ने देख आव, डेरा डाडा है के नी। कै कोई भूत प्रेत री माया तो नी जो रात ने ही ज व्हे।"

हरमाळा पाणी रो घडो ले गी। जाय फिर फाद ने सव देख आई।

"वाईजी, भूत प्रेत तो नीं। है तो मानवी रो डेरो। घोडा है, रथ है, पालकी है छडीदार चोवदार है कठा रो ही राजा दीखे है।"

देवदास री वहू वात मन में राखी। कांई पतो छोरी री जात है। आखिया नी देखलू जतरे कीने ही नी केवू।

देवदास साझ रो घरे आय, वहीडो लेय वारे निकळियो लारे री लारे वहू गहणो कपडो खोल सादा कपडा पहर चाली। सदामद री नाई लोग साम्हा आय देवदास सू मुजरा कीधा। वहू वडळा पे चढ डाळा माथे वैठ तमासो देखे। कवर आप रे डेरा मे गियो, कवराणी साम्ही आय मुजरो कीधी। कवराणी रा हाथ ऊपर हाथ दे माय ने गियो। देवदास तो पौढ रहियो। वहू आ लीला देख विव्हळ व्हेगी। नीचे उतर घरे गी। सूती पण नीद आवे नी। दिन ऊगता ही सासू ने जाय कहियो। सासू सेठ ने कही। सेठ ने अचभो आयो। वहू ने खराय ने पूछी। वहू वोली,

"वापजी, एक रात नी आज नौ राती पूरी व्हेगी है। आप सूं जतन व्है तो करो, नी तो वेटो हाथा सू वारे परो जावेला।"

सेठ बोलियो, "आज म्हूं जाय म्हारी आखिया सू देखू ला। थां आंख रे उणियारे ही देवदास ने इण री खबर मत पडवा दीजो।"

रात पडी देवदास बाग में गियो। सेठ बड्ळा माथे चढ देखवा लागियो। देवदास राजा रे मुजरो कर गादी रा कूणा पै बैठियो। हाली नवाली सगळा आय मुजरो कर बैठिया। सुजाण आयो। जीरो हाथ पकड कनै बैठायो। सुजाण बोलियो,

'अबै घणा दिन व्हे गिया। राजा ताकिद करा रिया है। घरे पधारो। लारे काम बिगड रियो है।"

राजा बोलियो, "बेटा, अस्यो अठे कांई काम है। सुजाण री बाळद ही बठे पडी है। खरचो लागे। नेट तो बैपारी है। माल खराब व्हे। दूजा लोग ही संग उतावळा व्हेय रिया है।"

देवदास धीरे सू बोलियो, "हा महाराज, चालू ला।"

मा सूं मुजरो करवाने गियो जठे मा ही घरे चालवा री ताकिद कीधी।

कंवराणी कने गियो। कवराणी जावा री घणी आगत कीधी। सेठ आ वाता ने आपरे काना सू सुणी। मन मे कहियो, जो बेटो आज कुसळां घरे आय जावे तो घर बारे निकळवा दू नी। फेर सोचे के नीचे उतर पकड हाथ बेटा ने घरे ले जावू। पण अे तो घणा जणा म्हू अकेलो। म्हनें मार बेटा ने पकड ले जावेला। आ रो काई रागड ठैरिया। आपणे तो बणिया बुद्धि ही बरतणी। कुसळे घरे आवा दो।

बड़ळा नीचे उतर घरे आयो। सेठ रा पग आगे पडे नी। रात ने नीद

कठे ? चटापटी लागरी। दिन उगे देवदास सिनान कर लखमीनाथजी रे मिंदर दरसण करवा ने गियो तो सेठ ही लारे गियो। हाट रे माय देवदास ने वैठायो। आप वारे वैठियो नामो माडे।

वठी ने राजा सोची, 'कवर रोज आज काले आज काले करे पण चाले नी। आपा चाला जो उण ने लेय आवा। ओ मतो कर घोडे सवार व्हे साथे पाच दस आदमिया ने लेय हाट पै आयो।

देवदास ने कहियो, "वेटा घरे चालो। कूच री त्यारी कराय ने आयो हूँ।"

आ सुणतां ही सेठ बोलियो, "रे, थू बाप किरो ? कुण ने बेटो कैवे ?"

"सेठा, पराया वेटा थारा कने रैवे नी। चार दिन म्हा सू रूसाय था कनै आय गियो तो काई व्हीयो ? था भला मिनख हो चार दिन था कने राखियो। आछी कीधी। मायत तो आपरा वेटा ने ले ही जावेला। घणी करो तो थारी खाध ले लो।"

"वावळा व्हीया हो। वेटो म्हारो है, म्हारी लुगाई रा पेट सू जग्योडा। जात जाणे, राज जाणे, सहर जाणे। इण री सगाई कीवी है, परणायो है। छोटा सू मोटो म्हारा घर मे व्हीयो है। थू कैवे थारो वेटो रूसायन आयो है।"

"म्हारे राज पै इण जनम लीधो है। इण री धाय, वडारण, रमावण वाळी छोरिया सव हाजर है। सारो मुलक जाणे म्हारो वेटो है। लाख लोग जाणे उणा रो ओ घणी है।"

यू कैय राजा देवदास रो हाथ पकड़ियो, "चाल बेटा, उठ।"

सेठ तो चौवटा मे ऊभो रैय कूकायो, "म्हारा बेटा ने खोस ले जावे। पकडो, पकडो।"

सारो बजार भेळो व्हेगियो। कोटवाळ आय गियो। राजा रा मिनख बजार मे फिर रिया हा वै ही सैंग भेळा व्हेगिया।

सेठ रो बेटो देवदास है आ तो सब ही जाणे। बजार रा महाजन बोलिया, ओ तो बेटो सेठ रो। नाना सू मोटो अठे म्हारे मू डागे व्हीयो।"

राजा बोलियो, "था रो सहर है। था क्यूं नी कैवोला। चालो म्हारे सहर छतीसू जात ओळखे के नी? कवर ने ही ज पूछो के ओ बेटो किण रो है।"

कोटवाळ पूछियो, "बेटो आ रो है काई थू ?"

"हा, आ रो ही बेटो हूँ।"

आ सुणता ही सेठ चरडियो, "अरे कपूत, थू म्हारो बेटो है के नीं ?"

"हा थारो ही हूँ।"

कोटवाळ धाकलियो, "थू विचळाय काई रियो है। भाग पी राखी है के बावळो व्हेगियो ?"

"नीं तो भाग पी राखी है नी बावळो व्हीयो हूँ। ओ दोई म्हारा बाप है।"

आ सुण कोटवाळ, पच, साहूकार सब हसिया, "ओ चोखो तमासो है।"

कोटवाळ जाय वठा रा राजा ने सारी हकीकत कही। राजा ब्रहदभाण पूछियो, "रजपूत कठा रो है ? कुण जात है ?"

"आ तो म्हैं पूछी नी। पण है असराफ। दीखत में राजारासी दीखे।"

जतराक मे तो अे झगडता डोढी माथे आय ही गिया।

दरबारी आय पूछियो, "कुण हो ? कठा रा हो ? काई जात है ?"

कनकरथ कहियो, "आ पूछ न काई करणो ? रजपूत हूँ, परदेसी हूँ।"

"था झागड़ू हो जिण रो न्याव तो व्हेला ही। पण म्हूँ हवलदार हूँ। था रो, नाम गांम तो जाणवो चावू के नी ?"

"म्हारो नाम कनकरथ है, बन्धुगढ़ रैवू।"

हवलदार वोलियो, "कनकरथ तो बन्धुगढ रा राजा रो नाम है। था रे अठे उमराव रो अर राजा रो एक ही नाम व्हे काई ?"

वीचे ही चन्दण चोवदार वोलियो, "हवलदारजी आप तो दरबार मे रैवो, राज सेवग हो, अनरी खवर नी पडे ? अे बन्धुगढ रा राजा कनकरथ है।"

आ सुण पाटण रो राजा ब्रहदभाण उठ साम्हो आयो। कनकरथ घोडा सूं उतर मिलियो। ऊपरे आया। गादी ऊपरे कनकरथ रो हाथ पकड राजा वैठावा लागिया।

कनकरथ बोलियो, "आप तखत बिराजो। म्हूँ तो फरियादी हूँ। तखत साम्हो ऊभो हूँ। आप म्हारो न्याव करो।"

कनकरथ नीचे ऊभो रियो। राजा तखत पै बैठिया। दोई जणां देवदास मे आपरो बेटो बतावे।

देवदास ने पूछियो, "थूं बता किण रो बेटो है ?"

"दोई जणा म्हारा बाप है। इण मे झूठ नी।"

राजा ब्रह्दभाण विचार में पड गियो। कनकरथ ने एकांत में ले जाय पूछियो, "म्हाराज, साची बताओ।"

"साच काई कँवू। म्हारे राणी रा पेट सूं जायोडो, म्हारी एकाएक सतान है। सहरपुर रा राजा री कंवरी सूं इण रो ब्याव कीधो है। तळाव मे डूब गियो। पाछो निकळियो नी। अठे हाट पे बैठो लाधो। इण पाछली एक एक वात बताई है।"

कनकरथ खानापूर हकीगत सुणई। राणा ने घणो अचरज ह्वीयो।

सेठ ने पूछियो तो उण कहियो, "महाराज, घर सूं बारे एक दिन म्हें इण ने काढियो नी। कदै ही म्हारो कथन इण लोपियो नी। आखी उमर मे ही एक दिन म्हारो कथन लोप दो घडी सारूं लखमीनाथजी रा मिंदर में गियो। इण रे सिवाय म्हा सू कदी भी दूरो रियो नी।"

देवदास ने पूछियो तो वी कहियो, "महाराज अे दोई जणा साची केय रिया है। रत्ती मात्र झूठ नीं।"

राजा ब्रहदभाण सारा ने ही ऊंचा नीचा लीधा पण बात वा री वा।

राजा कहियो, "इण रो निरणै म्हारा सू नीं व्हे। देवदास ओ निरणै थू ही ज कर सके। थनै लखमीनाथजी री आण है, साच साँच बता।"

"महाराज, म्हनें लखमीनाथजी री आंण मत दिरावो।"

"तो थूं साच क्यू नी कै ?"

"महाराज, साच कहिया म्हूँ मर जावू ला। राजा अर सेठ दोई दुखी व्हेला।"

"जो थारी देही छूट जावेला तो म्हूँ ही म्हारी देही छोड दू ला।" यूं कैय राजा सकळप घालियो।

राजा सकळप घालियो तो कनकरथ ही सकळप घालियो, सेठ ही घालियो। यू करता पाच सौ आदमिया देवदास रे लारे देही छोडवा रो सकळप घालियो।

देवदास कहियो, "तो गगाजी रे तीरे पधारो। वठे ही देही छोडांला।"

पाछलो परवध कर राजा आ सगळा ने साथे ले गगाजी रे तीरे आया।

देवदास सिनान कर ठाकुरजी रो उतारू चन्दण लगाय, तुळसीदळ मेल, चरणामत लैय, विणती कीधी।

"हे भगवान ! थारी आ ही ज इच्छा है तो आ ही सही।"

अरदास भगवान रे कने बैठियोडा लछमीजी सुणी।

लछमीजी अरज कीधी, "भगवान ओ तो अन्याव है। पाच सौ प्राणी इण रे लारे मरवा ने सकळप भन्यो है। सकळप भरता अे केय रिया है आ देही श्री ठाकुरजी रे निमित है। आ रो प्रायच्छित आप ने ही लागसी। आप हमेसा कैवो म्हनें साच प्यारो है। अबै दोई वाप साच वास्ते मरेला। अबै साच प्यारो आपने कठा सू रहियो ? आप तो आप रा वचना ने आप ही झूठा कर रिया हो ?"

भगवान वोलिया, "लछमीजी, साच तो म्हनें हमेशा ही प्यारो रैवेला। देख लीजो था।"

देवदास दोई वापा रा पगा रे हाथ लगाय, ठाकुरजी रो ध्यान लगाय, पलक दरियाव रा तमासा रो सारो वरतात कहियो। वरतात पूरो व्हेता ही ऊपरे सूं सुदरसण चक्र पडियो जो देवदास रा दो पिंड व्हे गिया। दोई एक सरीखा। एक पिंड सेठ कनें जाय ऊभो व्हे गियो। दूजो पिंड कनकरय कनें।

दोई आप आप रा वेटा ने ले घरे आया।

खापरियो चोर

उज्जेण नगरी में राजा वीर विक्रमादित राज करे। वठे ही ज एक खापरियो नाम रो चोर रेवै। वो चोर कळा मे उस्ताद। राजा राजीना रात ने भेस बदल ने गस्त देवा ने निकळिया करतो। परजा रा पूरी निगाह राखतो।

एक समै री वात के उज्जेण नगरी में एक लाखी वणजारो आय डेरो दीधो। उण रे लारे लाख पोठी लदती। उजैण में डेरा देवण लागिया जद लारे सुगणी हा उणा वणजारा ने मना कीधो।

"आज सुगण माठा है। अठे डेरो नी देणो। सुगण अस्या व्हे रिया है के चोरी व्हेला।"

वणजारो वोलियो, "साझ पड री है आगे कठे जावाला। उज्जेण जसी नगरी है अठे वैपार कराला। पोठिया रो माल काढाला नवो माल भराला। सुगण माठा है तो पैरा रो जापतो आछो राखाल।"

आ कैय वणजारो क्षपरा नदी रे किनारे डेरो दीधो। पोठिया रा सात परकोटा चुणाया। सातवा परकोटा रे माय ने ढोलियो विछाय ढोलिया रे नीचे रतना री पेटी मेली। चारू आढी ने परकोटा रे वारे आदमियां रो पैरो लगाय दीधो। पैरा वाळा ने सावचेत रैवण रो कहियो के

सारी रात उजाळो राखजो। डोढो पैरो देवता रीजो। ओ जावतो कर वणजारो तो नचीतो व्हे गियो।

वठी ने घडी दो रात गिया राजा वीर विक्रमादित भेस वदल ने गस्त देवा ने निकळिया। गैला में खापरियो चोर मिलिदो।

राजा पूछी, "कठी ने जावे ?"

खापरियो वोलियो, "चोरी करवा ने।"

राजा कहियो, "म्हने ही माथे ले ले। म्हूं ही चोरी करू ला।"

खापरिये कहियो, "आछी वात है व्हेजा लारे।"

दोई जणा चोरी करवा निकळिया। आगे एक मोटा सेठ री हवेली में वळिया। उण ही ज दिन सेठ देसावर सूं कमाई कर ने घरे आयो हो। सेठ सेठाणी दोई गाढ़ी नींद मे सोय रिया। सोवती वखत सेठाणी गेणो खोल थाळी में मेल दीधो जो सिराणे पडियो। हीरा मोती दम दम कर रिया। खापरियो तो झट जावता ही गेणा री गाठडी वाधी। गाठडी ले न पाछो फिरियो तो उण री निजर तासळी पे पडी उण मे वाळण काकडी रा गट्टा काटियोडा पडिया। खापरिये दो गट्टा उठाय ने मू डा में न्हाकिया। न्हाकता ही 'गजव व्हो' उण रे मू डा वारे निकळियो। वो तो पाछो फिरता ही गेणा री गाठडी थाळी में मेल रवाना व्हेगियो।

राजा पूछियो, "अरे गेणा ने छोडिया क्यू।"

म्हने ओसाण नी री। इण रो लूण पेट मे पड गियो। अबै ओ घरम नी के इण रे चोरी करा।"

"बेटी रा बाप, क्यू हाथे आयो माल छोड रियो है।"

"चोर चोरी करे पण लूण हरामी नी करे। सहर मे घणा ही घर है, घणा ही गँणा है। चाल ओर जगा चाल ने चोरी करा। आज लाखी वणजारे डेरो दीधो है उण रे चोरी करवा चाला।"

वठे गिया तो आगे जगा जगा धूणिया वळ री, उणा रो उजाळो व्हे रियो। पँरा वाळा तरवारा लीधा 'मार मार खवरदार' कर पँरो देय रिया।

खापरियो राजा ने कियो, "थू अठे ठहर म्हूँ माय ने जाऊ।"

खापरियो भट कुत्ता री खाल ओढ कुत्तो वण गियो। चारू ही हाथा पगा सू चालतो अठी ने वठी ने सूगतो माय ने वळियो। वणजारा रे साथ वाळा-रोटिया वणाई। कोई जीम चूट रिया। कोई खाय पीय पातळा फँक दीधी। हाडा वरतन भरिया पडिया। कुत्ते इण दाळ री हाडी मे मूडो घालियो, वी पातळ मे मूडो दीधो। अठी ने घुतकारियो तो वठी ने गियो। वाटी रा टुकडा मूडा मे लेतो हाडी मे मूडो घालतो चलियो जावे। एक जणे उठाय मारी भाटा री। खापरियो भट कुत्ता री नाई भूमतो, भाग ने परकोटा मे वळ गियो। पँरा वाळा घुर घुर करन रै गिया। आगे पोठिया सू चुणियोडा परकोटा माय ने वणजारो गँरी नीद में सोय रियो। घन माल री पेटी ढोलिया नीचे

पडी। ढोलिया रा पागा रे कुत्तो वधियो। कुत्ता ने देखता ही वणजारा रो कुत्तो भुसवा ने मू डो फाडे जठा पैली खापरिये कुत्ता रे काळजा में छुरी री मारी। कुत्तो तो वठे रो वठे ठडो व्हे गियो। खापरियो माल लेय ने ज्यू आयो ज्यू वारे निकळ गियो। पैरा वाळा कुत्ता रे लारे लाठी लेयने दौडिया। खापरियो झट भाग ने वारे आय गियो। आगे राजा ऊभो ही ज हो।

पूछियो, "चोरी कर लायो ?"

"हा कर लायो। चाल खाडो खोद ने परो गाडा। कालै आपा पाती कर लेवाला।"

खाडो खोद ने माल गाड दीधो।

राजा पूछियो, "खापरिया, इण क्षपरा नदी रो एक सरीखो रेत रो पाट पडियो है। आपा ने सैनाण काई रैवेला के अठे गाडियो है ?"

'ओ चनदरमा रो सैनाण है। आपा रे माथा री सूध मे चनदरमा है। काले इण वखत आपा आय इण सेनाण सू खोद न काढ लेवाला।"

राजा ने आधोक दूरो पूगाय खापरियो तो खाडो खोद धन काढ ले गियो।

दिन ऊगता ही वणजारा रे डेरा मे तो खळवळाहट माच गी। नौ लाख रा माल री चोरी व्हेगी। कोई परकोटा री गूणती फाटी नी कोई मिनख रा पगा रा खोज नी, डोढो पैरो लागतो रियो ने चोरी व्हेगी।

बैठा नियाव कर रिया।

राजा तस्सली दीधी, "म्हारे राज में गयोडो धन कठे ही नी जावे। था रो माल थारा कने आय जावेला। था थारे डेरे जावो।"

राजा, चौकीदार ने खापरिया रे घरै बुलावा ने भेजियो। चौकीदार गियो। आगे घर रे बारे उण री बूढी मा रोय री।

'बापजी, म्हारो खापरियो मादो घणो। हालणी आवे ने चालणी आवे, माचा रे लाग रियो है। कुण जाणे मरेला के जीवेला।"

चोकीदार पाछो आय राजा ने अरज कीधी "खापरियो तो मादो पडियो है। हाजर होणे री हालत नी।"

राजा नाराज व्हे ने हेला कीधा, 'मत कर रे गैली वाता।"

कोटवाल ने हुकम दीधो "थू जाय खापरिया ने लाय अठे हाजिर कर।"

कोटवाळ सिपाहिया ने लारै लेन गियो। सूधो ही घर मे वळ गियो। देखे तो माचा मे पडियो खापरियो हाय वराय कर रियो। पसवाडो नी फेरणी आवे। डील सूज रियो घावा मे सू राध पड री।

खापरिये कोटवाळ रे हाथ जोडिया, "छै मीना सू माचा मे पडियो हू। हालणी चालणी नी आवे।" खापरियो टसकतो बोलियो।

कोटवाळ पाछो फिर गियो। जाय राजा ने अरज कीधी।

सांच्या ही खापरियो मादो घणो। उण री तो उठण बैठण री ही आमग कोनी।

राजा जाणियो कोटवाळ झूठो। मादो किण तरं व्हे सके। रातं तो म्हा भेळे चोरी कीधी है। राजा ने भरोसो नी आयो। राजा आप खापरिया रे घरे देखवा गिया। खापरियो तो जाणतो हो के ओ राजा है चोर नी है। दिन उगता ही म्हारी खबर लेवेला। जो वी आपरे हाथा ही सारे डील मे चक्कू रा चक्दा पटक थोर रो दूध चोपड दीधो। जी सूं सारो डील सूज ने मरे जस्यो व्हे गियो। राजा आय ने देखे तो कोटवाळ साचो, खापरिया री तो हालत ही विगड री।

राजा पूछियो, "खापरिया साची साची बता। राते तो थू साजा साथरो म्हारे लारं हो।"

"म्हने तो घर वारे निकळिया छं छं मीना व्हीया है। म्हूं राते आपरे साथे कठा सू गियो ?"

राजा घणो उंचो नीचो लीधो पण खापरियो नी पग्गटियो।

राजा कहियो "इणरो साच तार देवी काढेला। नगर रे वारे देवी रा मिदर में रात ने लेजाय खापरिया ने वद करदो। रात मे देवी आवेला तो झूठा आदमी रो भख ले लेवेला।"

खापरिया ने लेजाय मिदर मे छोड वारला आडा वन्द कर दीधा। आधी रात री वगत व्ही ने देवी आई। तिरसूळ उठाय खापरिया साम्ही चाली, "थूं झूठो है थारो भख लेऊला। आखरी इच्छा जो व्हे बताय दे।"

खापरियो हाथ जोड ने बोलियो, 'देवी, जरूर भख ले म्हारो तो मोक्ष व्हे

जावेला पण म्हारी एक समस्या है जि रो उत्तर देदो ।"

देवी बोली, "बोल थारी समस्या ।"

खापरियो कवा लागियो, "एक दाण मारवाड में काळ पडियो । मिनख उचाळो घाल मउ माळवे हालिया । अठे नगरी मे एक सेठ रे अठे दो वाप वेटा आय नौकर रहिया । कमावा खावा लागिया । एक दूजा सेठ रे अठे एक मा वेटी आय नोकरी कीधी । एक दिन वे दोई सेठ आपस मे वात करे के म्हारे दो आदमी रियोडा है उणा ने परणावणा है । दूजे सेठ कहियो म्हारे अठे दो लुगाया आयोडी है उणाने परणावणी हे । दोई सेठा सलाह कीधी के उणा रा आपस में घर वधायदा । दोई वाप वेटा ने वी दूजा सेठ रे अठे लाया । वा दोई वाप वेटा दोई लुगाया रा पग मडियोडा देखिया । जद वा वाप वेटे कहियो के आ पगा ने देख ने म्हा म्हारी लुगाई पसन्द कर लीधी ।

वाप वोलियो, "इण मोटा पग वाळी ने म्हूँ परणू ला ।"

वेटो बोलियो, "आ छोटा पग वाळी म्हारी लुगाई ।"

सेठ वा रा वियाव कराय दीधा । मोटा पग वाळी वेटी ही उण ने तो वाप परणियो । छोटा पग वाळी मा ने वेटो परणियो ।

अवैं खापरियो पूछण लागियो, "देवीजी, अवैं वे आपस मे एक दूसरा रे रिस्ता में कांई लागी जो म्हने समझावो ।"

देवी सोच मे पडगी । सोचता सोचता दिन ऊगवा लाग गियो ।

देवी बोली, "अवार तो म्हूँ जावू । थारी समस्या म्हारे सू नी सुळझे

थूं जीतियो म्हूं हारी।"

खापरियो वोलियो, "थां तो परा जावो राजा म्हारे पैं भरोसो नी करेला, म्हने आपरी कोई सैनाणी दे जाओ।"

देवी तिरसूळ दीधो। परभात राजा आय ने देखे तो खापरियो तो भडा ठेका तिरसूळ लैन बैठियो।

"राजा, म्हूं साचो हूं माताजी वरदान में तिरसूळ देयगी है।"

अवे राजा काई कैवे। राजा ने ही मानणो पडियो के खापरियो तो साचो है।

अनोखा कंवरजी

एक राजा रे कुंवर यू तो घणा ही चोखा पण उणा मे एक एव मोटी। काणा आदमी सू चिड़े घणा। काणो आदमी निजर आयो नी के जाणे माथा मे ठोकी। काणा मिनख ने आखिया ही ज नी देखे।

एक दिन गाम रा काणा मिनख राजाजी रे अरजाऊ व्हीया, "आपरा घणो ही मावीत पणो पण कवरजी रा हाल हजूर सू छाना नी। म्हाने सीख वख्साय दीधी जावे। गाव छोड़ न और कठे ही परा जावा।"

राजाजी हिमळाम दीधी "गाम छोड न क्यू जाओ। थाने छोडिया म्हारे काम थोडी ही चाले। था ही वतावो वो बेटो है उण ने कठे काढू ? था समझणा हो, वो नादान है। था उण रे आडी आवो ही ज मती करो।"

खैर कवरजी रे काका ही ज काणा, कवरजी सू चिडियां विना रेणी आवे नी, काकाजी ने कवरजी खटे नी। काकाजी मन ही मन मे वळ'। इण सू वदलो लू जदी म्हारो जीव मोरो व्हे। वे वदलो लेणे री सोचे।

कवरजी रो व्याव मंडियो, काकाजी देखिया, अबै मोको आयो। काकाजी तो खैर काणा हा जो जान में जावा ही क्यू लागिया।

काकाजी पिरोतजी ने बुलाय पांच सौ री थैली पकडाई, "बापजी, चावे जो व्हे इण ठाला भूला रो व्याव विगाड दो।"

पिरोतजी रिपिया री थैली ले हामळ भर लीधी। आछी तरै जान चढी, वीद वीदणी रो गठजोडो वधियो ने फेरा व्हेवा लागिया। पिरोतजी तो चवरी मे वैठा हा ही ज। फेरा देवावा लागिया।

पिरोतजी वोलिया, "कवराणी सा पल्लो सभाळो, झाळ लागे।"

कंवराणीजी झट पोसाक समेट लीधी।

दूजो फेरो फिरता तो पिरोतजी पाछा तेज व्हेने वीदणी सू वोलिया, "म्हें अरज कीधी नी के आप पोसाक ठीक तरै सभाळो।"

पोसाक तो सभाळी थकी ज ही पण पाछो पल्लो सूधो पकडियो। तीजो फेरो फिरता तो पिरोतजी पाछो हाको कीधो,

"म्हूं घडी घडी अरज कर रियो हूं, आप ने दीखे कोनी काई, अठी ने होम री जागता है साडी रो पल्लो सूधो पकडो।"

कवराणीजी ने अवखो तो लागियो पण घू घटा मे, कांई वोलिया नी। पिरोतजी ने तो व्याव विगाडणो हो झझक न वोलिया,

"कवराणीजी तो काणां दीखे एक आडी ने इणा ने दीखे ही ज नी।"

आ सुणता ही कवरजी रे तो जाणे पलीती मेलियो। आगे ही तो वादरो न पछे खाधी भाग। फेरा पूरा व्हिया नीं व्हिया वे तो आगता आगता डेरे आया। नटतां नटता जान ने, वीनणी ने छोड घरे भाग आया।

मिनख मू डो देखता रैंगिया। जान, वीनणी पाछा सू घरे आया।

कवरजी तो वाप ने साफ के दीधो, "आ बीनणी महला में रैवे तो म्हु महला में पग नी दू।"

राजाजी लाचार व्हे गाव मे कोई नोहरो हो वठे ही कवराणी जी रो रैंवास करायो। कवराणीजी वारे पीर रा मिनखा लारे बैंठिया आप रा दिन काटे। कवरजी पाछा आय न झाकिया तक नी के मरे के जीवे। कवराणीजी ने निजरया ही नी देखिया। काकाजी रो मन राजी के 'चोखी बीती माजना जोग।' महिना, दो महिना, चार महिना बीतिया। कंवराणीजी, मा बाप ने सारा समाचारा रो कागद लिख भेजियो। वाप, वेटी ने दुखी जाण दो कागद लिख ने भेजिया, एक कवरजी ने और एक कवरजी रा वाप रे नाम "अठे कवरजी रो व्याव है सो वाई ने सीख देय भिजाओ।"

कवरजी मुजरो करवा ने वाप कनै गिया। वेटा रे मू डा आगे कागद मेलियो।

"थारे सुसराजी रो कागद आयो, वीनण ने वुलावे।"

कवरजी कियो, "जो हुकम भेज देऊ।

कवरजी रे काई मन मे आई के ऊट पलाण सूधा कवराणीजी कनै नीहरा मे गिया। घम घम करता ऊपर चढिया।

आगे कवराणीजी वैंठिया पीर री लुगाया रे साथे चौपड खेल रिया। वा ने सपना में ही भरोसो नीं के कवरजी आवेला। कवरजी तो एकदम

आय ऊभा रिया। कंवरजी री नजर कवराणीजी पै पडी अर कवराणीजी री नजर कवरजी पै पडी। कंवरजी देखियो के आ तो असी रूपाळी ? कुण कंवे के काणी।

कंवरजी वोलिया, "पीर चालणो ?"

कंवराणीजी ऊभा व्हे हाथ जोड न वोलिया, "ज्यू हुकम व्हे ज्यू।"

"चालणो व्हे तो आवो। ऊट नीचे ऊभो है।"

कवराणीजी वोलिया, "हाजिर हूं। थोडा कपडा लत्ता बांध लूं।"

कवरजी कहियो, "आवणो है तो अबार हो ज्यूं रा ज्यूं आय जावो।"

कवराणीजी तो 'हाजर' कैतां ही ऊट पै वैठ गिया। कवरजी ऊंट री मौरी खैंची। ऊट चालियो।

मिनखा कहियो, "कस्यो पीर ले जावे। अबार कठे ही ले जाय खाडो वूंच कर, गाड गूड ने पाछो आय जावेला।"

कंवरजी तो कंवराणी ने ले फटकारिया। आधी रात व्हेता व्हेता पीर कने जाय पूगिया।

कंवराणीजी कहियो, "रूखडा, गेलो सेंधा सेंधा लाग रियो है। अवै मो आपणो ही ज वाग आय गियो।"

कंवरजी कहियो, "आछी तरह देख लो।"

कवराणीजी कहियो, "हा हा आपणो ही ज बाग है।"

ऊट भेकायो । ऊट भेकाय माळी ने हेलो पाडियो, "दरवाजो खोल ।"

माळी देखियो आधी रात रा कुण आयो । उठ न आयो, देखे तो जनानी सवारी ।

मालण ने भेजी "थू जा ! कोई जनानी सवारी है ।"

मालण जाय ने पूछियो, "सा कुण हो, कठी सू पधारिया ।"

कवराणीजी धीरे क कान मे बोलिया, "अरे गोमती थें ही मने कोनीं ओळखी ?"

मालण झट हेलो पाडियो, "अे तो वाईसा ने जवाईसा पधारिया ।"

माळी झट भाग ने फाटक खोलियो । कोठी रो दरवाजो खोलियो । दीवो जोय ने उणा ठहराया ।

कवरजी घडीक तो विसराम कीधो अर बोलिया, "था थारे पीहर आय गिया, अवै म्हूँ जाऊ ।"

"यू काई पधारो, विराजो एक दो दिन तो म्हारा मा बाप सू मिलो, सीख लो, पछे पधारजो ।"

कवरजी मानिया नी, "अवै तो म्हूँ जाऊ पछै थानै लेवा ने तीजा पे आऊंला ।"

कवराणीजी पूछियो, "जरूर ?"

"हां जरूर घू टळे तो म्हूँ टळू । सै तीज रे दिन आऊंला ।"

माळी जाय राजाजी ने खबर दीधी, वे आवे आवे जतरे तो कवरजी ऊंट पलाण ठेका देय गिया।

खैर वाईजी ने महला लेगिया। तीज रे दिन री वाट। ज्यूं ज्यूं तीज नजदीक आवे राजाजी कवरनी री मेहमानदारी ने खातिर री तैयारी करे। तीज रो दिन आयो, गाव मे उमग लाग री के जवाईसा पधारेला। हीदा घल रिया, जगा जगा पावणा रे कपडा रंगवा सारूं रंग री कूडिया भर दीधी। सवारी री तैयारी व्हे री। कंवरजी रो पूरो भरोसो आणे रो। कंवराणीजी वाट देख रिया। चौक में सिनान करण ने बाईजी बैठिया। पाच दस डावडिया ऊभी। कोई पीठी कर री। कोई माथो धोय री। कोई पगा रे झावरो लगाय री। गीत गाय री। बडा उछव उमग रे साथे सिनान कर रिया। अतराक मे तो चिडियानाथ बावाजी माय ने आया। बावाजी री नजर सिनान करता कवराणीजी पे पडी।

देखता ही कवराणीजी हाको कीधो, "अरे बावाजी आया। आडी ऊभी व्हेजा।" झट एक डावडी साडी रो पल्लो आडो कर दीधो।

डावडी बोली, "बावाजी, बाईसा सिनान कर रिया है। आप अठी ने मत पधारो, वठी ने पधार जावो।"

बावाजी री निजर तो कवराणीजी पे पड गी ही, आ सुणतां ही रीस मे आय बावो आट खाय गियो।

"अच्छा, मुझसे परदा करती है, देख लूगा।" आ कैवता ही तीन दाण

चीपियो फटकारियो। चींपियो फटकार बाबो तो पाछो फिर गियो।

वठी ने कवराणीजी रो पेट दुखण लागियो। हाय वराय करण लागिया। पेट में वाड चाली। हाय हाय करतां घडी दो घडी मे कवराणीजी तो मर गिया। राजाजी ने यू तो दुख घणो पण सोच में पड गिया। तीज रो दिन सारो गाव तिंवार मनाय रियो। अठीने जवाईजी तीजा आय रिया आ काई विजळी पडी। ज्यू छे ज्यू आज रो दिन तो धिकावां। छाने रा छाने कवराणीजी ने मसाणा में भेज दीधा। कवराणीजी तो मसाणा मे वळ रिया। अठी ने कवरजी आया।

राजाजी कहियो, "खवरदार ! कानो कान खवर नी पडे। कंवरजी ने पधरावो महला में। गाणो बजाणो ज्यू चाल रियो ज्यूं चालण दो।"

कवरजी पूरा ठाट वाट सू मिनखा ने लैर आया हा। उणा रा डेरा डाडा कराया। किण ने ही उण वात रो वेरो पडण दीधो नी।

कवरजी रावळा में पधारिया। एक चोखी डावडी देख उण ने कवराणीजी री पोसाक पैरा वारा कनें मेली। कंवरजी झट देखता ही जाण गिया के कोई दाळ मे काळो है।

कवरजी कहियो, "वता कवराणीजी कठे ?"

डावडी हाथ जोडिया "तावेदार हाजिर है।"

"थू कवराणीजी ?"

लेता ही चावक ५-१० मोरां मे तडातड मारी।

"अरे अन्दाता मत मारो ।"

"राड वता साची वात ?"

"अठी ने पधारो जद साची वताऊ ।"

गोखडा में ले जाय मसाणां साम्ही आंगळी कीधी, "कवराणीजी वे वळ रिया ।"

वावाजी रे चीपियो फटकारण री । पेट मे दूखण री सारी वात डावड़ी सुणाई ।

कवरजी रीस सू राता पड गिया । दात पीसता वोलिया, "इण वाबा ने ही अवार जाय, मसाणा में भेळो वाळूं ।"

वारे निकळता डावडी ने कैवता गिया, "खवरदार है जो किण ने ही कानोंकान खवर पडगी के म्हूं वारे गियो हूं । ले अे पाच सौ रिपिया ने अो मलमल रो थान । थान फाड पोटळी में रिपिया वाध गावा वजावा वाळा ने इनाम देती रीजे ।"

कवरजी तो रस्सी वाध नीचे उतरिया । हाथ मे कटार ले सूधा वावा री मढी आडी चालिया ।

वठी ने काई व्हीयो के वावो सूधो मसाण मे जाय चीपियो फटकारियो । चीपियो फटकारता ही कंवराणीजी जीवता व्हे गिया ।

"चल मेरे साथ चस, मुझसे ही परदा किया था । चल होजा मेरे नाथ ।"

काई जोर चाले कवराणीजी सारे व्हे गिया । आगे मढी पे जाय

वाबाजी डंडो मारियो। डडा री मारता ही मढी री सिला दूर व्हेगी ने गेलो व्हे गियो। माय ने जाय पाछो डडो मारियो। डडो मारतो ही सिलाडी आडी आयगी। वारणो जड गियो। वावे माय ने फेर डडो फटकारियो। फटकारता ही दो भूत आय ऊभा व्हीया अर वोलिया,

"जो हुकम हाजिर हा।"

वावे कहियो, "पोसाक लाओ, सिनान रो सारो सामान जमावो।'

केवा री देर के सारी चीजां हाजिर तैयार।

वावे कवराणी ने कहियो, "जा सिनान कर कपडा पहर ने आ।"

कवराणी आड में आयगी।

वावो घडी घडी री आगत करे, "जल्दी कर, जल्दी कर, इतनी देर क्या लगाती है?"

कवराणीजी री आखियां में आंसूडा तो ढळकता जावे ने कवे, "आई, वावाजी।"

कवरजी मढी रे वारे जाय ऊभा। चारूं आडी ने फिरिया, कठे ही ज गेलो नी। थोडी देर मे एक नारदो निजर आयो। वारे एक कुत्तो वधियो। कंवरजी ने देखता ही कुत्तो झपटियो। उणा तो झट छुरी सू आप री जाघ रो मास काट कुत्ता ने न्हाकियो। कुत्तो तो मास खावा लागियो, कवरजी नारदा में वळ गिया।

अठी ने वावे आवाज दीधी, "जल्दी कर सुनती है के नही।"

कवरजी रे सुणता ही झाळ उठी। उठाय तरवार बावा रे माथा पै मारी। माथो हाथ पाच जाय दूरो पडियो। जाणे भोपा री झोळी में सू सख पडियो व्हे।

प्रांगणे पडता ही मू डकी उछळ पाछी धड सू आय जुडी। आ देख कवरजी पाछी तरवार री झाटकी।

प्रतराक में भूत बोलिया, "ठोकर ठोकर, डावळिया पग री ठोकर।"

पाछी मू डी उछळ न धड रे जुडवा ने आई। आवती मू डी रे कंवरजी डावा पग री ठोकर मारी जो मू डी दूरी जाय पडी। दोई भूत आय न कवरजी रे पगा पड गिया।

"म्हारा मालिक आप। हुकम फरमावो जिण री तामील करा। इण दुष्ट बावे म्हाने घणा दुख दीधा। दुनिया मे नी व्हे जो अनरथ इण म्हा लोगा सूं करवाया। म्हा तो इण डंडा रे बस में हा। जिण कने आ डडो रेवे उण रा म्हा ताबेदार हा।"

कवरजी कहियो, "था जावो, था रे घरा। म्हने तो था सूं कोई काम नी करवाणो।"

आ कँर डडा ने घूणी में न्हाकियो। डडो वळ गियो। भूत घणा राजी व्हीया नीठ नीठ इण बावा सू छुटकारो मिलियो। भूत आप रे ठिकाणे गिया ने कँवरजी आप री कंवराणी ने ले महलां मे चालिया।

आगे गाणा बजाणा व्हे रीया इनाम बट री। कानोकान कोई ने खबर नी। डोरी लटक री ज ही ऊपरे चढ न डोरी सू कवराणीजी ने ऊपरे

खेंचिया। जाणे कूवा में सू पाव पाणी रो लोटियो खीचियो। कवराणीजी ने माय ने ओवरी में वैठाय ने डावडी ने कहियो, "जा मायना सूं फलाणी चीज ले आ।"

मांय ने डावडी गई तो देखे कवराणीजी बैठिया।

डावडी वरळाई, "अरे भूत भूत।"

"अरे राड कस्यो भूत है। थारा वाईजी ने लेन आयो हूँ।"

उण झट जाय ने कवराणीजी री मा ने कहियो। मा आय वेटी ने छाती सूं लगाई। वाप ने खवर लागी, दौडिया आया। तिंवार हो जिण रो चौगणो तिंवार मनायो।

कवरजी री जाघ सूं काट कुत्ता ने मास ग्हाकियो उण घाव में पीडा घणी। पाटा पीड कीधा। मिनखा कहियो पीडा घणी है तो थोडी अमल दे दो। अमल खायां सूं पीडा थोडी लागी। कवरजी तो थोडी थोडी अमल खावणो शुरू कर दीधी। अमल रो मावो रोज वधवा लागियो। छै महीना में तो वे पक्का अमलदार व्हे गिया। एक दिन घरे जावा री सीख मागी। साथ वाळा मिनखा ने तो आगे भेज दीधा। वे दोई जणां आपरे ऊंट पे पलाण कीधी। विदा व्हीया। आधेक गैले पूगिया, अमल री वगत व्ही, सोचियो हाथ मू डा धोय अमल पाणी कर पछे आगे चाला। अमल लेवा ने वैठिया, कवराणीजी ने कहियो, "ला अमल ला।"

कवराणीजी अमल काढवा ने खडिया में अठी ने वठी ने हाथ घालियो

पण अमल रो पोतो नी लाधियो। कवराणीजी रो मूंडो धोळो पड गियो।"

डरपता डरपता बोलिया, "पोतो तो वठे ही भूलगी।"

हैं ? हैं केवता ही कवरजी रे अमल ही वाही उतरगी। अवासिया आवा लागगी। अब उण काकड मे अमल लावे तो कठा सू। कंवरजी तो अमल विना लांबा व्हे ने पड गिया। हाथ पग ठडा पड गिया। मू डा मे झाग आय गिया। अवे कवराणीजी घवराई। आ आछी विपता आई। अमल विना कवरजी ऊठवा ने नी, मर जावेला। अठी वठी ने नाळया तो दूरो एक जगा धू वो निकळतो दीखियो। धू वो निकळे जठे कोई मिनक वैला। कदाचत अमल ही लाध जावे। कवराणीजी धू वा साम्हा चालिया। वठे जाय ने देखे तो एक कुटी उण मे एक जोगी वैठियो।

कवराणीजी बोलिया, "महाराज, गैले चालता आदमी हा। म्हारे साथे आदमी है जो अमल विना मर रिया है। अमल व्हे तो दे दो।"

जोगी बोलियो, "अमल रा क्या घाटा है, भीतर पूरी वट्टी पडी है. ले लेना। पहले मेरी बात मान।"

जोगी री नीयत खोटी दीखी। कवराणीजी देखियो एक विपता सू निकळ न दूजी मे पडिया।

कवराणीजी बोलिया, "बाबाजी, पेला म्हनें अमल बताओ।"

"जा भीतर झोळी मे पडी है, देख ले।"

कवराणीजी माय ने गिया। झोळी मे अमल पडी देखी न खूटी पे तरवार लटकती दीखी। उणा तो झट तरवार उठाई। अमल री बट्टी ने काचळी मे घाली। तरवार खैंच कुटी बारै निकळी। उण ने जावती देख जोगीडो आडो फिरियो। कवराणी तो ठोकी माथा पे जो दो बडगा व्हेता ही दीखिया। आया, आगे देखे कवरजी रे मूंडा मे तो झाग आय रिया। बुरी दसा व्हेय री वा तो झट साडी रो पल्लो फाडता ही बट्टी ने बाध पाणी रो खुणचो भर अमल टपकाई। अमल रो कस पेट मे गियो ने कवरजी आख खोली। झट अमल गाळता ही मावो दीघो। कवरजी मे पाण आयो। खेंखारा कर ने बैठा व्हीया।

"ला, थोडी अमल और दे।"

अबै कवरजी मे कण पाण आयो अठी ने वठी ने झांकिया, काई नी दीखियो।

पूछवा लागिया, "अमल कठा सूं लाई।"

"अठे कने एक जोगी री धूणी वठा सू लाई।"

कवरजी ने वैम आयो, "कूण जोगी ? कस्यो जोगी ? उण री धूणी पे अकेली गी ? उण क्यू दीधी ? काई वात व्ही ?"

कवराणीजी वोलिया, "चालो म्हारे लारे व्हीयो जो आंखियां वताय दू।"

आगे कवराणी पाछे कवरजी। आगळी सू इसारो कर न वतायो, "ओ जोगी, अर ओ उण रो माथो, आ तरवार। और काई वैम व्हे तो पूछलो।"

कंवरजी राजी व्हे गिया। कवराणी ने घरे लेय गिया। राजी धाजी रहिया।

रूद्रमालो मिंदर

सिद्धराज सोलकी रा राज में खापरियो ने काळियो नाम रा दो नामी चोर रैंवे। दोई नामी हा। दिवाळी रे दिन दोई जणा जूवो खेलवाने वैंठया। खापरियो सिद्धराज री असवारी रा करोडीधज घोडा ने डाव पैं लगायो। वाजी जमी। काळियो जीतियो ने खापरियो हारियो।

खापरियो वोलियो "भाई, म्हने वारा म्हीना री मोलत दे। थनें आवती दिवाळी रे दिन राजा रो घोडो लाय सू पू ला।"

उणीज वखत खापरियो मजदूर रो भेस वणाय राजा रे राज पाटण में नाय पूगियो। पायगा मे चारा रो भारो लेने जावा लागियो। रोजीना चारो ले जावे। पायगा रा दरोगा सूं जाण पिछाण कीधी। उण ने अस्यो राजी कीधो के खापरियो ने ठाण साफ करवा ने राख लीधो। अवं तो वो घोडा री घणी चाकरी करे, आछो-आछो चारो लाय ने खवावे। घोडा रे मोरां पैं दिन मे तीन दाण खुररो करे। घोडा री पूठ चम-चम करवा लागगी। घोडा री असी चाकरी कीधी कि घोडो मातो व्हेगियो। ओ घोडो राजा रे मरजी रो हो। रोजीना राजा उणने पायगा मे देखवाने आवे। खापरिया ने असी चाकरी करता देख राजा घणो राजी व्हीयो अर उण ने करोडीधज घोडा रो चरवादार वणाय

दीधो। खापरियो तन मन सू घोडा री सेवा करे। पायगां रा दरोगां ने भर राजा ने राजी राखे।

एक दिन राजा सुख भर नींद में सोयरियो हो, मझ आधा रात रा देखे तो एक लुगाई हाथी दात रो चूडो पेरियोडी, लाल ओढणी ओढियां, वारी आंखिया आगे आय ऊभी री।

वा बोली "राजा ऊठ। म्हने आभूषण पैरा। म्हूं प्रथवी हूं।"

आ कैता ही वा लोप व्हेगी।

राजा आंख खोल ने देखे तो कोई नीं। जाणियो कोई जजाळ आयो व्हेला। पाछो सोयगियो। दूजे दिन आधी रात व्ही ने वाही लुगाई पाछी मू ढा आगे आय ऊभी री।

"थें सुंणियो कै नी ? म्हने आभूषण पैरा। "म्हूं प्रथवी हूं।" आ कैंयता ही लोप व्हेगी।

राजा विचारियो के आ काई वात है, एक दिन व्हे तो जजाळ आवे दो दिन बरावर व्हेगिया। जरूर दरसाव है। दिन ऊगता ही पिंडता ने बुलाया, जोतसिया ने बुलाया। उणा ने सपना री वीगत सुणाई। पिंडत पोथी पानडा खोलिया ने घणो विचार कर राजा ने अरज कीधी,

'प्रथवी रो आभूषण देवाळय व्हे। इण सारूं आप कोई अस्यो मोटो मिंदर वणवाओ जीं सू भूमी री सोभा वढे।"

राजा रे मन में तो वात जमगी के अस्यो नामी मिंदर वणावां अस्यो

आज तक नीं कदेई वणियो, नी कदेई आगे वणे। जगा जगा सू नामी सिलावटा ने, कारीगरां ने बुलावा भेज दीधा। दूरा दूरा रा सिलावट कारीगर आय ने नकसा बणावे, राजा ने बतावे। पण राजा रे जचे नी। राजा ने तो जक नी पड़ै। रात दिन, खावता, पीवता, बैठतां, सोवता मिंदर ही मिंदर दीखे। जठै जावे जठे आ ही चरचा करे। राजा घणो उतावळो मिंदर बणावा ने व्हेयरियो। खापरियो ही राजा रे लारे घोडा री चाकरी में जावे जो वाता सुणे। बारा महिना व्हीया। दूजी दिवाळी आई। काळिया ने करोडीघज घोडो ले जाय देवा रो वचन दीधो वो दिन आयगियो। खापरियो तो आधी रात रो घोडा पै गढ सू सवार व्हे सहर रो कोट कुदाय घोडो दौडायो। सिरोही रे आगे काळियो रेवे वो गेलो पकडियो।

घोडा ने खापरिया ने ले जातो देख गढ़ रा सवार घोडा पलाण ने लारे दौडावा लागिया।

राजा कहियो "थां भोळा व्हीया हो। अै घोडा करोडीघज ने थोडा ही पूगेला। रैवादो। आ घोड़ा सवारा रो कणी रो ही उनियारो नी जो उण ने पकड़ै।"

खापरिये घोडा रे एड लगाई। करोडीघज तो जाणे वायरा सू वाता करवा लागियो। दो घडी में जाय आवू पूगियो। "खापरिये सोची अबे तो आपा अतरा दूरा आयगिया हा। थोडो विसराम कर ला।" घोडा ने वाघ विसराम करवा लागियो। अतराक में देख तो धरती फाटी।

खापरिया ने घणो अचम्भो व्हीयो। कने जाय देखवा लागियो। तीन

सोना रा कळस जमीन रे वारे निकळिया, पाछे सिखर निकळियो, मडप निकळियो, पूरो रो पूरो मिंदर धरती माथे आय वैठियो। जाणे पेली अस्यो ही अठे वणियोडो व्हे। अस्यो फूटरो नी कदै ही देखियो नी कदै ही सुणियो। एक एक कर देवी देवता उण मिंदर मे आवा लागिया। आसण जमिया। इन्दर रो आसण लागियो ने राग रग व्हेण लागिया। अपछरा नाचे, गधर्व पखावज वजावे। देवी देवता वैठिया वैठिया आनंद लेवे। देखता देखता खापरियो तो मस्त व्हेगियो। वो ही धीरे-धीरे जाय मिंदर रा एक कूणा मे छिप ने वैठगियो। राग रंग चालतो रियो। पाछे घडी दो रात री ने देवी देवता सव एक एक कर विदा व्हेण लागिया। पण मिंदर पाछो जमी में नी वैठे। देवता कैवा लागिया वात काई व्ही, मिंदर पाछो पाताळ में क्यू नी परवेस करे। जरूर कोई वात है। कठे कोई मिरत्युलोक रो कोई मानवी तो नी वैठ गियो है। देखवा लागिया। देखे तो खापरियो वैठियो।

उण ने पूछियो, "थू कुण है ?"

'म्हूं तो खापरियो चोर हूं।"

अठै क्यू आयो ?"

'नाच गाण व्हेरियो हो सो सुणवा लाग गियो।"

'अवे थू अठा सू ऊठ जा। मिरत्युलोक रो थूं मानवी वैठियो है सो ओ मिंदर पाछो पाताळ में परवेस नी करे।"

खापरियो वोलियो, "एक वात वतावो तो उठ। ओ मिंदर फेर कदी

पाताळ वारे निकळेला कै नीं ?"

देवता कहियो, "हा हा दिवाळी पै तीन रात वरावर निकळे सो काले अर परसू राते फेर निकळेला ।"

आ सुणता ही खापरियो मिंदर रे वारै निकळगियो ।

मिंदर देखता देखता धरती मे समायगियो । अवे खापरिये सोची ओ मिंदर राजा देखले तो कतरो राजी व्हे । राजा ही अस्यो मिंदर वणावे । वारो मनोरथ सीध व्हे जावे । म्हूँ अतरा दिन राजा रो लूण पाणी खाधो है सो आ चाकरी कर लूं तो म्हूँ ही राजा रा रिण सू उरण व्हे जाऊ । आ विचार खापरियो तो घोडो पाछो फेरियो । दिन ऊगता पाटण मे आय टपकियो । सूधो जाय राजाजी सू मुजरो कीधो । वी ने देखता ही राजा ने घणी रीस आई । पण अचम्भो ही घणो व्हीयो ।

राजा वीने पूछियो "घोडो कठे ले गियो ने कठा सूं पाछो आयो थू ।"

खापरियो हाथ जोड अरज कीधी "म्हूँ खापरियो चोर हूँ आप रो घोडो चोर ने लेगियो । पाछली दिवाळी पै काळिया चोर रे लारै जूवा मे आप रा घोडा ने डाव पे मेलियो जो चोरी कर ने व्ही ने देवा ने गियो । पण रस्ता मे एक अचम्भा री वात देखी ज्यू पाछो आयो । एक अस्यो मिंदर देखियो के जस्यो प्रथवी रे माने कठे ही नी है । आप जस्यो मिंदर वणावा रो मनसूवो वाधरिया हो वस्यो ही मिंदर है । आप एक दाण म्हारे लारै व्हे जाओ । आप ने म्हूँ चाला तीसरो कोई नी । मिंदर री सारी विगत राजा ने सुणाई ।

राजा ही खापरिया री वात रो भरोसो कर लीधो ने उण रे लारै व्हेगियो। आवू री तळेटी में आय उतरिया। राजा तो पोढरिया ने खापरियो पगाथिया वैठियो। आधी रात री वेळा व्ही ने धरती फाटी। खापरियो राजा रा पग रो अंगूठो मरोडियो "देखो देखो" देखे तो सोना रा कळस निकळिया, सिखर निकळियो, मंडप निकळियो। जाणे कोई चतराम में चीरियो व्हे जस्यो मिंदर। राजा आख फाड देखता रेगिया। देवता रा विवाण आय आय ने उतरवा लागिया, मिंदर में राग रग गाणा वजाणा होवण लागिया। राजा तो मिंदर ने यूं देखरियो जाणे काळजा में वी री तस्वीर कोररियो व्हे।

खापरियो कहियो, "माय ने चाला। मायलो आनद तो देखा।"

दोई छाने छाने मिंदर में जाय वैठिया। अपछरा रो नाच व्हेण लागियो। अस्यो गाणो व्हेण लागियो के वे दोई जणा पखाण री मूरती व्हीया सुणे।

दो घडी रात वाकी री ने देवता मिंदर सूं अंतरधियान व्हेण लागिया। पण मिंदर हाले नीं। सव जणा विचार में पडगिया के आज फेर कोई मानवी आय वैठियो है। देखवा लागिया, देखे तो गोखडा में दो मानवी वैठिया।

उणा ने कहियो "भाई, उठो मिंदर पाछो पाताळ में जावेला।

राजा नटगियो "म्हे तो नीं ऊठा।"

"देवता घणा समझायो पण मानियो नीं।"

देवता, राजा इन्दर ने जाय अरज कीधी के "आज दो मिनख आय वळिया है उठाया उठे नी ।

इन्दर आप आय ने कहियो "मानविया, दिन ऊगवा वाळो है ओ मिंदर धरती माथै नी रेवै । थां उठो मान जावो ।"

राजा हाथ जोड ने अरज कीधी "इन्दर राजा, आपरो हुकम माथा पे, म्हूं अस्यो रो अस्यो मिंदर बणवाणो चावूं हूं । म्हनें कोई कारीगर मिले नी । म्हनें एक अस्यो सिलावट आप दो जो मिंदर बणाय दे । म्हारो मनोरथ पूरो कर दो म्हूं परो जाऊ ।"

इन्दर सात गोलिया काढ़ ने राजा रे हाथ मे दीधी ने कहियो,

"जो गोळी माथे गोळी मेल ने आ सात गोळीया ने चढाय देवेला वोही कारीगर अस्यो मिदर वणाय देवेला ।" गोळिया ले राजा अर चोर मिदर सूं बारै निकळ आया । वारे बारै निकळता ही देवी देवता देवाळै सूधी वठै रा वठै लोप व्हे गिया ।

राजा पाछो राज में आय खापरिया ने कहियो "आज दिवाळी रो दिन है थारे काळिया ने किरोडघज घोडो देणो है जो लेजा ।"

घोडो दे सिरोपाव दे खापरिया ने सीख दीधी ।

अबे राजा देस देस रा कारीगरा ने बुलावो भेजियो । सब ने भेळा कीधा वांरे मू डा आगे गोळिया राखी पण किणी सू ही गोळी पे गोळी नी चढाणी आवे नामी नामी कारीगर सिलावटसगळा आया पण गोळिया नी चढी । राजा निरास व्हे गिया । घणो दुख व्हीयो । आ वात चारू कू ट

में परसिद्ध व्हेगी के राजा रो मिंदर कोई नी वणा सके ।

एक गाव मे एक गुणी सिलावट रैंवतो वो वीरा वेटा सूं वोलियो, "चाल, राजा रो मिंदर वणावा ने आपा चाला।"

वाप वेटो रवाना होवण लागिया तो वाप वोलियो,

"वेटा वाट वाट ।"

झट वेटे टाकी हथोडो उठायो ।

जद वाप माथो हिलायो "वेटा थू परणियो ही अण परणियो है । थने ढाववा वाली नी । थू गोळिया ने किण तरह ढावेला ,"

वेटा रो झट दूजो व्याव कर दीधो । परणाय ने वोलियो "वेटा अव चाल गोळिया ठामवा चाला ।"

जद वाही वात कही "वाटे वाट ।"

नी वेटो समझीयो नी नवी परणी वहू समझी ।

वाप पाछो माथो हिलायो "थू परणीयो ही नी ।"

तीजो व्याव करायो । वाही वात व्ही । चौथो व्याव करायो । चौथी वहू आवता ही आपरा मोटियार ने पूछियो,

"सुसराजी थानें व्याव पै व्याव क्यू करवाय रिया है ?"

कारीगर रो वेटो वोलियो "मिंदर वणावा ने गोळिया चढावा ने जावा लागे अर म्हने कैवे "वाट वाट" म्हूं समझू नी । अर वे कैवे, थू परणियो

थको ही अण परणियो है अर दूजो व्याव कराय देवे ।

वा नवी वीनणी समझदार ही । वी सात छल्ला दीघा । अर कहियो

"सुसराजी जद थांने कैवे तो अे छल्ला उणां रे मूंडा आगे राख दीजो । अर कैवजो गोळी माथे छल्लो मेलता जांवाला अर गोळी चढ़ाता जांवाला ।"

वाही वात व्ही । कारीगर वेटा ने कियो गोळी चढावा चालां अर वाट वाट बोलियो ।

वेटो झट छल्ला मूंडा आगे मेल दीघा । डोकरो राजी व्हेगियो अर वोलियो,

"अवे म्हारो वेटो परणियो है । अवे सिद्धराज रो मिंदर थूं वणाय देवेला ।

दोई वाप वेटा सिद्धराज कनै पाटण गिया । गोळी पे छल्लो मेलता गिया ने गोळी चढावता गिया । इण तरै सातू ही गोळिया चढ़ाय दीघी । राजा घणो राजी व्हीया "अवे म्हारो मनोरथ पूरो व्हे जावेला ।"

दोई वाप वेटा रुद्रमाळा नाम रो मिंदर संपूरण कीघो । प्रथवी राजी व्हेगी । राजा रो ही नाम जुगा न जुगा अमर व्हेगियो ।

चातर नार

एक राजा रे कवरजी काई तो भणियो पढियो नी, महामूरख । मां बाप लाड मांय ने उण ने लाड वावळो कर राखियो ।

उणा कवरजी प्रण कर राखियो के म्हूँ तो परणू जिण रे माथा मे रोज दो जूता री मार रोटी खावू ।

जठा सू कोई सगाई आवे उण ने कवरजी आ ही कवे, 'म्हूँ रोज दो जूता री वीनणी रा माथा में मार ने रोटी खावूंला ।"

देखती आखिया अस्या ने आपरी बेटी कुण परणावे, नाळेर लेय ने आवे वो ही पाछो फिर जावे, कोई परणावे नी ।

एक राजा रे बेटी रूप गुण री निधान, घणी चातर, बत्तीस लक्षणी । बाईजी कंवरजी रो प्रण सुणियो जद बोलिया,

'चतर लुगाई व्हे तो एक दिन जूता री नी खावे । कवरजी प्रण लीधां ही बैठा रेय जावे ।"

बाईजी री एक साथण मसखरी कीधी "अस्या चतर तो आप ही ज हो । उण सू आप परण ने आप री चतराई बतावो ।"

बाईजी रे तो आ बात चुभगी । बाप ने अरज कराई,

"म्हारा नाळेर फलाणा कवरजी रे अठे भेजावो ।"

बाप कहियो "बाई गहली व्ही है काई ?" रोज जूता मार रोटी खावारो उण रे प्रण है । महा मूरख ने थनें किण तरै परणावू ।

बाईजी अरज कराई, "म्हारा में गुण व्हेला तो एक दिन जूता नीं खावू ।"

राजा समझाई पण बाईजी मानिया नी ।

बाप कहियो, 'बेटी रा भाग, नाळेर ले जावो ।"

कंवरजी जान चढाय ने आया । तोरण मार रावळा मे आवता ही कवरजी तो परणेतू पगरखी पगा बारे काढी बाईजी रे मारवा ने ।

बाईजी बोलिया, "हाल ताई तो आप परणिया ही नी हो, परण लो पछे मारजो ।"

परणिया, फेरा फिरिया । चवंरिया सू उठता ही जूतो काढियो ।

बाईजी कहियो, "अवार तो म्हूँ म्हारा बाप रे घरे हूँ । आप रे घरे ले जावो जद देखी जावेला ।"

कवरजी रा हाथ रूकगिया । सीख कराय घरै चालिया । घरै जावता ही कवरजी पगरखी काढी ज ।

बाईजी हाथ पकडियो, "अवार तो म्हूँ म्हारा सुसरा री रोटी खाय री हूँ, आप कमाय ने दोगा जदी आप ने मारवा रो हक व्हेला । कमाय लाय, खुवाय ने पछे मारजो ।"

कवरजी वात पकड लीधी, वाप कनै गिया ।

"म्हनें सीख दो म्हूं कमावा ने जावूंला ।"

वाप वरजिया, पण मानिया नी । मोहरा रा तोवडा भराय कमावा चालिया । चालता चालता एक ठगा रा गाम में जाय पूगिया । ठगा देखियो कोई पैसा वाळो परदेसी आयो है झट जाय कवरजी रा घोडा री लगाम पकडी ।

"इण तरै छाना छाना कठे पधारो । म्हारा गाव मांय ने कर पधारो ने गोठ जीमिया विना पधारवा दा आपने ? आप तो म्हारा मू घा पावणा हो, आप रा वाप री तो म्हा लोगा पे घणी मेरवानी ही ।"

कवरजी वाता में आय रूक गिया । कवरजी ने गोठ दीधी । ठग मेळा व्हिया । गोठ करता करता एक ठग कहियो,

"म्हारो तो सोना रो पियालो गम गियो ।"

"कठे गियो ? कुण लीधो ? करता करता तो कवरजी माथे ही ज चोरी लगाई । कवरजी वोलियो,

"म्हूं पियालो वयू लेवा लागियो ? जाणूं नी वीणू नी कसियो पियालो काई वात । थारो पियालो आखिया देखियो नी ।"

घर घणी कैवै, लीधो कवरजी रो कवरजी । गांव रा पच भेळा व्हीया । पचा न्याव कीधो कवरजी कनें पियालो लाध जावे तो कवरजी रो सारो माल गोठ देणियो घर धणी ले ले । घर धणी रा घर में पियालो लाभ जावे

तो वीं रो सारो माल कवरजी ने दे दे। घर घणी अर कवरजी दोय जणा आ सरत मजूर कीधी। पाच पच भेळा व्हेय सम्हाळो लेवा लागिया। वो तो ठगा रो गाम रियो। सब ठग एक मतारा। सभाळो लेता लेतां कवरजी रा वागा री चाळ में वधियोडो सोना रो पियालो लाधो।

कवरजी रो सारो माल मत्तो ले गाव वारे काढ दीधा।

अवे कवरजी काई करे। वाप ने घरे जाय मू डो काई वतावे। कु वाडी लेय लकडी काटे, भारो माथो पे लाय वेच ने पेट भरे।

वाईजी रो आदमी लारे हो वी छाने आय खवर दीधी। के कवरजी री आ गत्त वणी।

वाईजी सुसरा ने अरज कराई, "म्हूँ तीरथां जाऊ सीख देवावो।"

सुसराजी कना सू सीख ले वाईजी आप रे पीर रा एक दो भरोसा रा आदमिया ने लेय मरदानी सरोपाव कीधो। मरदानी सरोपाव कर ठगा रा गाव कानी चलिया।

ठग तो जमियोडा हा, उणा रो घघो ही ओ ही ज हो। आय मनवार कर उणा ने उतारिया। गोठ तैयार कीधी। गोठ जीमवा लागा जतरे चतराई सू एक जण वाईजी रा वागा री चाळ रे पियालो वाध दीधो। वाईजी तो पेला ही सावचेत हा, नीगे राखी। वा तो चतराई सू अठी ने वठी ने कर जाजम रे हेटे छिपाय दीधो। ठगा तो चो ी री हाको कर वाईजी रे माथे चोरी दीधी ज। पच आय वो रो वो ही फैसलो कीधो

जी रा कनँ पियालो लाध जावे वो ही आप रो सगळो मान्न दे । वाईजी री तलासी लीधी पियालो लाधो नी ठग रो घर देखवा लागिया । जाजम नीचे पियालो लाध गियो । ठग रो सारो माल वाईजी जीत गिया । माल ले एक घर भाडा रो लेय रँवा लागिया । आप रे रसोडे सदावरत खोली जो भूखो तिसियो व्हे आय रोटी खावे । वाईजी गोखडा में वैठिया भूखा तिसिया मिनख आवे जा ने देखे ।

एक दिन भूखा मरता कंवरजी आया । माथे हजामत वध री, डील पे मेल री पडत चढ री, फाटो कुरतो, माथे दो हाथ री चीधी । हाथ में कुवाडो र रस्सी । आय भूखा तिसिया भेळे जीमवा वैठियो । वाईजी री नजर पडता ही ओळख लीधा । जीमवा देय न वुलाया ।

वुलाय ने कहियो, "नौकरी करेला ?"

कवरजी राजी व्हेय ने कहियो, "फरमावोला जो चाकरी करूंला ।"

वाईजी नाई ने वुलाय कंवरजी रा केस कटाया, नवाय मेल उतरवायो, मैल री वाटिया उतरी मोकळी, नवा कपडा दीधा पैरवा ने । माथा रा कटियोडा केसा ने, मेल री वाटिया ने, कुवाडी रस्सी अर वारा फाटियोडा गाबा ने ले, वाईजी एक पेटी में मेल दीधा ।

थोडा दिन रैंय वाईजी कवरजी ने कहियो, "म्हे तो म्हारे गांव जावा ओ म्हारो मान्न असवाव सगळो थान दीधो ।"

वाईजी तो मरदाना सरोपाव उतार सासरे आय वैठिया ।

वाईजी रो धन माल हाथ आवता ही कवरजी ने पाछो जोम आयो ।

वाप रे समाचार भेजिया, "कमायन आय रियो हूँ।"

ठाठ वाट सू कवरजी घरे आया। मा वाप सू पूरा मिलिया नी मिलिया झट लुगाई कने गिया। डोढी मे वळता ही पग मायनू जूतो काढियो।

वाईजी वोलिया, "घणी चोखी वात है पण इण पेटी मायली चीज देख लो पछे जूता री मारजो।"

झट पेटी खोल ने मू डागे मेली। माय ने आपरा फाटा गावा, कु वाडो रस्सी, माथा रा केस देख कवरजी रो हाथ हो जठे रो जठे रैंगियो।

वाईजी रे पगा पडगिया। "किण ने ही कीजो मत। नी तो म्हारो माजनो परो जावेला।"

कवरजी तो उमर भर कदे ही जूता मारवा रो नाम नी लीधो।

खोटा रो फल खोटो

एक राजा रा बेटा। वा री मितरता एक नाई सू । सिकार जावे तो नाई ने साथे राखे । जीमै तो नाई ने लारै राख । सोवे तो नाई साथे ।

दोना बूढा केवण लागिया, "आ मितरता आछी नी । नाई सुभाव रो भूडो है । कवरजी ने खोटे गैले लगावेला ।"

मिनखां कवरजी ने समझाया पण कान ही नी दीधो ।

दूजा मितरा कवरजी ने कहियो, "इण दुस्ट रा कहिया में था चालोला तो म्हारी थारी मितरता नी निभै ।"

कवरजी उणा रो कहियो नी मानियो ।

"भाई, म्हूँ तो नाई ने एक दिन म्हारा सू दूरो करू नी, भले ही बोलो, मत बोलो ।"

परधान, कंवरजी ने समझाया, "कवरजी इण नाई रो साथ छोड दो, दुख पावोला । नाई घणो दगाबाज है आपने धोको देवेला । पछै पिछतावोला । कहियोडो मान लो । म्हा सगळा आपने सीख देय रिया हां पण नाई रा चाळा मे लाग आप मानो नी इण रो नतीजो आप देखजो खोटो व्हेला ।"

खोटो केवा लागिया। राजा रे कानां वात पूगी। राजा रो जंवाई तो सेठ रा जवांई रो नाई है। राजा ने सरम आई।

नाई आय राजा रा कान भरिया, "ओ तो म्हारा वाप रो नाई है। महा धोखेवाज, जुवारी। था री बेटी ने सूती ने मार जेवर ले जावेला एक दिन।"

राजा पूछियो, "काई करा ?"

नाई सलाह दीधी, "करणो काई है, मार न्हाका किण ने ही कानोकान खबर नी पडवा दां।"

राजा पायगा रा चडाळ ने बुलाय ने कहियो, "आज रात ने तेल उकाळ राख जे। जो थनें आय ने पूछे राजा रा हुकम मुजब काम व्हीयो के नी उण आदमी माथे कळकळ तो तेल कूढ मार दीजे।"

राजा रात पडी ने कवर ने भेजियो, "आप जाओ, पायगा मे जाय चडाल ने पूछजो, राजा कहियो जो काम व्हीयो के नी ?"

कवर 'हाजर' के पूछवा ने गियो। कवर रे अर उणा री वहू रे हेत घणा, वी मन मे सोची चालो चालतो ही दो पल वात तो करतो जावूं।

वहू सूं वात कर पायगा मे जाण लागिया तो वहू कहियो, "गरम पाणी तैयार है, सिनान करता जावो।"

कवर सिनान करण लाग गिया। जतरे देर व्ही। वठी ने नाई रा जीव में खुदबुदो लाग रियो के कवर ने मारियो के नी। रैवणी नीं

आयो पायगा मे आप जाय चडाळ ने पूछियो,

"राजा रो हुकम हो जो काम व्हीयो के नी ?"

चडाळ तो उण ने पकड कळकळतो तेल माथे कूढ दीधो। नाई तो वळ ने मर गियो। अतराक मे सिनान कर कवर पायगा मे जाय पूछियो।

चंडाल वोलियो, "व्हे गियो।"

कवर जाय राजाजी ने अरज कीधी, "हुकम हो जो काम व्हे गियो।"

राजा ने अचभो व्हीयो। जाय ने पायगा मे देखे तो नाई मरियो पडियो। उण ने देखता ही राजा रो कवर चमकियो,

"ओ अठे कठा सूं आयो ?"

राजा पूछियो, "आप इण ने ओळखो ?"

कवर सारी वात माड ने कही। राजा घणो राजी व्हीयो,

"साची वात है खोटा रो फळ तो खोटो ही व्है।"

कवरजी मा वापा रे समाचार भेजिया। मा वाप ही राजी व्हीया। वेटा ने वुलायो। वेटे जाय पग पकडिया,

"वुरा री सोवत रो फळ म्हने मिल गियो। अवै कदे ही आप लोगा री वात नी टाळूं।"

अकल बादर

एक समै री वात। एक नगर मे चार भाई रैवता। चारू ही भाई अकल रा दीवाण। उणा री अकल देख लोग उणा ने अकल वादर कैवा लागगिया। एक सू एक अकल में बढता। एक भाई रो नाम सौबुद्धि, दूजा भाई रो नाभ हजार बुद्धि, तीजा भाई रो नाम लाख बुद्धि चौथा भाई रो नाम किरोड बुद्धि।

एक दिन आ चारू भाया मतो कीधो के आपा ही बारे कमावा ने जावा। बारे जावा तो आपणी बुद्धि रो परगास व्हे। खबर तो पडे आपा कतराक अकलबद हा। घरे तो करसा वैठा चोखा लागे। चातर ने तो वारे जाय चतराई सू लिछमी कमावणी चावे। आ सोच चारूं भाई घोडा ले वारे कमावा निकळिया। गैले गैले जाय रिया, उणा ने गैला मे ऊट रा पग मडियोडा दीखिया।

ऊट रा पग देख सौबुद्धि बोलियो, "अे ऊट रा पग आपा ने दीखे जो आ साड है।"

हजारबुद्धि बोलियो, "विलकुल ठीक था कैवो। आ साडणी है अर डावली आख सू काणी है।"

लाखबुद्धि इणा री वात ने ताईद करते कहियो, "था दोई साचा हो।

इण सांडणी माथे दो जणा चढ़ियोडा है अर वे एक आदमी दूजी लुगाई होणा चावै।"

किरोडबुद्धि कहियो, "थां रो अंदाजो ठीक है। अर वा लुगाई गरभवती है।"

चारू भाया अकल लगा आपणो अनुमान कहियो पण उणा सोचियो के आंपणो अंदाजो ठीक है के गलत है। इण री जाच करणी चावै। वां साडणी रे लारे घोडा दवाया। साडणी सवार इणा ने आप रे लारे घोडा दौडाता देख डरियो। ऊट ने दौडाय गाव मे वडगियो।

रावळे जाय पुकारियो, "चार जणा म्हारे लारे घोडा दौडावता आया। कुण जाणे वे ठग है के चोर है। म्हूं तो भाग न गाव में वडगियो।"

राजा कोटवाळ ने हुकम दीधो, "नीगै करो कोई ठग, चोर, धाडायती तो नी है।"

कोटवाळ गाव में वळता चारूं भाईया ने पूछियो, "था कुण हो ? कठा सू आया ? कठे जावो ?"

उणा कहियो, "फलाणा गाम सूं आयरिया हा। सेर वाजरी री नौकरी वास्ते वारे निकळिया हा।"

कोटवाळ चारू भाइया ने तेजवान देख राजा रे अठे हाजर व्हेवा री सलाह दीधी, "म्हारे राज मे ही भला मिनखो री जरूरत है थां लोग राजा सूं मिलो।"

कोटवाळ उणा ने राजा कने लेगियो । राजा उणा ने ऊ ट रे लारे घोडा दबावा रो कारण पूछियो ।

सौवुद्धि हाथ जोड ने वोलियो, "म्हा चारू भाई ऊ ट रा पग मडियोडा देख म्हारी अकल सू ओ अन्दाजो लगायो के आ साडणी व्हेणी चावे, डावलिया आख सूं काणी व्हेणी चाइ जे । इण रा सवार घणी लुगाई व्हेणा चावे अर वा लुगाई गरभवती व्हेणी चावे । जो म्हा घोडा दौडाय ऊ ट अर सवारा ने देखणो चावता के म्हारी परीक्षा गलत है के ठीक है ।"

राजा ने ही रस आयो इणा री वात मे ऊ ट वाळा ने वुलायने पूछियो,

"थू कठे गियो ?"

"वी कहियो म्हारी लुगाई रे टावर होण वाळो हो जो साडणी ले उण ने लेण ने गियो ।"

राजा पूछी, "थारी साडणी काणी है काई ।"

ऊ ट वाळे कहियो, "हा डावलिया आख सू काणी है ।"

राजा ने घणो अचम्भो आयो । राजा पूछियो, "था अटकळ किया लगाई जो म्हनें वतावो ।"

सौवुद्धि वोलियो, "मारग चलती साडणी मूतियो जिण सू पतो लागियो के आ मादा है ।"

हजारवुद्धि वोलियो 'गैला रे एक कानी रूखडा हा जणां ने तो आ

साडणी चरती गी। दूजी कानी रा रूखडा रे मूडो ही नीं घालियो जिण सू वेरो पड गियो के आ काणी है।"

लाखवुद्धि कहियो, 'साडणी ने रोक सवार नीचे उतरिया उणा रा खोजा सू ठा पडगो के दो जणा है अर एक आदमी दूजी लुगाई है।"

किरोडवुद्धि कहियो, "लुगाई रो पग खोजा मे भारी पडियोडो दीखियो जिसू अटकळ लगाई के वा गरभवती व्हेणी चावे।"

उणा री अकल ने देख मूडे मागी तनखा देय आप रे अठे राख लीधा।

राजा पूछियो, "और थारा में काई काई गुण है ?"

सौवुद्धि कहियो, "म्हूं जगा विचार ने वैठू। म्हनें वैठियोडा ने कोई उठावे नी।"

हजारवुद्धि कहियो, "म्हने जीमण री परीक्षा है।"

लाखवुद्धि कहियो, "म्हने विछायत री परीक्षा है।"

किरोडवुद्धि कहियो, "म्हूं रूसियोडा ने मनाय दू।"

राजा उणा री परीक्षा लेवा री सोची।

एक दिन सगळा जणा दरीखाना मे वैठिया। राजा फरासा ने हुक्म दीधो, "जाजम उठाय लो। जाजम उठावा लागा जदी सारा जणा ऊठा व्हीया। पण सौवुद्धि तो जाजम रा पल्ला मेळे हा वी जगा वैठियो जो वैठे वैठे ही आप रे नीचां सू पल्ला ने काढ दूरा फैंक दीधा।"

साझ रा आछो जीमण वणाय राजा चारू भाइयां ने जीमण ने वुलाया।

जीमाय राजा पूछियो,

"जीमण कस्योक बणियो ?"

तीनू भाइयां तारीफ कीधी, "रावळा जीमण रो काई केवणो।

हजारबुद्धि ने पूछियो तो वी कहियो, "माफी बगसावें। चावळा में तो गाय रा मूत री बदबो है।"

रसोडा रा दरोगा ने पूछियो, "साच साच बता।"

वी अरज कीधी गामा मे सू चांवळ मोल लाय रियो ही जद गैला में बरखा आई, एक पटेल री पोळ मे ठैरियो। गूणती वठे उतारी। रात ने देखू तो गाय व्ही पे मूत री। चावळा ने म्हे तो घणा ही धोया पण बदबो नी गी व्हेला।"

राजा घणो राजी व्हीयो। लाखबुद्धि रे विछावा ने सीरख पथरणा भेजिया। दिन उगा ही लाखबुद्धि कहियो, "सीरख में तो खरगोस री पू छ दीखे, म्हारा मोरा में घणी चुभी।"

वठे सीरख मगाय उधेडी तो साचे ही खरगोस री पू छ निकळी।

अवे राजा सोची किरोडबुद्धि री परीक्षा करा। राणी ने कहियी, "थां रूस ने बाग मे जाय बैठो। म्हूँ मनावा ने भेजू तो मनजो मत। किरोड बुद्धि री परीक्षा लेवणी है।"

राणी तो रूस ने बाग मे जाय बैठी। राजा किरोडबुद्धि ने बुलायन कहियो, "अवे थारो काम पडियो है। राणी रूसाई गी मनायत लावो।"

किरोडबुद्धि कही, 'अबार मनाय लावूं ।"

किरोडबुद्धि तो पडळा मे मेलणे रा पुडका, पीठी वगैरा ले घोडा पे वैठ वाग कनै आयो ।

आय ने राणी ने कहियो, "राजा तो आज दूसरो व्याव कर रिया है जो ओ पडळा रो सामान लेयन जाय रियो हूँ ।"

राणी पूछियो, "साची ?"

"साची नी तो, आप ने वाग मे भेजिया क्यू है ?"

राणी घवराई, "चालो म्हूँ ही था रे साथे मेला मे चालूं ।"

राणी तो झट रथडो जोवाय किरोड़बुद्धि सूं आगे आगे चाली ।

किरोडबुद्धि जाय अरज कीधी, "राणीजी ने मनाय ले आयो हूँ ।"

राजा देखे तो राणी रथ सूं उतर री क राणी तो आय राजा सूं लागी लडवा,

"आछो धोको दीधो म्हने । दूजो व्याव कररिया हो था तो पग देवा दू नी घर वारे ।"

राजा आप री सफाई देण लागियो पण राणी माने के ?

मिरत्युफल के अमरतफल ?

एक राजा हो उण रे एक सूवो पाळतू। राजा उण ने आत्माराम केय बतळावे। घणी ज मरजी मे। सोना रा पीजरा मे आत्माराम ने राखे। मन भावतो उण ने चुगो चुगावे। आत्माराम ही सोना री नेवरिया पैर छम छम करतो उड ने चालै। राजा पीजरो खोल वी ने बारे काढ आपरा हाथ पै बैठाय दे वी सू बाता करै। आत्माराम बाता घणी करे राजा रो मन राजी राखे। एक दिन समा जोग री बात डागळा पै राजा हाथ पै आत्माराम ने लियोडा बैठिया। भात भात रो मेवो वी ने चुगाय रिया। ऊपरे सूवा रो एक झुड उडतो थको निकळियो। आत्माराम ने सोना रा पीजरा मे मेवा मिस्ठान खावता देख, उडता थका सूवा रा झूड रो एक सूवो बोलियो,

"देखो, ओ सूवो बतरो भागवान है। खूब खावै, राजा री गोद मे खेले, किण रो ही डर ने भै। मजा मे सोना रा पीजरा मे रैवे।"

आ सुण दूसरो सूवो बोलियो, "किण रो भागवान है, करम फूटियोडो है। पीजरा मे गुलामी भुगतै। आपा शाजाद हा वो वन्दीखत मे है। आपा आछा बागा बावडिया फिरा। मन मे आवे जठे बैठा। लाखा जात री वनस्पति खावा जिणा रो तो इण नाम ही नी सुणियो व्हेला। आपा कजळी वन चाल रिया हा वठे सवा लाख परवत घूमाला। देस

दिसावर री सैल कराला। आपा रो वस वधेला। ओ राजा रो सूवो तो निरवस मरेला।"

उडता सूवा ने यूं वात करता आत्माराम सुणिया। उण री आखिया में आसू आय गिया।

राजा पूछियो, "आत्माराम, थनै अस्यो काई दुख जो रोवणो आयो।"

आत्माराम उडता सूवा वाता कीधी जो राजा ने सुणाई। गळगळो व्हे राजा ने कही, "सीख वगसो तो म्हूं ही आ रे लारे कजळी वन री सैल कर आवूं।"

राजा कहियो, "जा, मन मे अमरखो क्यू राखे। पाछो कतराक दिना मे आवेला?"

आत्माराम दो वरस री सीख मागी।

सूवा रा झुड रे लारै आत्माराम ही व्हे गियो। कजळी वन रा झाडा पै वैठे। भात भात री वनस्पति खावे, सैला करे। आत्माराम ही एक सूवटी सूं व्याव कीधो। वी रे ही अंडा वच्चा व्हीया। वा ने दाणो चुगावे, सूवटी रे लारे उडै। आत्माराम हमेसा आ नीगे राखे के कोई अनोखी चीज देखूं तो राजा सारूं लेय ने जावू।

सूवा फिरता फिरता एक आवा रा पेड पै जाय वैठिया। उण गोड रा आवा खावे जो ही जुवान व्हे जावे। सारा सूवा जवान व्हे गिया।

आत्माराम सोची, "आ चीज राजा रे ले जावा लायक है। राजा ने ले जाय ओ आवो जीमाळं। वे ही जुवान व्हे जावेला।"

आवा री गुठली ने गळा रे बाध सूवा रा साथ सू राम राम कीधा। सूवटी ने बच्चा री भळामण दीधी। बच्चा रा लाड कर आत्माराम उडियो। आय राजा सूं मुजरो कीधो।

'राजा, आप सारूं एक अमोलक वस्त लायो हूँ, इण रा गुण सुणता ही आप रो मन राजी व्हे जाय।

गुठळी गळा सू खोल राजा ने दीधी, "इण ने जतना सू उगाय इण पेड रो आवो आप जीमजो जो जवान व्हे जावोला।"

राजा माळी ने बुलाय गुठली ने जतना सूं बावा ने दीधी। आवो उगियो अवै वी गोड रा माळी घणा जतन राखे। आबा रे मोड आया। राजा माळी ने हुकम देय दीधो के आबा रो पूरो जावतो राखजे। माळी रात दिन चौगसी राखे। माळण रे भाई रो ब्याव। माळण माळी ने कहियो,

"म्हारे भाई रे जान मे जावो।"

माळी कहियो, 'म्हूँ किण तरै जाय सकू। आबो पाकवा ने आयो है। डाळ पकियो आवो ले जाय राजा रे निजर करू ला। अतरा दिन आवा ने सेवियो। अवै इनाम पावण रो दिन आयो जद थू कैवे म्हारा भाई री जान मे जावो।"

माळण जिद् कीधी, "था सभाळ राखो जसी म्हूँ ही राख लू ला। रात ने अठे सोय जावूंला, आगणे नी पडवा दू। डाळ पकियो आवो जाय निजर कर दू ला।"

माळण री जिद् आगे हार माळी घणी घणी भळामण दे, जान मे गियो।

माळण राते आंबा रो पैरो देवा ने आई। माळण ने तो आयगी नीद, डाळ सू आबो टूट नीचे खिरियो। नीचे एक काळो नाग बैठो जो आवा रो रस पी पाछो आपरो जहर उगाळ दीधो। नाग तो जुवान व्हेगियो। माळण आंबा ने फूला री छाव मे घाल, राजा रे निजर कीधो।

राजा राजी व्हे आत्माराम ने पूछियो, "आत्माराम जुवान व्हे जावू ला ? खाय लू ?"

आत्माराम कहियो, "जरूर अरोगो, अवार आपने जीमता ही तासीर दीख जावेला।"

राजा जीमवा लागिया जतरेक मतरी कहियो, "गोड रो पेलो फळ है इण ने तो दान कराय देणो चावे।"

राजा एक बूढा बामण ने फळ रो दान कर बठे ही ज बैठाय ने खुवायो देखाण वो जुवान व्हे के नी। आबो चू खता ही बामण तो मर गियो। राजा ने घणो दुख व्हीयो,

"देखो आत्माराम म्हारे साथे कस्यो धोखो कीधो। कतरा आराम सू म्हे इण ने राखियो अर इण तो म्हने मारवा री कीधी।"

राजा रा खुसामदिया आत्माराम रो गळो मरोड मार दीधो के ओ हरामखोर है, राजा ने मारवा ने जहरी आबो लायो।

अबै सगळा ही जणा डरपे कोई आबा रा फळ रे हाथ नी लगावे। सहर मे एक बूढ़ो धोबी रैवतो, उण ने बेटो अर बहू दुख देवे। एक दिन बेटा री बहू कहियो,

"आछा आछा सिनख मरे पण ओ खापो मरै न माचो छोडे ।"

आ सुण धोबी ने अवखाई आई । राजा रा वाग में जेहरी आवो है जाय ने खाय ने परो मरू । आवो तोड ने ज्यूं ही धोबी खाधो वो तो जुवान व्हे गियो । राजा ने मालूम व्ही । आबो तोड न आप खाधो, मूंडा आगला ने खुवाया सगळा ही जुवान व्हे गिया ।

अवै राजा ने घणो पछतावो आयो । आत्माराम म्हारी कसी मोटी चाकरी कीधी ने म्हें वी ने मराय न्हाकियो ।

राजा घणो पछतायो । पिण पिछताया काई व्हे ।

जग कैता जगमाल ?

पाटण रा पट्टा मे तेजसी तवर नाम रो एक रजपूत। वो नामी धाडायती। दूरा दूरा ताई धाडा न्हाके। उण रा नाम सू कोडीधज अर लखतपी कापे। धन वाळा रे अठे धाडो न्हाके। धाडो न्हाक धन ने गरीब गरूवां ने वाट दे। चारणा ने रीझा कर दे। वामणा री वेटिया ने परणाय दे। कलाळ, सुनार अर सेठा ने तो वो देखिया छोडे नी, धाडा न्हाकिया ही रे। गरीवा री प्रतपाळ करे।

अहमदावाद पे वादसा मेहमूद वेग रो राज। उण रे हाथीखान नाम रो पठाण। मेहमूदवेग, हाथीखान ने पाटण रो सूवेदार वणायो। तेजसी तवर रे अर हाथीखान रे आपस में तरवारा वाजती रे। एक र तेजसी धाडो न्हाक आयरिया हा। वे थाकियोडा है। दूरा रा चालियोडा आय रिया हा। हाथीखान तेजसी तवर ने घेर लीधो। आप रा घोडा उण माथे ऊर दीधा। घडी दो एक तो वेढ व्ही। तेजसी तो आप रा साथी सूधी काम आय गियो। उण रा तीन सौ रजपूत मारिया गिया।

वैणार री वात। तेजसी भूत री जून पाई। वारा साथ वाळा तीन सौ आदमी ही भूत री गति पाई। तेजसी री असतरी आप री वेटी लै पीहर परी गी। तेजसी रो गाव उजड गियो। घर खाली पडिया। रात

पड़े ने तेजसी आप रा तीन सौ ही- भूता ने लारे ले गाव में आवे। रात ने महफिल करे। खावे पीवे, दिन ऊगिया पेला पाछा परा जावे। भूतमाया सू डरपता कोई गिनख रात ने वठे व्हे निकळे नी।

एक दिन री वात। एक जोगीसर उण गैले व्हे निकळियो। साझ पडी। जोगीसर खाली पडियोडा घर देख रातीवासो लेवण ने तेजसी रा मेला में जाय आसण लगाय दीधो। घडीक रात गी। नगारा पे डंको पडियो। तेजसी सवारी कर गाम में आयो। जोगीसर देखे, आगे नगारो वाजतो आय रियो है। सिरदार, घोडा, सवार आयरिया है मसाला वळ री है। ढोली दूवा देयरिया है। घोडा हीस रिया है। तेजसी हाथी सवार है। भिस्ती आय चौक में छिडकाव कीधो। फरासा जाजम विछाई, पछेवडा लगाया, दलीचा विछाया, गादी मोडा लगाया। तेजसी गादी मोडा पे वैठियो हुक्को पीय रियो है। रसोवडा वाळा, रसोवडा रे हल्ले लागिया। वकरा कट रिया है। सूळा सेक रिया है, वाटिया घड रिया हैं। हल्ला-गल्ला व्हेयरिया है। जोगीसर आसण पे वैठो तमासो देखरियो, राम राम कर ग्यो। तेजसी री नजर जोगीसर माथे पडी। जोगीसर ने तेजसी हेलो पाडियो, "महाराज, अठे पधारो। डरपो मती।"

जोगीसर डरपतो डरपतो तेजसी कने गियो। तेजसी ऊ ची जगा जोगी सर ने वैठायो। वाता करवा लागिया।

तेजसी वोलियो,"वावाजी, आ था देखरिया हो जो सगळी भूता री माया है। म्हूँ तेजसी तवर हूँ। हाथीखान रा हाथ सू म्हूँ म्हारे साथ रा या तीन सौ ही रजपूता सूधी मारियो गियो। भगवान री इच्छा, म्हा भूत

गति ने पराप्त व्हिया। म्हें अगति ने गिया। म्हें सियाणा समझणा ने पूछियो के म्हारी गति किकर व्हे सके। वा कही के थारी मिनख जमारा री वेटी है उण रो व्याव कर कन्यादान दे तो थारी गति व्हे। जोगीसरजी, म्हारो ओ काम था कर दो। म्हूँ थाने एक सनेसो कैवू जो था जाय कैवो तो म्हारी गति व्हे जावे।"

जोगीसर बोलियो, "जरूर वच्चा। वता थारो सनेसो किण ने देणो है।"

"वावाजी, अठा सू कोस पचास दूरो महूवो गाव है। वठा रा धणी मल्लिनाथजी है। वारे वेटो जगमाल है वो म्हारी बेटी रे लायक वर है। दूजा री छाती अठे भूता रे आय ने परणवा री व्हे नीं। जगमाल जवा मडद आदमी है। था उण ने जाय म्हारो सनेसो कैय दीजो के था म्हारा सगा हो। अठे आय म्हारी बेटी ने परणो जो म्हारी गति व्हे जावे।"

जोगीसर सनेसो केवा रो हूकारो भर सोय गियो। सूता लगा ने भूत उठाय महूवा गाम रे दरवाजा माथे सोवाय आया। जोगीसर री आख खुली। पूरव में सिंदूरी फूट री। पछी चू चू कर रिया। मिदरा मे झालर नगारा वाज रिया। घरा मे घट्टिया फिर री। बिलोवणा रा धमडका सुणीज रिया।

जोगीसर पूछियो, "ओ कस्यो गाम है?"

"महूवो गाम।"

"कस्यो? सरवणी को?"

"हा।"

जोगीसर सिनान ध्यान कर, पाठ पूजा कर, तिलक छापा लगाय जममालजी सू मिलण ने गियो।

जगमालजी दरवाजे वैठिया हा। जोगेसर जाय 'नमो नारायण" कीधी,

"वेटा, तुमकू कुछ कैणा है।"

"वोलो महाराज।"

वेटा, तेजसी तवर का नाम सुणिया है ?

हा, महाराज सुणिया क्यू नी। नामी रजपूत हो। हाथीखान रा हाथ सू साथ सूधी मारियो गियो। अवे सुणा हा के उण री गति व्ही कोनी। भूत गति ने गियो कैवे।"

जोगीसर वोलियो, 'तो उण तेजसी तुमकू एक सनेसा मेरे साथ कैवाया है।"

जागीसर सनेसो सुणायो।

जोगीसर ने जीमण पाणी कराय कवरजी सीख दीधी।

तेजसी रा सनेसा री वात किण ही आगै कही नही। दो चार दिन आडा घाल आप रा घोडा पे चढ तेजसी रे गाम चालियो। जाय तेजसी रा महला मे वैठ गियो। भूता रे आवण री वेळा व्ही। नगारा पे डको पडियो। मसाला जुती। ढोली दूवा देय रिया है। तेजसी सवारी कर

आयो। महलां में आवता ही जगमाल बैठियो दीखियो। तेजसी बाथ घाल मिलियो।

"कवरजी, म्हने थारो ओ ही भरोसो हो। वाई ने परण म्हने गति घालो।"

भूतां ने कहियो, "जावो, वाई ने उठाय लावो।"

भूत तो पलक में वाई ने उठाय लाया। भूतणिया आई। व्याव रा सारां नाणा नुकता कीधा। वन्याक बैठायो। पीठी कीधी, तेलवान चढायो, मोड वाधियो। कंवरजी रे लारे गठजोडो वाध फेरा फराया। तेजसी कन्यादान दीधो। हथळेवो छोडावा लागिया जद तेजसी, जगमालजी ने पूछियो,

"कवरसा, हथळेवा मे आप मांगो जो दूं।"

जगमालजी वोलियो, "म्हनें वीनणी ने तो देखवा दो या मिनख है के भूतणी। रजपूताणी सू दो वात कर लू तो आपने जुवाव दूं।"

तेजसी कहियो, "घणी चोखी वात। कवरजी ने महलां पधरावो।" भूतणियां तो वधावा गावती कंवरजी ने ऊपरे माळिया में लेगी।

कंवरजी जावता ही पूछियो, "था मिनख हो के भूतणी ?"

तवरजी तो झट ऊठ कवरजी सू मुजरो कीधो,

"मिनख हूं। नानेरे ही। म्हनें तो अवार या ऊठाय अठे लाय परणाई है।"

कवरजी उणां सू वात कर घणां ही राजी व्हीया। नीचे जाय तेजसी ने कहियो,

"आप रा परताप सू अबार तो म्हारे सब कुछ है। कांई नी चावे। पण रजपूत रो बेटो हूँ। आटा घाटा, काम पडता ही रेवेला। म्हूँ तो आ चावूं के म्हारे कदे ही मोटा राड झगडा रो काम पडै जद आप रा ये तीन सौ ही रजपूत म्हारी मदत पे आय ऊभा रे। और काई नी मागू।"

तेजसी आप रा सगळा रजपूता ने भेळा कर कहियो

"जिण दिन जगमालजी थाने याद करे। ये हेलो पाडै "तेजसी रा रजपूता वेगा आव जो" उण वखत था यारी मदत पे परा जाव जो। ताळ लगा जो मत। जो नीं गियो वो म्हारो लूण हराम व्हेला।"

सगळा ही भूता छाती रे हाथ लगाय जगमालजी ने भरोसो दीधो, "आप रे हेलो पाडता ही तीजी ताळी पेलां आप कनै आय ऊभा रेवाला।"

तेजसी री तो गत व्हेगी।

जगमालजी तवरजी ने लै महूवे आय वाग मे उतरिया। घरै केवाई परण न आयो हूँ। वधाय ले जावो। घणा हरख उछाह सू लुगाया आय, वधाय, बीद बीदणी ने घरे लेय गिया।

जगमालजी तो सुख सू राज करै। परजा री चौगस राखे। पाटण रा सूवेदार हाथीखान री निजर महूवे री तीजणिया पै एकर पडी।

उण री आख में महूवा री तीजणिया गडगी। हाथीखान आपरा जासूसा ने महूवा मे लगाय दीधा के कोई मोको देखो तो म्हने आय खवर दीजो।

वैणार री वात कवरजी तो वीकमपुर भाटिया सू वैर लैण ने गयोडा हा। सावण री तीज रो तिंवार आयो। हाथीखान रा जासूस देखियो। अबे औसर चोखो आयो। आय हाथीखान ने कहियो,

"महुवा रा जवान सारा वीकमपुर चढियोडा है। सावण री तीज रा तिंवार पे तीजणिया सारी भेळी व्हेला। मोको आछो है। आप चालो तो चालो।"

हाथीखान तो झट ५०० घोडा सू चढियो। महुवा सू २–४ कोस दूरो आय ठैरियो। तीज रे दिन सारा गाम री तीजणिया तीजा पौरा रा तीज रै लारै निकळी। तीजणिया लूहर गाय री ही भेळी व्हैं री ही, हींडा हीड री ही। अचाणचक हाथीखान उणा पै टूट पडियो। १४० तीजणिया ने पकड लारै लेगियो। गाम रा मिनख हाको कर रेगिया। कवरजी वीकमपूर सू पाछा आया। गाव रा मिनखा वाहर घाली। जगमालजी सुणी तो ऐडी सू लगाय चौटी तक लाय लाय लाग गी।

"म्हारा गाम सू हाथीखान तीजणिया ने उठाय लैगियो, धिक्कार म्हारो जीवतो रेवणो।"

हाथा रे वटका भरे पण व्हे काई? कवरजी तो वी ज वखत माथा री पाग उतार न मेल दीधी। माथे रूमाल वाध लीधो। वां प्रण

कीधो के जठा ताई हाथीखान सूं इण रो आटो नीं लू, माथे पाग नीं वांधू । आखडी लीधी के आंटो नीं लू जतरे कपडा धोय न पैरूं नीं, हजामत कराऊ नी ।

असी करडी आखडी जगमालजी लीधी । जगमालजी ने वात याद आवे जदी रोटी गळे नीं उतरे । सोवे तो विछाणो काटा ज्यू लागे । आधी रात री नीद जाग जावे । रात दिन ओ ही विचार रेवे के कदी आटो पाछो लू । आटो नी लू जतरे जीवणो अकारथ । भौपजी हूल वारो परधान । कवरजी रो यो हाल भौपजी हूल देख ने सोचियो के कंवरजी तो घणी करडी आखडी लीधी है । आटो लेणो कस्यो सोरो ? आटो निकळतो व्हे जू ही निकळे । भोपजी एक तरकीव सोची । जगमालजी रे अठे २५० घोडिया वच्चा दीधा । जा में सू आच्छा देख पच्चीस वछेरा भौपजी छाटिया । एराकी घोडा सू उपनिया वछेरा ने न्यारा टाळ लीधा । अवे उणा ने रातव देणी माडी । घी अर घपाऊ धान देवे । वछेरा अपट चरे । दोई वगत दूध पावे । भोपजी वछेरा ने अतरो खवायो के वछेरा री नाळया ताई घी उतर गियो । वछेरा थोडा ही दिना में आछा मोटा, मजवूत व्हेगिया । भोपजी हूल पूरा भरोसा रा, आछा घोडा काढवा वाळा आदमीया ने वोलिया के "या घोडा ने था वणाओ । किण ने ही कानो कान खवर नी पडे । कवरजी ने ही ठा नी पडे । आपा हाथीखान सू अस्यो आटो ला के प्रथवी पे आपणो नाम रे जावे ।"

घोडा फेरवा लागिया । घोडा ने अस्या फेरिया के कांई वात पूछणी । रोजीना साठ कोस जावे ने साठ कोस पाछा आवे । अस्या

घोडा ने जमाया। घोडा ने अमदावाद रा ही ज गैला पे जमाया। अमदावाद वठा सू १४० कोस दूरो पण दो दिन मे अमदावाद जाय पाछा आवे। भोपजी आपरा दो आदमी अमदावाद छोडिया ने कहियो,

'मौको देखो ने म्हनें खवर दीजो। हाथीखान तो सूवेदार ही है पण आपा उण रा घणी सू आंटो ला जद आपणी वात रेवे। जस्यो व्ही आपणी साथे करयो वीं सूं सवाई करा जद आपणी वात है।"

चैत रो मीनो आयो अमदावाद मे गणगौर निकळे। घणो उछव व्हे। मेहमूदवेग खुद सवारी मे आवे। उण री कवारी वेटी गीदोली गणगौर रे लारे तीजणिया माथे आवे। जासूसा जाय भोपजी ने कहियो,

"मौको अवे है वदलो लेणो वे तो लो।"

भोपजी तो किण ने ही काई नीं कहियो। पच्चीस ही वछेरां रा सवारां ने लेय अमदावाद जाय पूगिया। तीज रो दिन आयो न गणगौर पाणी पीवा ने किला सू वारे निकळी। सैंकडा लुगाया लारे, ढोल नगारा वाज रिया। लुगाया गीत गाय री गणगौर री मूरत रे लारे लारे, वादसा रा आदमी चाल रीया। वादसाह री वेटी गीदोली पालकी माथे सवार व्हे गणगौर ने पाणी पावा ने चाली। भोपजी दूसरा सवारा ने कहियो आगती पागती थोडा थोडा दूरा उभा रे जाओ। चार नामी सवारा ने आपणे कने राख भोपजी चालिया। पालकी सूं थोडी दूरी री ने भोपजी अस्यो मिस कीधो जाणे घोडो उणा सू रूक कोनी रीयो व्हे। घोडा ने पाछां पगा चलाता चलाता ज्यूं ही गीदोली री पालकी कने पूगिया,

एकदम उछळ ने गीदोली रा बावट्यो पकट घोडा पे बैठाय लीधो।

हाको व्हीयो, "अरे अरे।" तरवारा काढे काढे जतरे तो घोडो फोज फाटा ने चीरतो बारे निकळ गियो। जाता जाता भौपजी हेलो पाडियो,

"म्हूँ जगमाल रो रजपूत हूँ। म्हारा महुवा गाव सू था रो हाथीखान तीजणिया उठाय ले गियो जिण रो आटो लेर जाय रियो हूँ। म्हारा गाव सूं था तीजणिया ने लाया जदी म्हा कोई हा नी। था चोर न म्हारी लुगाया ने लाया, म्हा थारा अतरा सिपाहियां रे देखता थका, था री सायजादी ने ले जाय रिया हा। जो छाती वाळो व्हे लारे आवजो।"

लगाम खेंचता ही वे वछेरा रोज रा जमियोडा नटाटूट भागा। बादसा रा असवार सस्त्रा सू सजियोडा घोडा पे चढियोडा हा जू रा जू लारै व्हे गिया। भौपजी रा घोडा ने अे काई पूगता? बादसाह रे अठे ठाणा रा वधियोडा घोडा, घणा दिना सू मेहनत नी कीधा लगा जो कोस चारेक एक साम में दौडिया न हाफवा लाग गिया। पसीना म तर व्हे गिया। मू डा मे सू झाग पडवा लाग गिया। घोडा ने थाकियोडा देख फौज ऊभी रेगी। बादसाह करे तो काई करे रीस आय री। पग पटक रियो पण मजबूरी।

वठी ने महुवा में गणगोर री सवारी कर जगमालजी चढिया। गणगौर रो घणो जापतो कर राखियो। दूध रो दाभियो फूक फूक ने छाछ

पीवे। जगमालजी तीजणिया रे घणो जापतो कर सवारी कीधी। सवार व्हीया ने चारी आडी नजर न्हाक ने पूछियो,

"भोपजा कठे ? दीखे नी ! काई बात है ?"

चोवदार कहियो, 'हुकम ! दो तीन दिना सू कठे ही बारे गियोडा है '

"कोई जरूरी काम व्हेला, आ जासी।"

आ कै ने कवरजी कोई ध्यान दीधो नी। गणगोर री सवारी कर घरे आया। चौथ रे दिन गणगौर ने भोळावा ने पधराई। जगमालजी जापतो कीधो। गाव सूं पाछी गणगोर ने पधरावे। अतराक मे देखे तो दूर सू धूळा रो घुघट उडतो आय रियो। जाणिया फेर कोई कुवद नी व्हे जावे। तीजणिया आगे घोडा री डोरी लगाय, तरवारा काढ़ कवरजी ने उणा रा आदमी ऊभा रै गिया। नजीक आया ने देखे तो भौपजी। भौपजी झट घोडा सू नीचे कूदिया। मुजरो कीधो। गीदोली ने उतार आगे कीधी।

"अे मदावाद रा बादसाह मेहमदबेग री बेटी हाजिर है। आपणी तीजणिया ले गिया जिण रा आटा मे, रावळ जी रे भजन रा प्रताप सू, भरी सवारी में सूं सगळा रे देखता आखिया लेन आयो हूं।"

कवरजी तो बाग बाग व्हे गिया। आप रे पैरवा ने गळा मे मोतिया री माळा ही उतार भौपजी रे गळा में पैराय दीधी। आपरी सवारी रो घोडो हो उण पे घणा मान सू भौपजी ने बैठाय दीधा। जगमालजी हुकम दीधो,

"पालकी लाओ, म्हारे आगे आ। सवारी मे गीदौली ने ले महला चालो। गीतणिया ने हुकम दीधो के म्हारो ने सायजादी रो गीत गावो।"

तीजणिया वी ज वगत गीत बणाय न गायो।

आगे आगे गीदौलणी
पाछे जगमाल कवर
धीरा रो ए जगमाल कवर
मारो छैल रूस्यो जाय ए गीदौलणी।

उण दिन सूं आखा राजस्थान में गणगौर भौळावा रे दिन गीदौली रा गीत गावा लाग गिया। तीजणिया इण गीत पै घूमर लेवे। गीदौली ने महल में लाया ने रणवास मे पुगाई।

गींदौली गुजरात सूं असपत री धी आण,
राखी रग निवास मे थें जगमाल जुवान।

अर्व अहमदावाद रो वादसाह मेहमदवेग भारी फौज ले चढ़ियो। हाथीखान ही उण री बाईसी लायो। सोरठ री, पचाळ, री सारी फौज लेन मेहमदवेग महुवा पे आयो। महुवा के भडे आय डेरो दीधो।

कंवरजी तीन चार हजार घोडा भेळा कीधा। जगमालजी सोचं। वादसाह री फौज मोटी है उण सू खुल्ला लडाई मे आपा जीत नी सका। आज तेजसी रा रजपूता सू काम लेवणो है।

आज वे आडा नीं आवेला तो फेर कदी। आवेला।"

भूता सारूं लापसी रंधाई, मणावध घूघरी रधाई। दारू री तूंगा भराय दीधी। अमल कसूंवा री कुडिया भराय दीधी। दो घडी रात गी। जगमाळजी तीन ताळी दीधी,

"तेजसी रा रजपूतां वेगा आवजो। थारी वेळा आई है।"

कैतां ही ताळ लागा तीन सौ ही रजपूत आय ऊभा रिया। भूता ने दारू पायो, कसूंवा री मनवारा दीधी। भूता पेट भर खारवजणा कीधा। कसूंबा में अर दारू मे मस्त व्हे भूता तरवारा हाथा मे लीधी।

जगमालजी कहियो, "सिरदारा, म्हारी एक अरज है। था तरवार रो वार करो जद "आ जगमाल, री तरवार" केवता जाजो न वार करता जाजो।"

भूत तो अमला में आंधा व्हीया थका फौज पे टूट पडिया। 'आ जगमाल री तरवार' लारे रो लारे झटको। हाथी, घोडा, मिनखा रा माथा टूटता जावे। जठी ने सुणे जठी ने ही 'जगमाल री तरवार'।

बादसाह री फौज पे वा रीठ पडी के फौजा रा पग छूट गिया। बाईसी भागती निजर आई। जीव ले न भागा। लारे भूत 'आ जगमाल री तरवार' आ 'जगमाल री तरवार' वोलता ने मारता कोस दस टिपाय दीधा।

बादसाह री फौज रा आदमी अहमदावाद मे वळ कैवा लागिया, "आो तो अजब तमासो देखियो। जठी ने सुणो वठी ने ही जगमाल री तरवार।"

लागिया। जतीजी मतर पढता जावे वा ने वळ वाकळ देता जावे। छोटा छोटा ने तो वळ वाकळ देय दीघो। अबे मोटो प्रेत लप लप जीभ काढतो 'लाव लाव' करतो उठियो। उण ने देख जतीजी रा होस गुम व्हे गिया। भूत तो वळ मागवा ने हाथ माडियो,

'कै तो म्हारो बळ ला नी तो थारो भख लू।"

जतीजी ने संपट नी बधियो भूत तो वा ने खाय गियो।

अठी ने कवरजी जतीजी री वाट नाळे। जतीजी आया नी तो कवरजी ने सोच लागियो। मन में सोच कर रिया पण किण ने ही केवा ज्यू ही नीं वात करे तो काई करे।

एक दिन व्हीयो दो दिन व्हीया। जतीजी रा गुरूजी देखियो चेलो गियो कठे। वा ने सोच आयो, "कठे ही मतर ततर करतो फस तो नी गियो है। उण रे ने वीकानेर कवरजी रे हेता घणा है जो देखा चाल ने कवरजी ने पूछा वे जाणता व्हे तो।"

गुरूजी आय ने कवरजी ने पूछिया, "म्हारो चेलो दो दिनां सू दीखियो नी। कठे गियो। आप जाणता व्होला।"

कवरजी छाना माना रिया, वोलिया नी तो गुरूजी ने वैम पडियो। कोई वात है जरूर। वा खोद ने कवरजी ने पूछी,

"व्हे जो वात वतावो। छिपायां सू कांई फायदो।"

कवरजी वीती जो बात सगळी गुरूजी ने की, "मसाण जगावा ने तो वे

गिया जो जाणूं, पछे कांई व्हीयो जो खबर नी।"

"बस, व्हे गियो खतम। वो मारियो गियो। म्हूं जावू, मसाण जगावू।"

कंवरजी कहियो, "म्हूं ही लारै चालू।"

जतीजी बोलिया, "मसाण जगावणो कोई सोरो नी है। काठी छाती व्हे तो लारे आवजो।"

कवरजी लारै व्हे गिया। गुरूजी जरूरी पूजा री सामगरी लीधी। मसाणा मे दोई जणा पूगिया। कवरजी ने तो कार घाल वैठाय दीधा, "आप वैठा वैठा तमासो देखो।"

अवे गुरूजी मतर पढणो सुरू कीधो।

बावन भूत कलकारी करता उठिया। आप आप रो वळ वाकळ सगळां ने दीधो।

अवे 'लाव लाव' करतो मोटो भूत परगटियो,

"ला ला म्हारो वळ वाकळ ला।"

जतीजी बोलिया, "पेला म्हारो चेलो ला। पछे थारो वळ वाकळ ले।"

भूत नट गियो, "कस्यो थारो चेलो। उण रो तो म्हें भख लेय लीधो। कै तो म्हारो वळ बाकळ ला नीं तो थारो ही भख लू।"

"मान जा! म्हारो चेलो लाय दे नीं तो थनैं भसम कर दू ला।"

गुरूजी तो ेस में आय मतरियोडा पाणी रो छांटो भूत पे न्हाकियो। पाणी रो छाटो लागता ही भूत बरडायो,

'अरे मत मार, मत मार। थारो चेलो लाय दू ।"

"ला, म्हारो चेलो नी तो दू छांटो।"

भूत तो जतीजी ने ऊगळ बारे न्हाक दीधो।

"ले थारा चेला ने, अबै छोड म्हनें।"

गुरूजी बोलिया, "म्हारो एक काम कर पछे छोड थनें।"

"बोल, काई काम है थारो।"

"वसीकरण काजळ पाड दे।"

भूत आप री पगथळी ऊची कीधी। जतीजी दीवो आळ पगथळी पे काजळ पाडियो। काजळ री पुडकी बाध जेब मे घाली। भूत ने वळ बाकळ दे सतुस्ट कीधो।

गुरूजी, कवरजी ने अर जतीजी ने ले घरे आया।

गुरूजी पदमसिंघजी ने पुडकी दे कहियो,

"इण काजळ रो थोडो सो अस उण लुगाई रे माथा मे पूगणो चावै। काजळ लागता ही था कनें भागी आवेला।"

कवरजी पतो लगायो खतराणी री हवेली मे कसी नायण जावे। उण नायण ने बुलाई। एक मोर हाथ में दीधी, "माथो गूथवा ने जावे

जदी इण काजळ ने चोटी में घाल दीजे।" नायण तो मोहर ले मुळकती थकी घरे गी। खतराणी एक दिन मायो धोयो। नायण ने बुलावो भेजियो। नायण आय कंवरजी ने केयगी,

"आज म्हूं खतराणी रे हवेली जाय री हूं।"

नायण खतराणी रो माथो गूथवा लगी। चतराई सूं काजळ ने केसां री चोटी नीचे दवाय दीधो। काजळ रो चोटी मे पडणो व्हीयो खतराणी रो जीव तो और रो और व्हेगियो। जठी ने झाके वठी ने पदमसिंघजी दीखे। अधूरा गूथियोडा माथा ने छोडाय ऊभी व्हेगी। जीव ने रोके तो रूके नी। पदमसिंघजी री हवेली कानी भागी। "कवरजी कवरजी" करती पदमसिंघजी री हवेली में चढगी।

आगे कवरजी सौ पचास मिनखा रो दरीखानों जोडिया वैठिया।

खतराणी तो कवरसा कंवरसा करती ऊपरे चढी। उण ने कंवरजी सिवाय काई दीखे ही ज नी।

कवरजी पूछियो, 'थू कुण है। अठे किण तरे आई ?"

खतराणी वोली, "आप कने ही आई हूं आप सू वात करणी है।"

कवरजी वोलिया, 'काई वात करणी है ? म्हूं थनै जाणू नी ओळखूं नी।"

खतराणी तो वसीभूत व्ही थकी, जीव हाथें नी हो जो नी केवा री वातां कैवा लागी।

कवरजी कहियो, "राम राम ! थू कसी वातां कर री है। इण रो माथो फिर गियो दीखे। माथा में गरमी चढ़गी दीखे। अरे, पाणी रा घडा भर इण रे माथे कूढो।"

हाजरिया दौड पाणी रा घडा उण रे माथा पे कूढिया। पाणी रे लारे काजळ चोटी सू वैय गियो ने खतराणी ने होस आयो। सरम सू जमीन मे गडगी। लाजा मरगी। कवरजी ने तो आप री वात राखणी ही और करणो काई हो।

वा कहियो, "कोई वात नी। थू अठे आई है तो म्हारी वैन है।"

उण ने वैन वणाय साडी कापडो दे सीख दीधी।

कवरजी देखियो ओ काजळ तो घणो परभावकारी। कदै ही गफलत सू किणी रे माथा रे लाग गियो तो गज़ब व्हे जावेला। इण ने कोई असी जगह न्हाक दू जठे किण रे ही नी लागे।

एक दाण कवरजी ने कठे ही दूरी मुसाफिरी मे जावणो पडियो। वां काजळ री पुडकी साथे ले लीधी। वारा ने वारा चौईस कोस रा उजाड मे उणा ने एक कुवो दीखियो। मन मे सोची के ओ ऊडो कुवो है ने नजीक कोई मिनख मानवी नी। व्हे ने व्हे इण कुवा में काजळ ने गेर दू। पुडकी खोल ने कुवा मे काजळ ने उडाय दीधो।

भाग जोग री वात। कुवा में एक पोखता वैठी। पोखता रे माथा पे जाय वो काजळ पडियो। काजळ पडता ही पोखता तो वस में व्हेगी। कवरजी रो हाथ पकड लीधो।

कवरजी पूछियो, "थू है कुण ?"

"म्हूं पोखता हूं। था वुलाई ज्यूं आई हूं। थारे विना म्हनें काई नी दीखे। म्हनें कोई मानवी नीं देख सके। म्हूं चावे जठे जाय सकूं हूं। अवे रोजीनां सांझ पडियां थारे कने आवूंला।"

रोजीना सांझ पडे पोखता तो सोना रो थाळ ले आय जावे। जीमे चू ठे दिन ऊगां पाछी परी जावे। सोना रो थाळ वठे ही ज छोड जावे।

कवरजी रे घरे तो लिछमी पावणी व्हेगी। रोज सोना रो थाळ लावे।

पोखता पदमसिंघजी ने कहियो, "म्हूं था सू मिलू इण वात री किण ने ही खवर नी पडणी चावे। था किण ते ही म्हारी वात के देवोला तो उण दिन सू ही म्हारो आवणो वंद।"

धीरे धीरे आ सोना रा थाळ री ने कंवरजी रे साझ पडिया वारे नी निकळणे री वात सब जगा फैलवा लागी। मिनखा ने वैम होवण लागियो के ओ सोना रो थाळ रोजीना कठा सू आवे। रोज साझ पडे ने कवरजी माळिया रा किवाड वद क्यूं कर लेवे। साझ पडिया पछे कदी महल वारे निकळे नीं ने किण सूं ही मिले। महल रो आडो वद रैवे। कोई आवतो दीखे नी कोई जावतो दीखे। सव जणा अचंभा में पडिया के आ वात काई है। मिनख पूछण लागिया,

"अे सोना रा थाळ रोजीना कठू आवे।"

पण कवरजी किण ने ही ओ भेद नीं वतावे। सव ने टाळ दे। वठी ने

राणिमा तग करण लागी। कवरजी ने रावळा नें पधारण री अरज करवा लागी। पण कवरजी तो सुणी अणसुणी कर टाळ दे। राणिया अर दूजा मिनखां जाय कवरजी री मां सू कहियो के आप इण रो भेद कवरजी ने पूछो। मा घणो पूछियो पण कवरजी हमेसा टाळता रिया। पण एक दिन तो मा जिद ही कर बैठ गिया।

"थां कने कुण आवे आ बतावो जदी आज रोटी खाऊ। नितर खाऊ नीं।

कवरजी ने मां री जिद देख रोस आय गियो। रीस में कवरजी रा मू डा सू निकळगी, "कुण कुण काई आवे पोखता आवे।"

बस उण दिन सू ही पोखता रो आवणो बद व्हीगियो।

ऊमर भर कवरजी पछतावता रिया।

सोबते असर

एक लाखी वणजारो अर वणजारी गैले चाल रिया। पोठियां तो आग लदगी। वणजारो अर वणजारी हाथी पे बैठा जाय रिया। कांकड मे एक अेवड चर रियो। गुवाळियो चराय रियो। गुवाळिया ने तिस लागी जो पाणी रा नाळा में मूंडो लगाय पाणी पीवा लागियो।

मूंडो अडाय पाणी पीवता गुवाळिया पे वणजारा री निजर पडी। वणजारे गुवाळिये ने आगळी सूं वतावते वणजारी ने कहियो,

"अो तुखमे तासीर है।"

वणजारी वोली, "तुखमे तासीर नी, सोवते असर है।"

वणजारे जोर दे कहियो, "नी, अो तुखमे तासीर है।"

"तुखमे तासीर किया हो सके ? गुवाळियो कोई जिनावर री औलाद तो है नीं। अो जिनावर तो है नी, अो तो जिनावरा रे साथे रैवे जो वा री सोवत सू जिनावरा री नाई पाणी पीवणो सीख गियो। जिनावर री नांई पाणी में मूंडो घाल पाणी पीवे अो सोवत रो असर है।"

वणजारे जिद कीधी "नीं, तुखम री तासीर है। अो गुवाळियो तो जिनावरा रे भेळे रैवतो जिनावर व्हे गियो। इण री अकल वुद्धि सग

जिनावर जसी है।"

वणजारी वोली, "जिनावर किया व्हे गियो ? ओ ही मिनख रो जायो मिनख है। इण ने ही आज कोई पढावे लिखावे, हुसियार करे तो ओ ही आपणा जस्यो ही सगळो काम काज करे, था रा ज्यू वैपार करवा लाग जावे।"

"वणजारी, काई वात कर री है। ओ ढाढो म्हारा ज्यू काम काज, वैपार करवा लाग जावे ?"

वणजारी ने ही वणजारा री अणू ती जिद पे रीस आयगी। वा वोली,

"थां रा ज्यू वैपार काई करवा लाग जावे, इण ने ही आछी सोवत मिल जावे तो था रा पे हुकमत करवा लाग जावे।"

"थारी सोवत मिल जावे तो थू इण ने काविल कर दे।" वणजारो चिढ़ ने वोलियो।

"क्यूं नीं ?"

"तो जा, इण ने काविल कर वता। म्हूं ही देखू, देखां थारो सोवते असर।"

आ कैय वणजारो तो वणजारी ने हाथी सू नीचे उतार, कांकड में छोड गैले व्हे गियो।

वणजारी वापडी अकेली, पण हिमत राखी। गुवाळिया कनै गी। गुवाळियो तो वी ने देखता ही एक र डरपियो। वणजारी तो मोना सू

पीळी व्हेय री। बणजारी, गुवाळिया ने बुचकारियो। गुवाळियो ही भैं छोड उण कनें जाय ऊभो रियो। बणजारी लारे लारे उण रे घरे गी। खावा पीवा ने बजार सू सामान मगायो। चोखी चीजा बणाय गुवाळिया ने खुवाई। गुवाळिये री कद खायोडी असी चीजा। वो तो बणजारी सू हिमळास करवा लाग गियो। बणजारी पाटी मगाय गुवाळिया ने पढावण लागी। नवा कपडा बणाय उण ने पंराया। मां बेटा ने सीखावे पढावे ज्यू बणजारी उण गुवाळिया ने सीखावे। थोडा दिना में पोथी बांचण लाग गियो। ऊठ बैठ रो सलीको आय गियो। बोलण चालण रो तरीको सीख गियो। बणजारी एक घोडो मोल लीधो। गुवाळिया ने घोडो चढणो सिखायो। घोडो चढणो तो वो झट ही सीख गियो। बणजारी गुवाळिया ने वाता सुणाय सुणाय दुनिया री घणी वाता सीखाय समझाय दीधी।

अबै गुवाळियो साफ कपडा पेरिया, न्हायो धोयो, घोडा पे सवार व्हे रोजीना राज दरबार मे जावे। राज दरवार मे ऊठवा बैठावा लागियो। घणी वाता समझवा बूझवा लाग गियो। साझ पडिया आखा दिन री वातां बणजारी उण ने पूछे। आछी वात करी व्हे उण री तारीफ करे। गलती करी व्हे उण री खामी समझावे।

एक दिन राजा सिकार खेलण ने गिया। घणां जणां राजा रे लारे सिकार में गिया। गुवाळियो ही आप रे घोडा पे चढ राजा रे लारे व्हे गियो। सूवर रे लारै लारै राजा दूरा निकळ गिया। दूजा जणा तो पाछे रै गिया, बिसराम लेण लाग गिया पण गुवाळियो राजा रे लारे रो लारे घोडो दौडाय ले गियो। साझ पडगी। गैलो भूल गिया।

घोडो थाक गियो। राजा घबराय गियो। पाछी ने नाळे साथ रा हजूरी कोई नी। खाली गुवाळियो दीखियो। राजा ने घणी रीस आई। जा ने मोटी मोटी जागीरा देय राखी है वे सगळा पाछे रैंय गिया। आप रा जीव रो सुख चावै। ओ विचारो गाव मे रैवणियो जिण री कोई चाकरी नी, तनखा नी घर रा घोडा ने दौडाय म्हारे लारे रो लारे रियो। गुवाळियो नीचे उतर राजा रा घोडा ने पकडियो। जीण उतार नीचे विछाय दीघो। राजा ने हवा घाल पसीनो सूखायो। राजा ने तिस लागी। गुवाळिया रे लारे वणजारी पाणी रो छागळो दे राखियो हो। छागळा मे सू पाणी री गिलास भर राजा ने पाई। राजा रो जीव सात व्हीयो। डबूसा मे सू चूरमा रा लाडू काढ़ राजा ने जीमाया। राजा ने गुवाळिये अरज कीधी,

"अ धारा में गैलो लाधे नी। आप थाकियोडा हो इण जीण माथे पौढ़ जावो। म्हूँ रात ने पैरो देवतो रैवू ला।"

नागी तरवार हाथ में गुवाळियो तो पैरो देण लागियो। राजा सोय गिया। दिन ऊगो घोडा पे जीण कस घरै आया।

राजा गुवाळिया री चाकरी पे राजी व्हे कहियो, 'इनाम माग।'

गुवाळिये कहियो, "घरे जाय, म्हारी मा ने पूछ अरज करू ला।"

घरे जाय वणजारी ने सारी हकीगत सुणाई।

वणजारी कहियो, "इण सहर रो डाणी वण जा।"

गुवाळिय आय राजा ने अरज कीधी, "घणी राजी हे तो इण सहर

रो डाणी म्हने वणाय दिरावो ।"

गुवाळियो डार्णा वण गियो । गाम कोटवाळी सिखाय दे । गुवाळियो तो डाणी रो काम धनाधन करे । मोटा मोटा वैपारी, माल आवे जावे जद डाणीजी री गरजा करे हाथ जोडे ।

वणजारी वोली, "देख, फलाणा नाम रो वणजारो इण सहर मे आवे जद थू उण रो डाण मत चूकजे । म्हने केवजे ।"

बरस छ महीना व्हीया । वो वणजारो आप री पोठिया रो माल वेच नवो भर इण सहर में आयो । सहर मे माल आवे उण मायें राज रो डाण लागे । वणजारो डाणीजी कने आयो । डाणी आय वणजारी ने कहियो,

"था नाम वतायो जो वणजारो आय गियो है ।"

वणजारी कहियो, "उण ने दो दिन फोडा घाल । डाण सोरे सांस मत चूकजे ।"

वणजारा रे आगे जावण री आगत । माल विगड रियो । डाणी सुणाई करे नीं । घवराय रियो । मन मे सोची डाणीजी रे हाथा जोडी कर, कोई देवा लेवी कर आपणो काम काढ । वणजारो डाणीजी रे घरे गियो । वणजारी मायने सू झाक री । उण ओळख लीधा वणजाराजी आय गिया है । डाणीजी पाटा पै वैठिया । वणजारो नीचे ऊभो हाथ जोड रियो,

"डाणीजी, म्हारा में रैम करो । डाण अतरो करडो मत लो । म्हारो

माल विगड रियो है ।"

अतराक में तो बणजारी आदमी भेज डाणीजी ने मांय ने बुलाया। बुलावो आवता ही माय ने जावा ने डाणी उठियो। गरज रो बावळो, बणजारो तो झट डाणीजी री पगरखिया हाथ में उठाई, डाणीजी ने पैरावा ने। बणजारा रा हाथ में पगरखिया देखतां ही तो आडो खोल बणजारी झट बणजारा रा हाथ सूं पगरखियां लेय लीधी,

"बस घणो ही व्हे गियो ।"

बणजारो देखे तो बणजारी ।

"अरे थू अठे ?"

"हा, देख लीधो सोबते असर ? ओ वो ही ज गुवाळियो है । ओ सोबत रो असर है के उण री आज था पगरखिया लाधा ऊभा हो ।"

अकलबंद सेठाणो

पाटण सहर में एक मोटो सेठ रे। मुनीम गुमास्ता हाली नवाली सारो ठाट पाट। आछी दूकाना चाले। एक दिन सेठ सेठाणी दोई वाता कर रिया। अेली पेली वाता करतां करता सेठ पूछियो,

सेठाणी, "आपा दोवा मायने सू अकलवंद कुण जियादा ?"

सेठाणी वोली नीं।

सेठ पाछो पूछियो, "वोलो नीं, आपां मायने सूं अकलवद कुण वत्तो है।"

सेठाणी वोली, "साची केवू के मन सु वावती केवू ?"

"मन सु वावती क्यू कैवो। साची व्हे जो कैवो।

"साच कहिया था नाराज तो कोनी व्हे जावोला ?"

"नाराज क्यू व्हूं। था सांच कैवो।"

"सांच पूछो तो था बिचै तो अकलवद म्हूं जियादा हूं।"

सेठ ने तो रीस आयगी। रीसायन वोलियो,

"जो थें म्हारे नाम जियादा अकलवद हो तो म्हें काम करू जतरो थें

फैंकिया। मुनीम गुमास्ता ने घर री, दुकाना री भळावण देय तीरथां चाली। सेठाणी चालती चालती सेठजी रैवता उण सहर में गी। वठे जाय भाडा रो घर लीधो। सात नामी भैंस्या मोल लीधी। भैंस्या ने आछो माल खुवावे। एक भैंस रो दूध काढ, दूजी भैंस ने पाय दे। दूजी भैंस रो दूध काढ तीजी ने पाय दे। तीजी रो चौथी ने पाय दे। यू करता छठी भैंस रो दूध सातवी ने पाय, सातवीं भैंस रा दूध ने जमावे। इण भात दही जमियो जिण रा सुवाद रो काई पूछणो। सेठाणी गूजरी रो भेख कीधो। घावळो पैंरियो। छायल ओढियो। पगा में खडाखूच मोजडिया पैंरी। हाथा मे चमचम करतो पीतळ रो चूडो पैंरियो, नाक में वाळी घाली, गळा मे वाडळी पैंरी। चतराम कोरियोडा कुलका में दही घाल, माथे मेल "लो दही, लो दही" करती सेठजी री हवेली कानी गी। आगे सेठजी वैठा जीम रिया। सेठाणी तो मचड मचड करती वारा कनै जाय दही री हाडी माथा सूं नीचे उतारी "लो, सेठजी, दही तो लो। घणो बढिया है।"

"पीसा बता, कै भाव देसी ?"

"पीसा काई है था जीमर देखो। पीसा तो था देवोला जो ही ले लूला।"

"पेला पीसा बोल जा। फेर रोळा करसी।"

सेठजी पीसा पीसा करता ही रिया। गूजरी तो झट थाळी मे दही परूस ही दीधो। सेठजी चाखियो। वट्टा री जात दही जमियोडो। भीनी भीनी दही में सू सौरम आवे। अस्यो दही के ऊमर में सेठजी कदै ही

चाखियो ही नीं। दही जीमता जाये ने सेठजी री निजर गूजरी माथे। जीम चूंट ने सेठजी पीसा पूछिया। गूजरी बजार भाव सू ही दही क्यूंक सूंघो बतायो।

"सेठजी, म्हारे देस में काळ पड गियो ज्यू अठे आया हा। म्हने पीसा तो कमावणा है नी जिनावरा ने जीवता पाछे घरँ ले जावणा है। था दे देवोला जो ही ले लूंला। थां रे अठे वधी वाघ दो। दही था ने इण सूं सवायो जीमाती रँवूला।'

सेठ हिसाब लगायो। वजार सू ओ दही सूंघो पडे। अतरो वढिया और जगा मिले ही कठे ? सागँ आ गूजरी कतरी फूट री है। इण सौदा में तो नफो ही नफो है कठे ही टोटो नी। गूजरी ने केय दीधो रोजीना आय दही दे जावो कर।

गूजरी रोज आछा सू आछो दही जमाय लावे। सेठजी ने जीमावे। वातां करँ। सेठजी रे अर गूजरी रे तो हेत वधगिया। यू करतां करता पाच छ महिना वीत गिया। सेठाणी रे आसा वध रँगियो। अवे सेठाणी सोची आपणो काम तो व्हे गियो घरँ चालां। वेटो के वेटी। भाग में व्हेला जो ठीक है।

गूजरी एक दिन सेठजी ने कहियो, "देस में मेह होणे रा समाचार आय गिया। म्हा म्हारे देस जाय रिया हा।"

सेठजी वोलिया, "थारो हिसाव कर ले।"

"हिसाव रो काई करणो। थां कना सू कांई पीसा लेवू। थां रो परेम

है तो म्हनें थां रा हाथ री मूदडी दे दो। था री सैनाणी म्हारे कनै रेवेला।"

सेठजी हाथ री मूदडी खोल गूजरी ने पेराय दीधी। सेठाणी भैंस्यां ने वेच दीधी। गूजरी रा गाबा उतारिया। आप रे देस आई। नवें महिने भगवान रे देवणो बेटो व्हीयो। सेठाणी री छाती ठढी व्हेगी। म्हें वात कीधी जो भगवान पूरी कीधी। अवे सेठजी ने पूछणो है कुण अकलवद है। आपणो कार वार चलावे, बेटा ने रमावे। सेठाणी आणद मे।

वठी ने सेठजी सोचियो, "नाराज व्हे रीस मे आपा अठे आय तो गिया पण पाछला काई हाल है। सेठाणीजी आप ने घणा अकलवद समझता हा जो कठे ही भूखा मर रिया व्हेला। चाला घरे चाला।"

सेठजी घरे रवाना व्हीया दस कोस दूरा रिया न आगे आदमी भेजियो घरे जाय खवर दे के सेठजी आय रिया है। सेठजी मन मे सोच रिया आगे हवेली में चूना रा लेवडा पड रिया व्हेला। सेठाणी कठे ही पीहर पडी व्हेला, मार धूळ धाणी घर री हालत व्हेरी व्हेला।

आदमी रे खवर लावता ही। सेठाणीजी आपरा मुनीम गुमास्ता नोकरां चाकरा ने सेठजी रे साम्हा जावा ने कहियो। सेठजी आया। तळाव रे माथे मुनीम गुमास्ता ऊभा ही ज हा। झट सेठजी रे नजराणा कीधा। जूना मुनीमजी ओळखाता जावे ओ वडी दुकान रो गुमास्तो है,ओ परली दुकान रो है ओ वो है, ओ वो है।"

सेठजी वाको फाडिया वारा नजराणा लेवे। अतराक में तो तळाव रा पा णीरो लोटियो भर एक गुमास्ते सेठजी रे आगे कीधो,, सेठाणीजी

तळाव बणायो उण रो पाणी निजर है।"

सेठजी ने सरम ही आयरी अर रीस ही आय री। आगे थोडाक चालिया न बाग आयो। माळी पळा री, पूळा री डाली सेठजी रे निजर करी, "ओ सेठाणीजी बाग लगायो उण रा ये फळ पूल है।"

सेठजी मन में तो लजाय रिया पण सोची और तो सगळो थोक करियो पण बेटो कठा सू लाई व्हेला। सेठजी तो हवेली में जाय सूधा सेठाणी कनें गिया। सेठाणी तो झट बेटा ने उटाय सेठ री गोद में दीधो।

सेठ रीस सूं रातो पीळो व्हे न पूछियो,

"बता, ओ बेटो किण रो लाई ?"

हाथ री मूदडी काढ सेठाणी, सेठ रा हाथ में दीधी,

"इण मूदडी वाळा रो बेटो है।"

मूदडी ओळख सेठजी लाज सूं पाणी पाणी व्हेगिया।

"सेठाणी मान गियो सांचे ही म्हारे नाम अक्कलवद थूं जियादा है।"

खुदाय बावलो

दिल्ली सहर में मुल्ला अबदुल्ला रै। दूजा मोहल्ला में सिपाई अल्लेदार रै। दोवा रे ही घर मे नातवानी। कोई कमाई नी। मुल्लो कमाई करवा ने चालियो। अल्लेदाद ही कमाई सारू निकळियो। आगले गाम में दोई भेळा व्हिया। दस्तपोसी व्ही। आप आपरा मोहल्ला बताया। दोई राजी व्हिया। दोई एक सहर रा बंसीवान जो रात भेळा रहिया।

बडी फजर रा आगे चालण ने दोई त्यार व्हीया। रात तो भूखा ही जा सूता। कनै खरची कोई हीनीं। परभात दांतण कर वहीर व्हेवा लागिया।

मुल्लो बोलियो "कमावण कू चले दोस्त अल्लेदाद, पण रात ही भूखा रिया अर फजर ही भूखा चालिया। आज रोजी कहा मिलेगी ?"

अल्लेदाद बोलियो' मियांजी, पईसो एक मेरे पास है, भूगडे ले आवो, वांट खावेंगे।"

झट मुल्लो बोलियो, "वाह वाह।"

एक पईसा रा भूंगडा ले आया। वाट ने खाधा। पाणी पीधो। अतराक मे एक कुम्हार आयो। वी आवतां ही बणिया ने कहियो, "म्हनें सौदो

सताव-सूं दे, देरी मत कर।"

"असी कांई आगत है ? दिन तो अबै ऊगियो है।"

"म्हारे बेटी री आज निकाह है जो सामान घरे राख कठा सूं ही मुल्ला ने लावणो है।"

सुणता ही अब्दुल्लो बोलियो, 'मुल्ला तो म्हूं हूं। क्यूं कोई मुल्ला कूं हेरे, म्हूं निकाह करा दूंगा।"

कुम्हार कही, 'वाह वाह, मियाजी म्हारा पे नाई बडी मेहर कीवी। नीं तं फोडा पडता।'

सौदो लेय रियो जतरे कोई जागीरदार गैले चलतो आय निकळियो। जागीर नवी ज मिली ही जो सिपाई राख रियो हो। अल्लेदाद ने महीनदार कर लेगियो। मुल्लो कुम्हार रे साथे वहीर व्हीयो। दोई दुआ सलाम कर रवाना होण लागिया जद अल्लेदाद कहियो,

"मियाजी मेरा अधेला था का में बाकी है जो मेरे घर दे देणा।"

"बहोत खूब" कैय मुल्लाजी वहीर व्हीया। दोई जणा दोई आडी ने गिया। जागीरदार रे ही जागीर नवी ज ही, एक गाव रा जमींदार सूं झगडो व्हीयो जो जागीरदार काम आय गियो। अल्लेदाद री छ महीना री तनखा चढती रेगी, खराब व्हेय पाछो घरे आयो। मुल्ला रे ही निकाह में आठ टका हाथे आया। अठी ने वठी ने छ महिना फिर फाद मुल्लाजी खाली हाथा दिल्ली आया। करम दोवा री ही संडो नी दीवो। दोवा रे ही घर मे टोटो। एक दिन अल्लेदाद रे घर में तमाखू नीं।

बिना पईसा दिल्ली मे कोई कांई देवे नी। मुल्ला रो अधेलो याद आयो। मुल्ला रे घरे गियो। मुल्लो मिलियो। दस्तपोसी कीधी। आगली पाछली वाता कीधी के कठै हा रोजी हाथ लागी नी रूळ रूळाय पाछो आयो। घडी अधघडी बैठ अल्लेदाद बोलियो,

"मियाजी, वो अधेलो दिरावो, आज तमाकू नी है, कठे ही हाथ फरियो नी जो आप कनें आयो हूँ।"

मुल्लाजी बोलिया, "हवाल तो तुम भी देख रिया हो, पण परसूं तक अधेला रो इन्तजाम कर दूला।"

अल्लेदाद ने उण वेळा तो सीख दीधी। अल्लेदाद पाच सात वेळा अधेला री उगाही करवा ने फिरियो पण मुल्लाजी सूं अधेला रो इन्तजाम करणी आयो नी। अल्लेदाद घडी घडी रो मागण ने आवे जो मुल्लाजी मन मे घणो सरमावे। अल्लेदाद ही सरम वाळो आदमी जो जोर देय अधेलो मागे नी। पण घर मे घणी तगी जो मागवा ने आवणो पडे। सरमावतो आवे। मुल्लाजी आप री बीबी सू बोलिया,

'अल्लेदाद हमेसा अधेलो मागवा ने आवे। अधेलो जुडे नी। ओ मागतो गैल छोडे नी। म्हू केवू जो कर जो गैल छूटे।"

बीबी बोली, "इण सू गैल छूटे तो थां कैवो जो करू।"

"आज अल्लेदाद मागवा ने आवे जदी थू म्हारे माथे चादर न्हाक दीजे। रोवजे के मुल्लाजी फोत व्हे गिया। पछे आवणो छोड देवेला।"

"वात तो आछी है, पण जे वो कैह देवेला के दफणा के जावू तो फेर?"

"तो क्या ? अपणे तो कवर के पडदा होता है, उसके पीछे धरते हैं। कोई खतरा नी।"

आ कैय मुल्लो माचा पे सोय गियो। अल्लेदाद आयो न बीबी डाड मारी।

अल्लेदाद पूछियो, "क्या है ?"

"मुल्लाजी फोत व्हे गिया।"

मिनख भेळा व्हीया, मुल्ला ने उठायो। अल्लेदाद ही साथे चालियो,

'मियाजी हमके वड़े दोस्त थे हम भी साथ चालेंगे।"

कवर खोदी। पडदो कर मुल्ला ने माय ने राख उपर रेत देय सारा घरां ने घिरिया। अल्लेदाद वठे ही ऊभो रेगियो।"

लोगा पूछियो, "क्यू भाई, क्यूं ऊभो है चाल घरे।"

अल्लेदाद जुवाव दीधो, "मियाजी हमारे वड दोसत थे, चार दिन वाके साथ खाया खेला तो आज की एक रात उनके पास रहेंगे। सब जणा घरे आयगिया। कवरसथान कनें एक मकवरा मे अल्लेदाद बैठ गियो। ढाल तरवार कनें मेल दीधी। तसवी फेरे। आधी रात गी। चार चोर आया। हमेसा ही वे वी रस्ता आवता। आय कवरसथान में ऊभा रिया। नवी कवर खुदी दीखी तो एक जणो बोलियो,

"यारा, आज तो नवी कवर दीख। कोई नवा पीर हुआ। है नवा

पीर, जो आज म्हारे हाथे माल लागे तो थारे पाच रिपिया री सीरणी चढ़ावू ।"

दूजे चोर सलाम कर न कहियो, 'नवा पीर, जो म्हारे हाथे माल लागे तो वाफ्ता री एक चादर चढावूं ।"

तीजे चोर मानता मानी, "हे नवा पीर, म्हारे हाथे माल लागे तो पाच रिपिया चढ़ावू ।"

चोथो चोर बोलियो, "नवा पीर, जो म्हारे हाथे माल लागे तो थारा ही ज नाक कान काट थारे चढावू ।"

बोलमा बोल चार ही चोर चोरी करवा ने चालिया। वी ज रात वादसा रे पूरव रो खजानो आयो जो गाडिया रेता में छूट री। चोर वठे आया। चौकीदार सोय रिया। चोरा गाडिया फाड रिपिया मोहरा री दस थैलिया काढी। कपडा री गाठ लीधी। एक छावडी मिठाई री लीधी। सूधा नवा पीर री कवर पे आया। तीनूं चोरा आप आप री बोली बोलमा, वाफ्तारी चादर, रिपिया अर मिठाई चढ़ाई। चौथो चोर कवर खोदवा लागियो।

उण रा दूजा वेली केवा लागिया, "अरे, कवर क्यू खोदे ?"

चौथो चोर बोलियो, "था थारी मानता पूरी कीधी तो काई म्हूं नीं करूं। इण रा नाक कान काट इण रे चढावूंला।"

"वे कुट्टण, ऐसी कोई मानता करे ? हमारी आज ऐसी फते कीधी, ये पीर अडा औलिया है।"

धोयो चोर मानियो नीं।

"कौण जांणे मेरी ही कबूलात पे औलिया ने या मेरवानी कीधी व्हे। मैं कबूलिया जो तो जरूर करूंगा।"

गोर खोद, चोर पडदा में हाथ घाल न मुल्ला रो नाक पकडियो। मुल्ले तो चोर रा हाथां ने पकड जोर की हाक कीवी। हाक सुणताई तसबी फेरते अल्लेदाद वठा सूं हाक कीधी,

"हाजर साब। ये हाजर हुआ।"

ढाल तरवार ले हाथ में अल्लेदाद मकवरा सूं नीचे कूद्यो। इण ने देखतां ही तो चोर भागिया। मुल्लाजी कबर बारे निकळ आया। देखे तो माल मत्ता घणी पडी।

मुल्लाजी बोलिया, "अल्लेदाद अल्ला की बाता, क्या करता क्या न करे।"

'हां मुल्लांजी, साई ऐसा ही है।"

देखो क्या मिया अबदुल्ला, लेणा होय सो लेव,
ऐसी खुदाय बावळी, किसी का उठाया किसी को देय।

'मालमत्तो समेट, पोट दाध मकवरा मे जाय वाटवा लागिया। सव माल आधो आधो वाट लीधो।

अवे अल्लेदाद आप रो अधेलो मागियो। उण धन में अधेलो कंठे जो देवे। अधेला री जगा रिपियो देवणी आवे नी। मुल्लाजी कहियो,

"थारो अधेलो काले ले जाजे।"

अल्लेदाद कहियो, 'म्हू तो अवार रो अवार लू, फेर था रे घरे रोजीना कुण फिरे।"

दोई जणा अधेला सारू लडवा लागिया। जोर जोर सू लडे।

चोर पछतावा लागिया। घणो ही माल हाथे आयो पण इण कुट्टण आपा री कमाई ने गमाई। देखा जाय ने देखा तो सरो। एक चोर देखवा ने गियो। मकवरा में जोर जोर सू वोलाळो सुण पछोकडे जाय सुणवा लागियो। मकवरा री वारी में माथो घाल झाकियो। अतराक में मुल्ला ने अवासी आई। आळस मोड हाथ ऊचा कीधा जो चोर रो माथो मुल्ला रे हाथ में आय गियो। चोर माथो तो काढ लीधो पण उण री पागडी मुल्ला रे हाथा मे रैयगी। मुल्ले तो पागडी ने न्हाकी अल्लेदाय रा खोळा में, "ले, या थारा अधेला म।"

चोर तो नाठो। जाय न साथिया ने कहियो "भागो अठा सू। वठे

तो अतरा पीर भेट्या व्हीया के सारो धन अधेला अधेला में वट गियो। एक रे अधेलो नीं आयो जो म्हारी पाग खोस पांती में देय दोघी। भागो म्हूँ तो नीठ नीठ अठे भाग ने आयो।"

चोर भाग गिया। मुल्लाजी, अल्लेदाद धन री पोट बाध ले आया।

शब्दार्थ

शब्द	अर्थ
अगति	जिण री गति कोनी व्हे
अटकल्	अ दाजो
अतीतां	साधुवा
अरदास	अरज
अमरखो	अमरोस
अमोलक	घणो कीमती
असराफ	शरीफ
आला	वढ़िया
उणियारो	सकल
एकमुखी	एक मू डा वाळो
काभडा	काम
करियावर	ओनर
कमायचो	एक वाजो
कवो	गरास
कांकड	जगळ
कुजरवो	खोटो
कूरण	वरळावणो
कोर रियो	भाटा पे खोद रियो
खटाला	सगळो साथ
खडिया	चालिया
खायन	खूव आछी तरे सूं
खवासजी	नाई
खाध	खावा रो खरचो
खांगी	डोडी
खुणचो	अ जळी
खोद	खरायन
गणोज	जातरा सूं पाछा आय करे वो उच्छव
गावड	गरदन
गूणती	पोठी
गोडडा	झरोखा
घेंटी	गावड

शब्द	अर्थ
चरवादार	साइस
चवरी	मडप
चाल	वागा रो पल्लो
चांपवा	दवावा
चोधो	चालाक
चूतरा	चवूतरो
चौकडो	लगाम रे लागियोडो लोह रो हिस्सो जो घोडा रे मूडा में रैवे
चौवटा	वजार
चौसरा	चौधारा
छडीदार	चोवदार
जरजा	जूता
जीमणी भुजा	दाहिणा हाथ कानी रो
जुहार	मुजरो
जोम	घमड
झाजरो	पग रे रगडवा रो केलू
झेकायो	ऊट ने वैठायो
टोलाय	वचाय
ठामवा	रोकवा
ठावी	भरोसा री जगा
डाड मारी	रोई
डायवा	दहेज
डावडी	दासी
डावलिया	वायो
ढावेला	रोकेलो
तले टी	तळहटी
ता उमर	उमर भर
त ल	देर
वडीका	नीचे पडवा री आवाज
वरीखाना	सभा
देवालय	मदिर
देसौत	राजपूत
धाकलूवा	हेला करवा
धुरधुर	दुरदुर
नापटा	नाई
नारदो	नाळो
नामो ठामो	हिसाव किताव
नातवानी	गरीवी
पडला	वरी
पयरणा	गदेलो
परचायो	भोळायो

शब्द	अर्थ
धरणास	उजाळो
परयख	प्रत्यक्ष
पलाण	जीण
पलक दरियाव	पलक मारता काई रो काई व्हे जावे
पायगा	तवेलो
पाणीपन्यो	पाणी में चाल सके
पांतियां	जीमण री पगतवार बैठे जठा पैला जीमवा वाळा रे बैठण सारू लवो कपडो बिछावे
पेटिया	नोकरा चाकरा ने खावा सारू धान वगैरा दे जो
पोखता	सोखता अर पोखता दो तरै री परिया व्हे । सोखता तो आदमी ने सोखे अर पोखता रा संसरग सूं आदमी पोखीजे
पोतो	अमल राखवा री डाबी
फरासां	फर्रास
फूटरो	रूपाळो
फोत व्हे गिया	मर गिया
बरजाई	चिल्लाई
बरड़ायो	चरळायो
बल बाकल	वाळि
बहीडा	चोपनिया
बागरिया	एक जात जो जिनावर मार पेट भरे
बाजां	पातळा
बेली	सगी
भख	भक्ष
भड़ाठेकां	बिलकुल ठीक
भसवाड	बकवाद
भूडो	खोटो
म तवर	ठावा, भरोसा लायक
मारकणो	जोरावर
मादगी	बिमारी
मियानो	अर्थ
मेहर	मेहरवानी
मौरी	ऊंट री लगाम
रगरलै	खुसी
रज.ब	एक बाजो
राजाराजो	राजा जस्यो

शब्द	अर्थ
राता	लाल
रातीवासो	रात ने विसराम
रावलो	जनानो, आपरो
रांगड	रजपूत
रीझ मौज	इनाम इकरार
रूदन	रोवणो
रूद्राछ	रूद्राक्ष
लोप	अन्तरध्यान
वाऽरा	हवा
विसाम	भरोसो
वीगत	हकीगत
वेला	वखत
सताव	जल्दी
समरणी	माळा
सडो	साथ
साग	एक ससतर
सांवतार	असलियत
सीरख	रजाई
सुभराज	आमीस
सेजवरदार	विछायत री चाकरी करणियो
सोलवों सोनो	सुद्ध सोनो
हाडकिया खोलणो	सनान करणो
हाली नवाली	नोकर चाकर
हिमल स	भरोसो
हेमऊ	एक पखी। जिण माथे उण पछी री छाया पडे जावे वो ही आदमी निहाल व्हे जावे

रानी लक्ष्मीकुमारी चूंडावत
रा
प्रकाशन

अन्तर्ध्वनि (हिन्दी गद्य गीत) . .	३)
स्वान्त सुखाय (हिन्दी गद्य गीत) ...	३)
राजस्थान का हृदय (राजस्थानी दूहा)	३)
मांझल रात (राजस्थानी वाता) ...	४)
मूमल (राजस्थानी वाता) . .	४)
हूंकारो दो मा (राजस्थानी में टाबरां री वाता)	।।।)
राजस्थानी लोक गीत	६)
राजस्थानी दूहा संग्रह	४)
राजस्थानी प्रवाद	४)
राजस्थानी हरजस	३)
करणी चरित्र	५)
करं चकवा वात (राजस्थानी वाता) ...	४)
हिन्दूकुश के उस पार (रानी साहिबा री रूस यात्रा रा संस्मरण)	५)
कवि पोथल विरचित जुगल विलास . .	१।।।)
कवीन्द्राचार्य विरचित कवीन्द्र कल्पलतिका .	२)
ढाढी बादर रो बणायो वीरवांण	)

मिलणे रो स्थान .

राजस्थानी संस्कृति परिषद

ए.१६४ डी., बनीपार्क, जयपुर